जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 16 संख्याः 237 प्रभात हिण्डौन सिटी, सोमवार 1 जुलाई, 2024 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

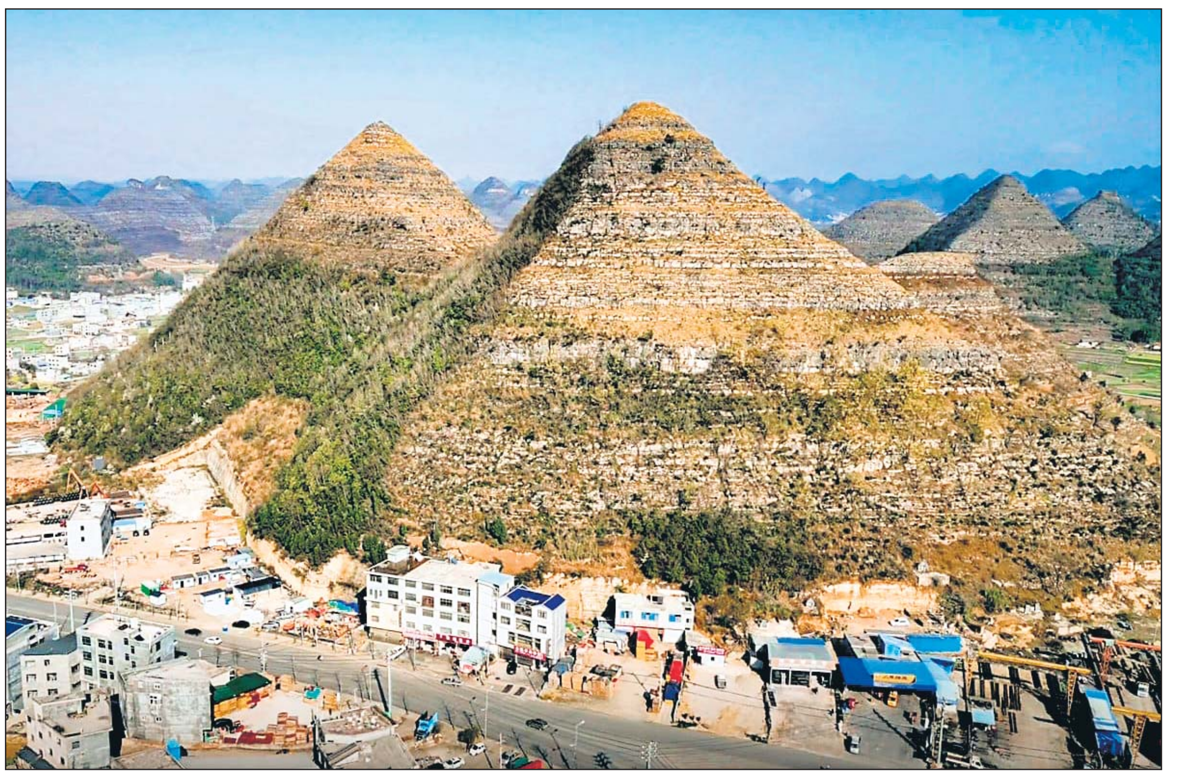

दक्षिण -पूर्व चीन के गुईजो प्रांत में स्थित अनलांग काउन्टी की पर्वत श्रृंखला की तस्वीरों ने इंटरनेट का उपयोग करने वालों को मोहित कर लिया है। सोशल मीडिया में, हाल में शेयर किए हुए फुटेज में, कई पहाड़ी चोटियां मिस्र के पिरामिडों की तरह नज़र आ रही हैं, जिसके कारण सोशल मीडिया पर उनके स्रोत (ओरिजिन) के बारे में बहस छिड़ गई है। कुछ लोगों का मानना है कि, ये रचनाएं मानव-निर्मित हैं जिन्हें प्राचीन काल के सम्राटों की कब्रों को छुपाने के लिए बनाया गया होगा, जबकि कुछ का मानना है कि, ये ''एलियन्स'' द्वारा बनाए गए हैं। तथापि, वास्तविकता आश्चर्यजनक होने के साथ-साथ नीरस भी है, क्योंकि, ये प्राकृतिक रचनाएं हैं, कोई नाटकीय तथ्य इनसे जुड़ा हुआ नहीं है। गुईजो नॉर्मल युनिवर्सिटी के भूविज्ञानी, प्रोफेसर जो चोवैन के अनुसार, ''पिरामिड जैसी दिखने वाली ये पहाड़ियां न तो मानव -निर्मित हैं और न ही प्राचीन कब्रों का स्थान हैं, बल्कि प्रकृति की कलात्मकता का उदाहरण हैं।'' दक्षिण-पूर्व चीन का गुईजो प्रांत खड़ी चोटियों वाले पहाड़ों की श्रृंखला और गहरी घाटियों वाले लैण्डस्केप के लिए जाना जाता है। तस्वीर में दिखने वाले ये पहाड़, कार्स्ट टोपोग्राफी का एक हिस्सा हैं जो घुलनशील कार्बोनेट चट्टानों के विघटन की प्रक्रिया से बनता है। ''कोन'' जैसी दिखने वाली ये चोटियाँ प्राकृतिक शैल संरचनाओं का परिणाम हैं। चोवैन ने बताया, ''पानी के वर्टिकल कटाव ने चट्टानों के विस्तृत समूह को अलग-अलग इकाईयों में बांट दिया। यह कटाव प्रक्रिया निरंतर जारी रहने के कारण, शीर्ष की चट्टानें ज्यादा घुल गईं जबकि आधार की चट्टानों पर कम प्रभाव हुआ इसलिए चौड़े बेस (आधार) के ऊपर पैनी चोटियों का निर्माण हुआ। अनलांग की चट्टानें, चूने के पत्थर से बनी हुई रचनाएं हैं जो कि 200 मिलियन वर्षों से, ट्रायैसिक काल की शुरुआत से मध्य तक निर्मित हुई होंगी। ये चट्टानें समुद्री वातावरण में बनी होंगी, जहां, पानी में घुले हुए खनिज, जलवायु और जिओलॉजी (भूतत्व) में समय -समय पर होने वाले बदलाव के कारण, रीक्रिस्टलाइज़ होकर अलग-अलग विशिष्ट सतहें बना देते हैं। ईंट-नुमा संरचनाएं भी कटाव के कारण बनी हुई प्राकृतिक नक्काशी हैं। चोवैन ने विस्तार से बताया कि, कार्स्ट लैन्डस्कैप की भूगर्भीय प्रक्रियाएं परतदार चट्टानों को डिज़ॉल्व (विघटित) करके छोटे खंडों में परिवर्तित कर सकती हैं, जिससे वो मानव-निर्मित लगती हैं। चट्टानों के बीच की छोटी दरारों में पानी जाने से उनमें कटाव शुरु हो जाता है जिसके कारण पूरी तरह से घुलने के बजाय खंडित ब्लॉक जैसी नज़र आने वाली संरचनाएं बन जाती हैं।

‘हमे 100 में से 75 नम्बर मिले लेकिन विपक्ष तो 25 नम्बर पाकर ही खुद को पास मान रहा है’

गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा चुनाव परिणामों के बारे में विपक्ष के दावों पर तंज कसा

- अमित शाह ने कहा कि, हमें 100 में 85 नंबरों की उम्मीद थी, हालांकि 75 आए और वो 25 में फेल होकर भी खुश ऐसे हैं मानो जीत गए।
- अमित शाह ने कहा कि, आगामी हरियाणा चुनाव में भाजपा अकेले चुनाव लड़ने जा रही है और दावा किया कि, वे लगातार तीसरी बार सरकार बनाएंगे।
- गौरतलब है कि, इस बार आये लोकसभा चुनावों के बाद विपक्ष पिछले दस सालों में पहली बार बेहद मजबूत हुआ है और भाजपा नीत एन.डी.ए. पर चुनाव परिणामों को लेकर लगातार तीखे हमले कर रहा है।
- विपक्ष दावे कर रहा है कि, चुनाव परिणामों ने जता दिया है कि, प्रधानमंत्री मोदी में जनता का विश्वास अब बाकी नहीं रह गया है।

नई दिल्ली, 30 जून। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर लोकसभा चुनाव के परिणामों को लेकर जनता के बीच भ्रम फैलाने का आरोप लगाया। शाह ने कहा कि, हमें 100 में 85 नंबरों की उम्मीद थी, हालांकि 75 आए और वो 25 में फेल होकर भी खुश ऐसे हैं मानो जीत गए। शाह ने कहा कि अकेले भाजपा को चुनाव में पूरे इंडिया ब्लॉक के बराबर सीटें मिली हैं। शाह ने कहा कि आगामी हरियाणा चुनाव में भाजपा अकेले चुनाव लड़ने जा रही है और दावा किया कि वे लगातार तीसरी बार सरकार बनाएंगे।

अमित शाह हरियाणा के पंचकूला में भाजपा नेताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा आगामी हरियाणा विधानसभा चुनाव मौजूद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में अकेले चुनाव लड़ेगी। शाह ने दावा किया कि भाजपा लगातार तीसरी बार हरियाणा में सरकार बनाने जा रही है। शाह ने कहा कि इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि भाजपा इस साल अक्टूबर से पहले होने वाले राज्य चुनावों के लिए किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करेगी। पार्टी सूत्रों ने शाह के हवाले से बताया कि बैठक में उन्होंने कहा कि पार्टी को किसी बैसाखी की जरूरत नहीं है।

अमित शाह ने आरोप लगाया कि कांग्रेस लोगों में भ्रम फैलाकर लोकसभा चुनाव में अपनी हार को छिपाने की कोशिश कर रही है। शाह ने कहा, "हमें 100 में से 85 अंकों की उम्मीद थी, लेकिन 75 अंक ही मिल पाए और कांग्रेसी हमें फेल कह रहे हैं। उन्हें सिर्फ 25 अंक मिले और वे खुद को पास कह रहे हैं। वे (कांग्रेस) फेल होने के बाद भी खुद को पास कह रहे हैं। अकेले भाजपा को पूरे इंडिया ब्लॉक जितनी सीटें मिली हैं।"

अमित शाह ने कांग्रेस नेताओं राहुल गांधी और दीपेंद्र सिंह हुड्डा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि हरियाणा में अब ‘तारा, सितारा’ नहीं चलेगा। सोनिया का आंखों का तारा (राहुल गांधी) और भूपेंद्र हुड्डा साहब का सितारा (दीपेंद्र हुड्डा)।

पार्टी सूत्रों ने बताया कि, बैठक में अमित शाह ने राज्य की 10 लोकसभा सीटों में से पांच पर बीजेपी की हार का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यू.जी.सी. नेट की परीक्षा ऑनलाइन मोड में होगी

नई दिल्ली, 30 जून। नैशनल टैस्टिंग एजेंसी (एन.टी.ए.) ने घोषणा की है कि यू.जी.सी. नेट की फिर से होने वाली परीक्षा कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी) के रूप में ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। 18 जून को आयोजित यूजीसी नेट की परीक्षा पेपर लीक होने की वजह से एक दिन बाद यानी 19 जून को रद्द कर दी गई थी।

- नैशनल टैस्टिंग एजेंसी ने यह घोषणा की है। 18 जून को आयोजित यू.जी. सी. नेट की परीक्षा पेपर लीक होने की वजह से एक दिन बाद यानी 19 जून को रद्द कर दी गई थी।

एनटीए ने दोबारा परीक्षा की तारीखों की घोषणा कर दी है।

एन.टी.ए. ने कहा, यू.जी.सी. नेट जून 2024 परीक्षा पहले पेन और पेपर (ऑफलाइन) मोड में आयोजित की गई थी। यह अब सीबीटी मोड में आयोजित की जाएगी। परीक्षा अब 21 अगस्त से 4 सितंबर के बीच कई पालियों में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीट यू.जी. सहित सभी एंट्रेस एग्ज़ाम ऑनलाइन मोड में आयोजित होंगे

नीट पेपर लीक को लेकर बीते हफ्ते में करीब तीन उच्च-स्तरीय बैठकें हुई हैं, जिसमें यह परीक्षा ऑनलाइन मोड में आयोजित करने पर प्रमुखता से विचार किया गया है

- गौरतलब है कि, 2018 में तत्कालीन शिक्षा मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इस मामले पर बड़ा बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि, 2019 से नीट यू.जी. परीक्षा का ऑनलाइन और साल में 2 बार आयोजन किया जाएगा। हालांकि, स्वास्थ्य मंत्रालय की आपत्ति के बाद शिक्षा मंत्रालय को यह निर्णय वापस लेना पड़ा। मगर, अब सूत्रों के हवाले से बताया जा रहा है कि, ऑनलाइन परीक्षा को लेकर गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

नई दिल्ली, 30 जून। नीट परीक्षा का पेपर लीक होने के बाद केन्द्रीय परीक्षा एजेंसियों के खिलाफ कई तरह के सवाल उठे हैं। इस मुद्दे को लेकर छात्रों ने सड़कों पर प्रदर्शन किया और संसद के गलियारों में भी इसकी गूंज सुनाई दी। नीट यू.जी. पेपर लीक पर बढ़ते विवाद के बीच केन्द्र सरकार बड़ा कदम उठाने जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, अगले साल से नीट यू.जी. का एग्जाम ऑनलाइन मोड में कराए जाने पर विचार चल रहा है। गौरतलब है कि, अब तक नीट की परीक्षा पेन-एंड-पेपर से होती रही है, जिसमें मल्टिपल चॉइस कॉशन टाइप के प्रश्न पूछे जाते हैं। मगर, आने वाले दिनों में नीट यू.जी. के लिए भी जे.ई.ई. मेन या जे.ई.ई. एडवांस्ड जैसी कंप्यूटर आधारित परीक्षा को अपनाया जा सकता है।

नीट पेपर लीक को लेकर बीते हफ्ते में करीब तीन उच्च-स्तरीय बैठकें हुई हैं, जहां मामले को लेकर अलग-अलग पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। 22 जून को केंद्र सरकार की ओर से पूर्व इसरो अध्यक्ष के. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय पैनल का गठन किया गया। टैस्ट प्रक्रिया व डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल में सुधारों की सिफारिश करने और नैशनल टैस्टिं एजेंसी (एन.टी.ए.) की संरचना व कार्यप्रणाली की समीक्षा के लिए यह कमेटी बनाई गई। गौरतलब है कि, 2018 में तत्कालीन शिक्षा मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इस मामले पर बड़ा बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि, 2019 से नीट यू.जी. परीक्षा का ऑनलाइन और साल में 2 बार आयोजन किया जाएगा। हालांकि, स्वास्थ्य मंत्रालय की आपत्ति के बाद शिक्षा मंत्रालय को यह निर्णय वापस लेना पड़ा। मगर, अब सूत्रों के हवाले से बताया जा रहा है कि, ऑनलाइन परीक्षा को लेकर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। वहीं, नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन (एन.बी.ई.) आगामी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुंबई के दो पासपोर्ट ऑफिस में भ्रष्टाचार: चौदह अधिकारियों के खिलाफ सी.बी.आई जांच शुरु

फर्जी पासपोर्ट बनाने के मामले में सी.बी.आई. ने 33 ठिकानों पर छापे मारे, 18 एजेंटों के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज हुआ

- सी.बी.आई. ने अपनी 12 एफ.आई.आर. में 18 एजेंट और बिचौलियों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।
- सी.बी.आई. ने एफ.आई.आर में दर्ज किया है कि, अधुरे और फर्जी कागजातों के आधार पर फर्जी पासपोर्ट बनाने का काम किया जा रहा था।

मुंबई, 30 जून। सैन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टिगेशन (सी.बी.आई.) ने फर्जी तौर-तरीकों से पासपोर्ट बनाने और भ्रष्टाचार के आरोप में मुंबई में दो पासपोर्ट सेवा केंद्र (पी.एस.के.) के 14 अधिकारियों के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

सी.बी.आई. ने महाराष्ट्र में 33 स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया। मामले से जुड़े सी.बी.आई. अधिकारियों ने बताया कि, सी.बी.आई. ने लोअर परेल और मलाड में पासपोर्ट सेवा केंद्रों के अधिकारियों और बिचौलियों से जुड़े एक भ्रष्टाचार रैकेट का पर्दाफाश किया है। सी.बी.आई. ने अपनी 12 एफ.आई.आर. में 18 एजेंट्स और बिचौलियों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।

सी.बी.आई. के एक अधिकारी ने बताया, ये अधिकारी पासपोर्ट सेवा एजेंट के साथ लगातार संपर्क में थे और अपर्याप्त या अधूरे डाक्यूमेंट्स के आधार पर या पासपोर्ट आवेदकों के पर्सनल डिटेल में हेरफेर करके पासपोर्ट जारी करने के बदले में अनुचित आर्थिक लाभ लेने के लिए बिचौलियों के साथ मिलकर साजिश रचते थे।

अधिकारियों ने बताया कि, 26 जून को विदेश मंत्रालय के सतर्कता विभाग के औचक निरीक्षण के दौरान कथित भ्रष्टाचार का पता चला। उन्होंने बताया कि, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया चैट और यू.पी.आई. पेमेंट के विश्लेषण से कई लाख रुपये के कुछ संदिग्ध लेनदेन सामने आए।

सी.बी.आई. के अधिकारियों ने बताया कि आरोपी --पासपोर्ट सेवा केंद्रों के अधिकारी जूनियर और सीनियर पासपोर्ट सहायकों के पद पर हैं और कथित तौर पर विभिन्न पासपोर्ट सेवा एजेंट और बिचौलियों के साथ मिलीभगत करके काम कर रहे थे। साथ ही अपने या अपने परिवार के सदस्यों के बैंक खातों में अवैध रूप से पैसे ले रहे थे।

विदेश मंत्रालय से मंजूरी मिलने के बाद सी.बी.आई. ने अधिकारियों और बिचौलियों के खिलाफ 12 एफ.आई.आर. दर्ज की। अधिकारियों ने बताया कि, शनिवार को मुंबई और नासिक में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया गया, जिसमें डिजिटल डिवाइस, डाक्यूमेंट्स और अन्य सामग्री जब्त की गई। गौरतलब है कि, बीते दिनों दिल्ली एयरपोर्ट पर एक फर्जी पासपोर्ट का मामला सामने आया था। एक युवा व्यक्ति फर्जी पासपोर्ट के जरिये विदेश जाने के प्रयास में एयरपोर्ट पर पकड़ा गया था, ऐसे और भी कई मामले सामने आने के बाद पासपोर्ट कार्यकालयों के खिलाफ जांच बिठाने का विदेश मंत्रालय ने निर्णय लिया था।

मेघालयः दूषित भोजन के सेवन से 50 लोग अस्पताल में भर्ती

- मेघालय के पूर्वी पश्चिमी खासी हिल्स जिले में एक अंतिम संस्कार समारोह के दौरान एक घर में कथित रूप से दूषित भोजन के सेवन के बाद 50 से अधिक लोग बीमार हो गए।

शिलांग 30 जून (वार्ता)। मेघालय के पूर्वी पश्चिमी खासी हिल्स जिले में एक अंतिम संस्कार समारोह के दौरान एक घर में कथित रूप से दूषित भोजन के सेवन के बाद महिलाओं और बच्चों सहित 50 से अधिक लोग बीमार हो गए है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि मरीजों को मैरांग और नोंगस्टोइन सिविल अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

मैरांग में यू तिरोट सिंग मेमोरियल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘शिक्षा से कहीं ज्यादा वैवाहिक आयोजनों पर खर्च करते हैं भारतीय’

ब्रोकरेज फर्म जेफरीज़ ने एक रिपोर्ट में कहा है कि, भारतीय विवाह उद्योग का आकार लगभग 10 लाख करोड़ रुपये है जबकि भारतीय एजुकेशन पर पांच लाख करोड़ रुपये खर्च करते हैं

- रिपोर्ट में कहा है कि, भारत में सालाना 80 लाख से एक करोड़ शादियां होती हैं, जबकि चीन में 70-80 लाख और अमेरिका में 20-25 लाख शादियां होती हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार भारतीय विवाह उद्योग का खाद्य और किराना के बाद दूसरे स्थान पर है।
- जेफरीज़ ने रिपोर्ट में कहा है कि, हर साल 80 लाख से एक करोड़ शादियां होने के साथ, भारत दुनिया भर में सबसे बड़ा विवाह स्थल है। कैट के अनुसार इसका आकार 130 अरब अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है।

नई दिल्ली, 30 जून। भारतीय विवाह उद्योग का आकार लगभग 10 लाख करोड़ रुपये है, जो खाद्य और किराना के बाद दूसरे स्थान पर है। एक रिपोर्ट में यह जानकारी देते हुए कहा गया कि आम हिंदुस्तानी शिक्षा की तुलना में विवाह समारोह पर दोगुना खर्च करते हैं। भारत में सालाना 80 लाख से एक करोड़ शादियां होती हैं, जबकि चीन में 70-80 लाख और अमेरिका में 20-25 लाख शादियां होती हैं।

गौरतलब है कि, भारत में आजकल हाई प्रोफाइल शादियों का ट्रेंड भी काफी बढ़ गया है। आगामी समय में रिलायंस के मुखिया मुकेश अंबानी के बेटे की अनंत अंबानी की शादी के भी खूब चर्चे हो रहे हैं। बताया जा रहा है कि, एक विशालकाय क्रूज शिप पर इस विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा, जिसमें देश-दुनिया के सभी जाने-माने सैलिब्रिटिज़ शिरकत करेंगे।

ब्रोकरेज फर्म जेफरीज़ ने एक रिपोर्ट में कहा है कि, भारतीय विवाह उद्योग अमेरिका (70 अरब अमेरिकी डॉलर) के उद्योग के आकार का लगभग दोगुना है। हालांकि, यह चीन (170 अरब अमेरिकी डॉलर) से छोटा है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में खपत श्रेणी में शादियों का दूसरा स्थान है। अगर शादी एक श्रेणी होती, तो वे खाद्य और किराना (681 अरब अमेरिकी डॉलर) के बाद दूसरी सबसे बड़ी खुदरा श्रेणी होती। भारत में शादियां भव्य होती हैं और इनमें कई तरह के समारोह और खर्च होते हैं। इससे आभूषण और परिधान जैसी श्रेणियों में खपत बढ़ती है और अप्रत्यक्ष रूप से ऑटो तथा इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को लाभ मिलता है। खर्चीली शादियों पर अंकुश लगाने के प्रयासों के बावजूद, विदेशी स्थानों पर होने वाली आलीशान शादियां भारतीय वैभव को प्रदर्शित करती रहती हैं।

जेफरीज ने कहा, हर साल 80 लाख से एक करोड़ शादियां होने के साथ, भारत दुनिया भर में सबसे बड़ा विवाह स्थल है। कैट के अनुसार इसका आकार 130 अरब अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है। भारत का विवाह उद्योग अमेरिका के मुकाबले लगभग दोगुना है और प्रमुख उपभोग श्रेणियों में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय शादी कई दिनों तक चलती हैं और साधारण से लेकर बेहद भव्य तक होती हैं। इसमें क्षेत्र, धर्म और आर्थिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भारत में विवाह पर शिक्षा (स्नातक तक) की तुलना में दोगुना खर्च किया जाता है, जबकि अमेरिकी जैसे देशों में यह खर्च शिक्षा की तुलना में आधे से भी कम है।

जनरल उपेन्द्र द्विवेदी नये सेना प्रमुख बने

- जनरल उपेन्द्र द्विवेदी को जनरल मनोज पांडे के स्थान पर नियुक्त किया गया है, जो चार दशकों से भी अधिक लंबी विशिष्ट सेवा के बाद सेवानिवृत हो गये।

नई दिल्ली, 30 जून (वार्ता)। जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने रविवार को 30वें सेना प्रमुख के रूप में अपना कार्यभार संभाल लिया। उन्हें जनरल मनोज पांडे के स्थान पर नियुक्त किया गया है ,जो चार दशकों से भी अधिक लंबी विशिष्ट सेवा के बाद सेवानिवृत हो गये।

जनरल मनोज पांडे ने यहां साउथ ब्लाक स्थित रक्षा मंत्रालय के कार्यालय में जनरल द्विवेदी को सेना की कमान सौंपी। जनरल पांडे का कार्यकाल पिछले महीने पूरा होना था, लेकिन लोकसभा चुनाव के मद्देनजर उन्हें एक महीने का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

मेरी एक प्रबल कामना है कि मैं कम से कम एक आँख का आंसू पोछ दूं।
–महात्मा गाँधी

क्या प्रशासन का काम केवल हमें दुख देने का ही रह गया है?

मेरे यहां जो अख़बार आते हैं उनमें इन दिनों अन्य सारी ख़बरों के साथ-साथ करीब-करीब हर दिन इस आशय के समाचार बहुत प्रमुखता से मिल रहे हैं कि शहर (मेरा आशय जयपुर से है) में अतिक्रमण, अवैध निर्माण व नाजायज़ कब्ज़ा हटाओ अभियान बहुत ज़ोर-शोर और कामयाबी के साथ चल रहा है। शहर का एक ख़ास हिस्सा अतिक्रमण से मुक्त किया जा रहा है और अब वहां की सड़कें खूब चौड़ी हो जाएंगी। सोशल मीडिया के अन्य मंचों पर भी लगभग इसी आशय की ख़बरें खूब साझा हो रही हैं। यहां तक कि दो-एक दिन से तो एक बहुत बड़े समूह के पांच सितारा होटल को भी जल्दी ही अवैध निर्माण होने की वजह से ध्वस्त किए जाने के समाचार उस होटल विशेष की तस्वीरों के साथ नज़र आ रहे हैं।

अतिक्रमण हमारे समाज की एक बहुत बड़ी बीमारी है, जिसे जब मौका मिलता है वह अपनी हैसियत और ताकत के अनुसार उस ज़मीन पर जिस पर उसका स्वामित्व नहीं है, कब्ज़ा कर लेता है। आप शहर की किसी भी सड़क या गली को देख लें, आप पाएंगे कि अतिक्रमण की वजह से वह सिकुड़ कर आधी रह गई है। अतिक्रमण करने के मामले में कोई पीछे नहीं रहना चाहता है। मामूली से मामूली आदमी से लगाकर बड़े से बड़ा आदमी इस नदी में डुबकी लगा लेने को लालायित रहता है, और मौका मिलते ही लगा भी लेता है। शहर की कॉलोनियों में कभी हम अपने घर के आगे रैम्प बनाने के नाम पर तो कभी बड़ी गाड़ी खड़ी करने के लिए जगह बनाने के नाम पर और कभी फुलवारी लगा कर पर्यावरण पर अपनी कृपा बरसाने के नाम पर अतिक्रमण करने का जुगाड़ कर लेते हैं। बाज़ारों में जाएं तो पाएंगे कि दुकानदार अपना सामान प्रदर्शित करने के नाम पर, अपना साइन बोर्ड रखने के नाम पर और न जाने किन-किन मौलिक तरीकों से अतिक्रमण कर लेते हैं। त्योहारों के सीज़न में तो बाज़ारों का जो हाल होता है, वह वर्णन से परे है। कुल मिलाकर, जो समर्थ और ताकतवर हैं वे तो पूरे के पूरे भवन ही नाजायज़ रूप से खड़े कर लेते हैं। पीछे वे भी नहीं रहते हैं जो असमर्थ और कमज़ोर हैं।

नागरिक तो नागरिक सरकारी तंत्र भी इस काम में पीछे नहीं रहता है। एक उदाहरण तो यही देखा जा सकता है कि पुलिस वाले सड़क पर जहां उनको ठीक लगता है, अपनी गुमटी खड़ी कर देते हैं। सड़क के बीच उनका वाहन खड़ा रहता है! विधायकों और मंत्रीगण की तो बात ही क्या की जाए! किसकी मज़ाल है तो उनको टोके। वे तो मालिक हैं ही। जो ख़ुद कानून बनाते हैं भला उन पर कोई कानून कैसे लागू हो सकता है? ऐसा नहीं है सब ऐसा करते हैं। लेकिन बहुत सारे लोग करते हैं।

वैसे इस सबके मूल में हमारी मानसिकता है। जो हमारा प्राप्य है और जिसके हम वाकई अधिकारी हैं, हम उससे ज़्यादा पा लेना चाहते हैं और ऐसा करते वक़्त हम उचित-अनुचित की परवाह नहीं करते हैं। कहा जा सकता है कि यह तो सहज मानवीय प्रवृत्ति है। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। मुझे लगता है कि हम कहने में और सिद्धांतों में जितने ईमानदार, नैतिक और धर्म-भीरू होने का दावा और दिखावा करते हैं, उतने वास्तव में हैं नहीं। हमारा यथार्थ उससे उलट है। जिस पश्चिम की हम निंदा करते नहीं अघाते हैं, वह ऐसी बहुत सारी बातों में हमसे भिन्न और बेहतर है। लेकिन यहां सवाल पूर्व और पश्चिम की तुलना का या किसी को किसी से बेहतर बनाने का नहीं है। अगर हम इस विवाद में उलझेंगे तो मूल बात पीछे रह जाएगी। इसलिए उसी पर आता हूं।

अतिक्रमण और अवैध निर्माण व अनुचित कब्ज़े को रोका जाए, और जो हो चुका है, उसे हटाया जाए, इसमें किसी भी ज़िम्मेदार नागरिक को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आखिर प्रशासन और कानून का काम है भी क्या? चोरी होती है, अपराध होते हैं तो उनको रोकने के लिए पुलिस होती है। और भी सारे ग़ैर कानूनी काम होते हैं तो सरकार के बहुत सारे अंग-उपांग उन्हें रोकने का काम करते हैं। यह भी सही है कि पूरा का पूरा समाज आदर्श नहीं होता है। लोग अनुचित लाभ उठाने या ग़ैर कानूनी काम करने के लालच में आ ही जाते हैं। अगर वे ऐसा न करें तो सरकार और प्रशासन की ज़रूरत ही ख़त्म हो जाए। इसलिए अगर सरकार ग़लत को सही करने का उपक्रम करती है तो उसका स्वागत होना चाहिए।

> **नागरिक तो नागरिक, सरकारी तंत्र भी इस काम में पीछे नहीं रहता है। एक उदाहरण तो यही देखा जा सकता है कि पुलिस वाले सड़क पर जहां उनको ठीक लगता है, अपनी गुमटी खड़ी कर देते हैं। सड़क के बीच उनका वाहन खड़ा रहता है! विधायकों और मंत्रीगण की तो बात ही क्या की जाए! किसकी मज़ाल है तो उनको टोके। वे तो मालिक हैं ही। जो ख़ुद कानून बनाते हैं भला उन पर कोई कानून कैसे लागू हो सकता है?**

मैं भी स्वागत करना चाहता हूं, लेकिन कर नहीं पा रहा हूं!

जब इन सारी ख़बरों को पढ़ता हूं, जिनमें से ज़्यादातर संबद्ध विभागों के जन सम्पर्क कर्मियों द्वारा ही समाचार माध्यमों को उपलब्ध कराई जाती है, और इन ख़बरों के साथ-साथ अतिक्रमण हटाने से परेशान होने वाले सामान्य जन की पीड़ाओं की करुण गाथाएं पढ़ता हूं तो मन में बहुत सारे सवाल उठने लगते हैं। हम पाते हैं कि बहुत सारे ऐसे अतिक्रमण हटाए जाते हैं जो बरसों से मौज़ूद थे। पूरी की पूरी बस्तियां बस जाती हैं। दुकानदार लोग लंबे अर्से से उस जगह पर अपना व्यवसाय करते रहते हैं, जिस पर उनका स्वामित्व था ही नहीं। थड़ियां लगती हैं, फुटपाथ पर बैठ कर धंधा करते लोग जवान से बूढ़े हो जाते हैं। मेरे मन में सवाल यह उठता है कि इतना बड़ा सरकारी अमला है, उसे यह अतिक्रमण वगैरह होता हुआ नज़र नहीं आता है? अवैध निर्माण होता है, पूरी की पूरी बिल्डिंग बन जाती है, जिसके बनने में ज़ाहिर है कुछ महीने तो लगे ही होंगे, तब क्या किसी को भी यह सब नज़र नहीं आया? अगर नहीं आया तो यह बात क्यों नहीं होनी चाहिए कि इस सब पर नज़र रखने का जिनका दायित्व था, वे अपना दायित्व निर्वाह करने में नाकामयाब रहे हैं। इनमें चपरासी, बाबू, अफसर से लगाकर मंत्री तक सब शामिल हैं। क्या इन पर कोई कार्यवाही नहीं होनी चाहिए? किस बात की तनख़्वाह लेते रहे हैं ये? एक बस्ती बस गई, बरसों लोग उसमें रहते रहे, और एक दिन अचानक प्रशासन अपनी कुंभकर्णी नींद से जागे और वहां रहने वालों को खदेड़ने पहुंच जाए! बुलडोज़र (यह हमारा नया हीरो है!) लेकर और तमाम डरावने जाब्ते के साथ पहुंच जाए। लोग रोते-गिड़गिड़ाते रहें, लेकिन अंधा कानून अपना काम करता रहे। अगले दिन के अखबारों में प्रशासन की पराक्रम गाथा छपे कि इतनी सारी सरकारी ज़मीन को अवैध कब्ज़े से मुक्त कराया गया! बेशक कब्ज़ा अवैध था और उसे हटाया जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा करने में इतना विलंब क्यों हुआ? सोचिये, अगर कब्ज़ा होते समय ही उसे रोक दिया गया होता तो लोगों की जमी जमाई गृहस्थी तो नेस्तनाबूद नहीं होती। यह आकस्मिक नहीं है कि जब चुनाव होने वाले होते हैं तो निर्माण गतिविधियां बहुत तेज़ हो जाती हैं। हर कोई जानता है कि जब चुनाव आने वाले होते हैं तो प्रशासन अवैध निर्माण की तरफ से आंखें बंद कर लेता है। और इतना ही नहीं, बाद में भी जब कोई अतिक्रमण हटाने का अभियान चलता है तो जन प्रतिनिधि गण अपने समर्थकों के अतिक्रमण को बचाने के लिए सक्रिय हो जाते हैं, प्रायः बचा भी लेते हैं। इससे क्या संदेश जाता है?

हममें से हरेक को बाज़ार का और कॉलोनियों का अतिक्रमण नज़र आता है। जो हो चुका है वह भी नज़र आता है और जो होने की प्रक्रिया में है वह भी नज़र आता है। इन्हें राहों से वे सब भी गुज़रते हैं जिन पर इन अतिक्रमणों को रोकने की आधिकारिक ज़िम्मेदारी है। इन्हीं मुहल्लों-कॉलोनियों में वे भी रहते हैं। लेकिन साल के अधिकांश समय वे धृतराष्ट्र बने रहते हैं। उनके इस निकम्मेपन की सज़ा आम जन को भुगतनी पड़े, यह कहां का न्याय है? आखिर क्यों हमारा प्रशासन अचानक गहरी नींद से जागता है, हरकत में आता है और फिर हाइबर्नेशन में चला जाता है। यह इच्छा से सोने और जागने का खेल कब तक चलेगा? इसे बड़े और रसूखदारों का समर्थन कब तक मिलता रहेगा? कभी तो ऐसा हो कि जिस मंत्री के अधीन ये सारे महकमे आते हैं वह ज़िम्मेदारी ले कि हां मैं अपने दायित्व का निर्वहन करा सकने में असमर्थ रहा हूं! वह ज़िम्मेदारी ले, अपनी नाकामी पर लज्जित हो और अपने अधीनस्थों को पाबंद करे, और चेताए कि अगर उनके होते कुछ भी अवैध हुआ तो उन्हें बख़्शा नहीं जाएगा। और यह चेतावनी चेतावनी न रहे। अमल में भी आए!

और चलते-चलते इतना और कि जो बात मैं अतिक्रमण और अवैध निर्माण व कब्ज़े के लिए कह रहा हूं वही बात अन्य बहुत सारे मुद्दों पर भी लागू होती है। कहां वाहन पार्क हो सकते हैं, कहां नहीं – किसी को पता नहीं चलता। आप वाहन खड़ा करते हैं और अचानक आपका वाहन उठा लिया जाता है। सड़क पर ट्रैफिक लाइट्स इस तरह लगाई जाती हैं कि वे ऊंचे वाहनों की वजह से प्रायः दूर से नज़र ही नहीं आती। उन्हें ठीक करने की फिक्र किसी को नहीं होती। घंटों जाम लगा रहता है, उससे आपको कोई निज़ात नहीं दिलाता, लेकिन टार्गेट पूरा करने के लिए चालान करने वाला सरकारी अमला पूरा मुस्तैद नज़र आता है। ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता है कि हमारी सुविधाएं भी बढ़ें? क्या प्रशासन का काम केवल हमें दुख देने का ही रह गया है? सोचिये!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

वेंकैया गारू-भारत की सेवा में समर्पित जीवन

आज भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति और राष्ट्रीय राजनीति में शुचिता के प्रतीक हमारे श्री एम.वेंकैया नायडू गारू का

जन्मदिवस है। वेंकैया नायडू जी आज 75 वर्ष के हो गए हैं। उन्होंने राष्ट्र सेवा और जनसेवा को हमेशा सर्वोपरि रखा है। मैं उनके दीर्घायु होने और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। देश में उनके लाखों चाहने वाले हैं। मैं उनके सभी शुभचिंतकों और समर्थकों को भी बधाई देता हूं। वेंकैया जी का 75 वां जन्मदिवस एक विशाल व्यक्तित्व की व्यापक उपलब्धियों को समेटे हुये है। उनका जीवन सेवा, समर्पण और संवेदनशीलता की ऐसी यात्रा है, जिसके बारे में सभी देशवासियों को जानना चाहिए। राजनीति में अपने प्रारम्भिक दिनों से लेकर उपराष्ट्रपति जैसे शीर्ष पद तक , नायडू गारू ने भारतीय राजनीति की जटिलताओं को जितनी सरलता और विनम्रता से पार किया वो , अपने आपमें एक उदाहरण है। उनकी वाकपटुता, हाजिरजवाबी और विकास से जुडे मुद्दों के प्रति उनकी सक्रियता के कारण उन्हें दलगत राजनीतित से ऊपर हर पार्टी में सम्मान मिला है। वेंकैया गारू और मैं दशकों से एक-दूसरे से जुडे रहे हैं। हमने लबे समय तक अलग-अलग दायित्वों को संभालते हुए साथ काम किया है, और मैंने हर भूमिका में उनसे बहुत कुछ सीखा है। मैंने देखा है, जीवन के हर पड़व पर आम लोगों के प्रति उनका स्नेह और प्रेम कभी नही बदला।

वेंकैया जी सक्रिय राजनीति से आंध्र प्रदेश में छात्र नेता के रूप में जुडे थे। उन्होंने राजनीति के पहले पड़व पर ही प्रतिभा, वक्तृत्व क्षमता और संगठन कौशल की अलग छाप छोडी थी।किसी भी राजनीतिक दल में उन्हें कम समय में बडा स्थान मिल सकता था। लेकिन उन्होंने संघ परिवार के साथ काम करना पसंद किया, क्योंकि उनकी आस्था राष्ट्र प्रथम के विजन मे थी। उन्होंने विचार को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखा और बाद में जनसंघ एवं बीजेपी को मजबूत किया। लगभग 50 साल पहले जब कांग्रेस पार्टी ने देश में आपातकाल लगाया था, तब युवा वेंकैया गारू ने आपातकाल विरोधी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्हें लोकनायक जेपी को आंध्र प्रदेश में आमंत्रित करने के लिए जेल जाना पड़ा। लोकतंत्र के लिए उनकी ये प्रतिबद्धता, उनके राजनीतिक जीवन में हर जगह दिखाई देती है। 1980 के दशक के मध्य में, जब महान एनटीआर की सरकार को कांग्रेस ने गलत तरीके से बर्खास्त कर दिया था, तब वे फिर से लोकतांत्रिक सिद्धांतों की रक्षा के लिए हुए आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे।

1978 में आंध्र प्रदेश जब कांग्रेस के पक्ष में मतदान किया था। तब वेंकैया जी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद एक युवा विधायक के रूप में जीतकर आए थे , पांच साल बाद, राज्य चुनाव में एनटीआर की लोकप्रियता अपने सर्वोच्च स्तर पर थी। तब भी वे बीजेपी के विधायक चुने गए। उनकी जीत ने आंध्र समेत दक्षिण में बीजेपी के लिए भविष्य के बीज बोये थे। युवा विधायक के रूप में ही, वे विधायी मामलों में अपनी दृढता और अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की आवाज उठाने के लिए सम्मानित होने लगे। उनकी वाकपटुता, शब्दशैली और संगठन सामर्थ्य से प्रभावित होकर एनटीआर जैसे दिग्गज ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। एनटीआर उन्हें अपनी पार्टी में शामिल करना चाहते थे, लेकिन वेंकैया गारू हमेशा की तरह अपनी मूल विचारधारा पर अडिग रहे। उन्होंने आंध्र प्रदेश में बीजेपी को मजबूत करने में बडी भूमिका निभाई, गांवों में जाकर सभी क्षेत्रों के लोगों से जुड़े। उन्होंने विधानसभा में पार्टी का नेतृत्व किया और आंध्र प्रदेश बीजेपी के अध्यक्ष भी बने।

1990 के दशक में बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व ने वेंकैया गारू के परिश्रम और प्रयासों को पहचानते हुये उन्हें पार्टी का अखिल भारतीय महासचिव नियुक्त किया। 1993 में यहीं से राष्ट्रीय राजनीति में उनका कार्यकाल शुरू हुआ था। एक ऐसा व्यक्ति, जो किशोरावस्था में अटल जी और आडवाणी जी के दौरों की तैयारी करता था, उनके लिए ये कितना बडा मुकाम था। पार्टी महासचिव के रूप में, उनका एक ही लक्ष्य था कि अपनी पार्टी को सत्ता में कैसे लाया जाए! उनका एक ही संकल्प था कि कैसे देश को बीजेपी का पहला प्रधानमंत्री मिले। दिल्ली आने के बाद, उनकी मेहनत का ही परिणाम था कि उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कुछ ही समय बाद वे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने।

वर्ष 2000 में, जब अटल जी सरकार बना रहे थे तो वो वेंकैया गारू को अपनी सरकार में मंत्री बनाना चाहते थे। अटल जी ने उनसे उनकी इच्छा पूछी तो वेंकैया गारु ने ग्रामीण विकास मंत्रालय को अपनी प्राथमिकता के रूप में चुना। उनकी इस पसंद ने तब कई लोगों को हैरान किया था। क्योंकि, उसके पहले नेताओं के लिए दूसरे मंत्रालय पहली पसंद हुआ करते थे। लेकिन, वेंकैया गारू की सोच बिल्कुल स्पष्ट थी- वह एक किसान पुत्र थे, उन्होंने अपने शुरुआती दिन गांवों में बिताए थे और इसलिए, अगर कोई एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें वह काम करना चाहते थे, तो वह ग्रामीण विकास था। उस समय एक मंत्री के रूप में प्रधानमंत्री ग्रामीण सडक योजना को जमीन पर उतारने में उनकी अहम भूमिका थी।

2014 में एनडीए सरकार ने सत्ता संभाली, तो उन्होंने शहरी विकास, आवासन एवं शहरी गरीबी उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों को संभाला। उनके कार्यकाल के दौरान ही हमने स्वच्छ भारत मिशन और शहरी विकास से संबंधित कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं। शायद, वह उन नेताओं में से एक हैं जिन्होंने इतने लंबे समय तक ग्रामीण और शहरी विकास दोनों के लिए काम किया है।

2014 के उन शुरुआती दिनों में वेंकैया जी का अनुभव मेरे भी बहुत काम आया था। मैं उस समय दिल्ली के लिए एक बाहरी व्यक्ति था। मेरा करीब डेढ़ दशक गुजरात में ही काम करते हुये बीता था। ऐसे समय में वेंकैया गारू का सहयोग मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह एक प्रभावी संसदीय कार्य मंत्री थे। वो सदन में पक्ष-विपक्ष की बारीकियों को समझते थे। साथ ही, जब संसदीय मानदंडों और नियमों की बात आती थी, तब वो नियमों को लेकर भी उतना ही स्पष्ट नज़र आते थे।

वर्ष 2017 में, हमारे गठबंधन ने उन्हें हमारे उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित किया। ये हमारे लिए एक कठिन और दुविधा से भरा निर्णय था। हम ये जानते थे कि वेंकैया गारू के स्थान को भरना बेहद कठिन होगा। लेकिन साथ ही, हमें ये भी पता था कि उपराष्ट्रपति पद के लिए उनसे बेहतर कोई और उम्मीदवार नहीं है। मंत्री और सांसद पद से इस्तीफा देते हुए उन्होंने जो भाषण दिया था, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। जब उन्होंने पार्टी के साथ अपने जुड़ाव और इसे बनाने के प्रयासों को याद किया तो वह अपने आंसू नहीं रोक पाए। इससे उनकी गहरी प्रतिबद्धता और जुनून की झलक मिलती है। उपराष्ट्रपति बनने पर उन्होंने कई ऐसे कदम उठाए जिससे इस पद की गरिमा और भी बढ़ी। वह राज्यसभा के एक उत्कृष्ट सभापति थे, जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि युवा सांसदों, महिला सांसदों और पहली बार चुने गए सांसदों को बोलने का अवसर मिले। उन्होंने सदन में उपस्थिति पर बहुत जोर दिया, समितियों को अधिक प्रभावी बनाया। उन्होंने सदन में बहस के स्तर को भी ऊंचा उठाया।

जब अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को हटाने का निर्णय राज्यसभा के पटल पर रखा गया, तो वेंकैया गारू ही सभापति थे। मुझे यकीन है कि यह उनके लिए एक भावनात्मक क्षण था। वह युवा जिसने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के एक विधान, एक निशान, एक प्रधान के संकल्प के लिए अपना जीवन समर्पित किया था, जब वह सपना पूरा हुआ तो वह सभापति के पद पर आसीन था। किसी निष्ठावान देशभक्त के जीवन में इससे बड़ा समय और क्या होगा!

काम और राजनीति के अलावा, वेंकैया गारू एक उत्साही पाठक और लेखक भी हैं। दिल्ली के लोगों के बीच, उन्हें उस व्यक्ति के रूप में जाना जाता है जो शहर में गौरवशाली तेलुगु संस्कृति लेकर आए। उनके द्वारा आयोजित उगादी और संक्रांति कार्यक्रम स्पष्ट रूप से शहर के सबसे पसंदीदा समारोहों में से एक हैं। मैं वेंकैया गारू को हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानता हूं जो भोजन प्रेमी हैं और शानदार मेजबानी करना जानते हैं।

लेकिन, पिछले कुछ समय से उनका संयम भी सबके सामने दिखने लगा है। फिटनेस के प्रति उनकी प्रतिबद्धाता इस बात से झलकती है कि वह अभी भी बैडमिंटन खेलना और ब्रिस्क वॉक करना पसंद करते हैं।

उपराष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूरा करने के बाद भी, वेंकैया गारू सार्वजनिक जीवन में बेहद सक्रिय हैं। वह लगातार देश के लिए जरूरी मुद्दों और विकास कार्यों को मुझसे बात करते रहते हैं। हाल ही मे जब हमारी सरकार तीसरी बार सत्ता में लौटी, तो मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। वह बहुत खुश हुए और उन्होंने मुझे व हमारी टीम को अपनी शुभकामनाएं दी। मैं एक बार फिर उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। मुझे आशा है कि युवा कार्यकर्ता, निर्वाचित प्रतिनिधि और सेवा करने का जुनून रखने वाले सभी लोग उनके जीवन से सीख लेंगे और उन मूल्यों को अपनाएंगे। यह वेंकैया गारू जैसे लोग ही हैं जो हमारे राष्ट्र को बेहतर और अधिक जीवंत बनाते है।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

आरोग्य के देवता के देवदूत डॉक्टर्स

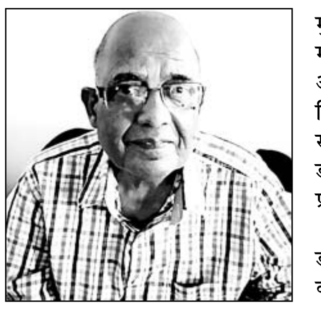

डॉ. जे.के.गर्ग

डॉक्टर्स दुवारा मानव एवं पशुओं के सुस्वास्थ्य के लिए दी गई अमूल्य सेवा और योगदान के बारे में जनसाधारण को जागरूक करने के लिये प्रतिवर्ष भारत में 1 जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस (डॉक्टर्स डे) मनाया जाता है। भारत के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. बिधान चन्द्र रॉय को श्रद्धांजलि और सम्मान देने के लिये 1 जुलाई को उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर इसे मनाया जाता है। डॉ.बी.सी.रॉय का जन्म 1 जुलाई 1882 को बिहार के पटना में हुआ था। डा.रॉय ने 1911 में एक चिकित्सक के रुप में अपने चिकित्सा जीवन प्रारम्भ किया था। वो एक प्रसिद्ध चिकित्सक तथा प्रख्यात शिक्षाविद् होने के साथ ही स्वतंत्रता सेनानी भी थे। महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के नेता बने और उसके बाद पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने। इस दुनिया में अपनी महान सेवा देने के बाद 80 वर्ष की आयु में 1962 में अपने जन्मदिन के दिन ही उनकी मृत्यु हो गयी। उनके सम्मान में वर्ष 1976 में उनके नाम पर डॉ.बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रारम्भ किया गया।

माँ हमारे जीवन की सबसे पहली डॉक्टर है जो जीवन भर हमारी देखभाल करती है। ईश्वर सबके जीवन की रक्षा खुद से नही कर पाते इसलिए इस धरती पर अपने दूत के रूप में डॉक्टर को भेज दिया। बीमारी से लड़ने की ताकत एक डॉक्टर ही हमे देता है। वो इन्सान डॉक्टर ही होता है जो रोते हुए आये मरीज को हँसाते हुए भेजता है। जीवन जीना एक कला है जिन्हें जीने के लिए माँ-बाप के बाद एक डॉक्टर की ही सलाह की जरूरत पड़ती है। आधी से अधिक बीमारी तो डॉक्टर के सांत्वना से ही ठीक हो जाती है, निसंदेह डॉक्टर इस संसार के वास्तविक हीरो होते है जो देवदूत बन कर हमारे जीवन की रक्षा करते है।

एक डॉक्टर अपने मरीज के स्वास्थ्य को लेकर हमेशा चिंतित रहता है। वहीं उत्तम श्रेणी का डॉक्टर मरीज की बीमारी इलाज करने से पहिले उसके मन का इलाज करते है एवं उसे उसके उत्तम स्वास्थ्य के लिये लाभदायक सलाह मशविरा भी देते है क्योंकि वो जानते है कि स्वास्थ्य लाभ में दवा के साथ मरीज मे ठीक होने का आत्म विश्वास भी जरुरी होता है। हमें जीवन से प्यार करना भी डॉक्टर ही सीखाते है।उनको मरीज की जाति या धर्म और अमीरी गरीबी से मतलब नही होता उसके लिए सभी मरीज एक समान होते है। बड़ी से बड़ी बीमारी को डॉक्टर अपने सुझबुझ से मरीज के सामने उस बीमारी को छोटा बनाकर अपने इलाज से उस बीमारी को खत्म कर देते है। अच्छा डॉक्टर हमे दवा का आदी नही बनाता बल्कि दवा से कैसे दूर रहे उसकी सलाह ज्यादा देता है।

याद रखिये कि बीमारी के इलाज से पहिले मरीज के दिल में यह विश्वास जरूरी है कि मेरी बीमारी असाध्य नहीं है और में उपचार के साथ अपनी दिनचर्या और सोच में जरूरी बदलाव लाकर स्वस्थ हो जा हूँगा। निसंदेह जब हम अपने सारी उम्मीदें खो देते है तब हमारे जीवन में स्वास्थ्य लाने के लिए और वहाँ हमारा साथ देने के लिए केवल डॉक्टर के पास ही उस जीवन के इलाज के लिए जादुई शक्ति होती है।

आज से बीस-पच्चीस साल पूर्व सही मायने के अंदर देवदूत ही होते थे। एक बार मेरी माता जी को अच्चंक हृदयघात हो गया आधी रात को उनको अस्तपताल ले जाया गया, कुछ ही समय बाद नगर के एक मात्र हृदय विशेषक डा. सीता राम मित्तल अपनी पुरानी साईकल पर मेरी माता जी को देखने और उनका इलाज करने के लिए होस्पिटल आधी रात को आ गये और मरीज के पास चार-पांच घंटे खड़े रहें, जब तक मेरी मान खतरे से बाहर नहीं हो गयी। मेरे सभी स्वजन औरआस पास खड़े लोग उनको देवदूत पुकारने लगे। उस समय नगर के अन्य प्रसिद्ध डॉक्टर सर्जन भी जरूरत पड़ने पर रोगी के निवास पर जाने में कोई संकोच नहीं करते थे। काश आज भी ऐसा हो पाता। कुछ समय पूर्व मेरा भतीजा ललित गर्ग ब्यावर में बीमार चल रहा था और अपने बचपन के मित्र डॉक्टर से इलाज करवा रहा था उसको हमेशा उसका परामर्श शुल्क भी देता था। 25 जनवरी की रात को उसकी तबीयत अचानक बीगड़ गई, अनेको स्वजन लोग उस डॉक्टर की घर पर उससे अनुनय करने लगे और ललित को देखने उसके घर पर चलने के लिए प्राथना करने लगे, उसको मन चाही फीस भी देने लगे किन्तु निष्ठुर देवदूत ने मना कर दिया। कुछ ही समय बाद ललित अपनी बेटियों पत्नी स्वजनो को रोता-बीलखता छोड़ पंच तत्वों के अंदर विलीन हो गया। क्या हम ऐसे डॉक्टर को देव दूत पुकारेंगे? कभी नहीं।

भौतिक सुख-सुविधा की तडक-भडक के इस समय मे डॉक्टर्स भी धन लोलुपता से ग्रस्त हो गये हैं और उनके लिए उनके निजी हित और स्वार्थ मरीज के उपचार और इलाज से ज्यादा जरूरी बन गये हैं, ऐसे ही डॉक्टर्स के कारण उनका नोबेल पेशा बदनाम होकर अपनी गरिमा को नष्ट कर रहा है। इंडीयन मेडिकल एसोसिएशन से अनुरोध है कि वो डॉक्टर से सलाह दें कि गम्भीर अपाहिज शय्याग्रस्त रोगी को देखने उनके घर पर जरुर जाकर उनका इलाज करके उनका जीवन दान दें और देव दूत बने।

हमारे प्रांत राजस्थान में स्वास्थ्य के अधिकार का कानून बन चुका है। इस कानून के अधीन सरकार डॉक्टरों को आदेश दें कि गंभीर अपाहिज शय्या ग्रस्त रोगी को देखने उनके घर पर जरुर जाकर उनका इलाज करके उनको जीवन दान दें और देव दूत बने। सच्चाई यही है कि मनुष्य मृत्यु पर अपने साथ सिर्फ उसके कर्म ले जाता है और ये कर्म ही उसके अगले जन्म में उसको भोगने पड़ते हैं।

वहीं दूसरी तरफ मरीजों के कतिपय रिश्तेदार अकारण ही डॉक्टर्स से हाथापाई करके उनको शारीरिक/मानसिक यातना देते हैं और उनके साथ मारपीट करते हैं। इसलिए सरकार को कार्यरत डॉक्टरों की सुरक्षा के लिये समुचित कठोर कानून बनाने चाहिए। डॉक्टर्स डे के दिन डॉक्टरों को भी आत्म चिन्तन करते हुए अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को समझना होगा। डॉक्टर को चिकित्सा को मात्र पैसा कमाने का साधन नहीं मान कर उसकी जगह इसे मानवीय सेवा का नोबेल मिशन बनाना चाहिये।

–डॉ. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

नए आपराधिक कानूनों के लागू होने पर लॉ गार्डन तैयार किया

■ न्यू लॉ गार्डन के उद्घाटन के अवसर पर नये कानूनों की मुख्य विशेषताओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी

अजमेर, (कासं)। एक जुलाई से देश भर में उपनिवेश काल से जारी मुख्य आपराधिक कानूनों के स्थान पर नए कानून लागू होंगे। इनमें भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता तथा एविडेंस एक्ट के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम क्रियान्वित होंगे। नए कानून लागू होने के उपलक्ष्य में देश भर में कई कार्यक्रम आयोजित होंगे। कारागार प्रशिक्षण संस्थान में जेल प्रहरियों द्वारा अनूठा प्रयोग किया गया है। उन्होंने महिलाओं द्वारा संचालित एनजीओ इनरव्हील क्लब की सहायता से एक बगीचा तैयार किया है, जिसमें कई फलदार, फूलदार व छायादार पौधे लगाए जाएंगे। इस बगीचे का नाम नए आपराधिक कानूनों के लागू होने पर लॉ गार्डन रखा है, जिसका सोमवार को उद्घाटन किया जाएगा।

इनरव्हील क्लब की अध्यक्ष ईशिता कोठारी, सचिव पूर्णिमा तोषनीवाल ने क्लब की ओर से पौधे, खाद, उपजाऊ मिट्टी आदि जेटीआई को उपलब्ध करवाये हैं। जेल अधीक्षक पारस जांगिड, प्रशासनिक अधिकारी मोहन सिंह तथा पर्यावरण प्रेमी बाबू सिंह रावत के निर्देशन में प्रशिक्षु जेल प्रहरियों तथा सहायक प्रशिक्षकों सुभाष जांगू, सोमराज, देवेंद्र सिंह, सुभाष बिश्नोई, गजराज, अर्जुन, खेतपाल, बनवारीलाल, रसाल देवी आदि द्वारा बगीचा तैयार किया गया है। सोमवार को न्यू लॉ गार्डन के उद्घाटन के अवसर पर नये कानूनों की मुख्य विशेषताओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। इस अवसर पर ज़िला प्रशासन तथा न्यायिक अधिकारियों, नागरिकों, रिटायर्ड जेल अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत एवं सम्मान किया जाएगा।

राशिफल

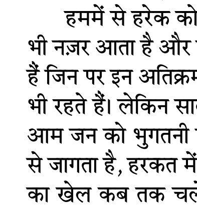

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 1 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र प्रातः 6:26 तक, सुकर्मा योग दिन 1:41 तक, विष्टि करण दिन 10:27 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

कुमार योग प्रातः सूर्योदय से प्रातः 6:26 तक है। भद्रा प्रातः 10:27 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:23 तक, शुभ 9:05 से 10:48 तक, चर 2:13 से 3:55 तक, लाभ-अमृत 3:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:20

मेष

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आज परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

मकर

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

सार-समाचार

सेवानिवृत्त होने पर किया सम्मान

सूरौठ, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खरैरी बागरैन से सेवानिवृत होकर अपने गांव सूरौठ आने पर ग्रामवासियों ने सेवानिवृत्ति शिक्षक धर्मसिंह मीणा का किया भव्य स्वागत सम्मान जिस पर समाजसेवी वकील मीना, सिप्पी शर्मा,राजीव मीना, केशव शर्मा,रजनीश मीना अवधेश शर्मा राजेश मीना सोनू मीना देवीसिंह मीना भोला मीना व अमरसिंह मीना ने जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षक के सेवानिवृत होकर अपने गांव आने पर कस्बे के लोकप्रिय आराध्य देव बूडन्दें मां मंदिर परिसर में मीणा ने ढोक लगाकर लिया आशीर्वाद व शिक्षक मीना का कस्बे के प्रमुख मार्गों से होते हुए जुलूस निकाला गया जिस पर धर्मसिंह मीणा शिक्षक का सर्व समाज के लोगों ने माला व साफा पहनाकर जोरदार तरीके से भव्य स्वागत सम्मान किया गया खरैरी बागरैन ग्राम के ग्रामीणों ने शिक्षक धर्मसिंह मीणा के कार्यकाल की प्रशंसा,इसी प्रकार राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सूरौठ से लैब टैक्नीशियन सतीश शर्मा हुक्मीखेड़ा ,कम्पाउन्ड रामेश्वर जाटव धुरसी का सेवानिवृत्त होकर अपने गांव पहुंचने पर ग्रामवासियों ने किया भव्य स्वागत सम्मान,दीपक गुधैनिया ने जानकारी देते हुए बताया कि लैब टैक्नीशियन सतीश शर्मा व कम्पाउन्ड रामेश्वर जाटव का बैड बाजों के साथ भव्य जूलूस निकाला गया व सूरौठ सरपंच निवास पर रामवतार शर्मा धीरेन्द्र शर्मा चंदशेखर शर्मा, लाला, दिलीप चौधरी, ओमप्रकाश पचौरी प्रशांत शर्मा मिमी शर्मा,टीपू विजयवर्गीय,सहित कस्बे के प्रबुद्ध जनों ने माला व साफा पहनाकर जोरदार तरीके से भव्य स्वागत सम्मान किया गया स्टाफ कर्मियों ने दोनों कमियों के कार्यकाल कि प्रशंसा इस मौके पर कई लोग रहें उपस्थि।

अनुदान के लिए लॉटरी से होगा चयन

करौली, (निसं)। उद्यान विभाग द्वारा संचालित योजनाओ में आवेदन करने वाले किसानों को अब अनुदान के लिए लम्बा इंतजार नहीं करना होगा। उपनिदेशक उद्यान करौली रामलाल जाट ने बताया कि राज्यसरकार ने विभाग के माध्यम से संचालित विभिन्न योजनाओ यथा ग्रीन हाउस पॉली हाउस,शेडनेट हाउस,प्लास्टिक मल्च,प्लास्टिक टनल,सामुदायिक जल स्त्रोत,नवीन बगीचा स्थापना, कम लागत के प्याज भण्डारण संरचना,पैक हाउस, वर्मी कम्पोस्ट इकाई, अधिक मूल्य वाली सब्जियां हाई वेल्यू इत्यादि हेतु किसानो के चयन का कार्यक्रम जारी कर दिया है। उद्यान आयुक्तालय से जारी गाईडलाईन के अनुसार दिनॉक 16.मई से 30.जून की अवधि मे राज किसान साथी पोर्टल के माध्यम से आवेदन करने वाले कृषकों एवं वर्ष 2022-23 व 2023-24 मे जिन कृषको ने राज किसान साथी पोर्टल पर आवेदन किया था परन्तु उनका चयन वरीयता सूची मे नही आने के कारण लाभान्वित नहीं किया गया उन कृषकों के आवेदन पत्र राज किसान साथी पोर्टल पर वर्ष 2024-25 केरीफार्वड करते हुये पात्र माना जावेगा। इन सभी आवेदन पत्रों को सम्मिलित कर आवंटित लक्ष्यों के डेढ गुणा 150 प्रतिशत से अधिक आवेदन प्राप्त होने की स्थिति मे ही पात्र कृषकों का चयन लॉटरी/रेंडोमाईजेशन प्रक्रिया द्वारा किया जाना है। विभिन्न योजनाओ में अनुदान के लिए आवेदन करने वाले किसानो का चयन इसी महीने 05.जुलाई तक किया जावेगा। विभाग की सभी योजनाओ में किसानो के चयन के लिए इस बार आयुक्तालय स्तर पर गठित कमेटीकी निगरानी में एक साथ लॉटरी निकाली जावेगी। चयन प्रक्रिया में उन्ही किसानो को शामिल किया जाएगा, जिन्होने विभाग को राज किसान साथी पोर्टल या ई-मित्र के जरिये 30.जून तक ऑनलाईन आवेदन किया है। 30 जून के बाद प्राप्त आवेदनों को अगले साल के लिए लम्बित रखा जाएगा ।

प्री-बीएसटीसी परीक्षा संपन्न

करौली, (निसं)। करौली सहित उपखंड मुख्यालय हिंडौन सिटी के 57 परीक्षा केंद्रों पर रविवार को प्री-बीएसटीसी परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में 17 हजार 531 परीक्षार्थी ने परीक्षा दी जबकि 18 हजार 701 अभ्यर्थी रजिस्टर थे। इनमें से 1170 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षा के लिए प्रातः से ही परीक्षा केंद्रों पर अभ्यर्थियों का पहुंचना शुरू हो गया। अभ्यर्थियों को कड़ी जांच के बाद ही परीक्षा केंद्र में प्रवेश दिया गया। इस दौरान कुछ छात्र निर्धारित समय के बाद पहुंचे जिन्हें केंद्र में प्रवेश नहीं दिया गया। परीक्षा के जिला समन्वयक व गवर्नमेंट कॉलेज प्रिंसिपल विश्राम बैरवा ने बताया-प्री-बीएसटीसी परीक्षा के लिए जिले में कुल 57 परीक्षा केन्द्र बनाए गए। उन्होंने बताया करौली में 23,हिंडौन सिटी में 32 और श्रीमहावीरजी में दो परीक्षा केंद्र बनाए गए। जिला सह समन्वयक ने बताया कि परीक्षा के दौरान परीक्षार्थी को एडमिट कार्ड के साथ अपना मूल फोटोयुक्त पहचान पत्र भी साथ लाना अनिवार्य था। परीक्षा शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने के लिए सभी केन्द्रों पर पुलिस माकूल व्यवस्था की गई। उन्होने बताया कि परीक्षा में नकल और गड़बड़ी रोकने के लिए केन्द्रों पर प्रत्येक कक्ष में दो-दो वीक्षक लगाए गए केन्द्रों पर पुलिस-प्रशासन की ओर से कड़ी चौकसी रखी गई सभी केन्द्रों पर केन्द्र पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए। इस दौरान अभ्यार्थियों और उनके परिजनों के केंद्र पर पहुंचने के लिए रोडवेज बस, प्राइवेट बस सहित अन्य वाहनों में भीड़ रही।

विचार गोष्ठी का आयोजन

भुसावर, (निसं)। कृषि महाविद्यालय भुसावर पर राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस के उपलक्ष में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के डीन डॉ. उदय भान सिंह ने कहा कि आधुनिक युग में देश, राज्य, संस्था और व्यक्तिगत विकास की योजनाऐं बनाने व उनका क्रियान्वयन करने में सांख्यिकी का विशेष महत्व है। किसी भी योजना को बनाने के लिए डेटा की जरूरत होती है जैसे हमें देश की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए सालाना कृषि विकास दर 4 प्रतिशत निर्धारित की तो उसके लिए अनुसंधान, सिंचाई के पानी, अच्छे कृषि यंत्र, बीज, उच्च तकनीक, प्रसंस्करण आदि के लिए योजना तैयार की जाती है तथा तदनुरूप बजट का आवंटन होता है। इसी तरह चिकित्सा, शिक्षा, सड़क, उद्योग, दूरसंचार आदि तमाम क्षेत्रों के विकास के लिए सांख्यिकीय आंकड़े एवं उनकी गणना तथा क्रियान्वयन विधि का निर्धारण किया जाता है। अतः सांख्यिकी किसी भी विकास योजना का आधार है। डॉ उदय भान सिंह ने कहा कि यह दिवस प्रथम योजना आयोग के सदस्य प्रोफेसर प्रशांत चन्द्र महालनोबिस के जन्मदिन के उपलक्ष में मनाया जाता है। प्रोफेसर महालनोबिस का जन्म 29 जून 1893 को कलकत्ता में एक धनी और शैक्षिणक रूप से उन्मुख बंगाली परिवार में हुआ था। उन्होंने सन् 1931 में भारतीय सांख्यिकी संस्थान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

योगेंद्र डागुर बने पुनः जिला संयोजक

करौली, (निसं)। करौली जिले की उपतहसील शेरपुर निवासी योगेंद्र डागुर को एबीवीपी करौली जिला का पुनः जिला संयोजक का दायित्व दिया गया है। एबीवीपी के जयपुर प्रान्त का अभ्यास वर्ग दिनांक 24 से 27 जून को टोंक में आयोजित हुआ जिसमें प्रान्त अध्यक्ष डॉ जिनेश ने संगठन के प्रशासन की दृष्टि से प्रान्त के विविध दायित्वों की घोषणा की। योगेंद्र डागुर छात्र जीवन में 2019 से अभाविप के संपर्क में आए और 2020 से लगातार दायित्ववान है। इससे पूर्व परिषद में इकाई अध्यक्ष नगर मंत्री,जिला समिति सदस्य दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। गत 2023 मे जिला संयोजक बनने के बाद संगठन कार्य में अच्छा योगदान दिया और अगस्त 2023 मे पूर्व सरकार मे हुए पेपर लीक, महिला उत्पीड़न के खिलाफ करौली से न्याय पद यात्रा सफल रही। जिससे डागुर को पुनः जिम्मेदारी दी।

जाट समाज चौरासी की सभा 3 को

हिण्डौन, (निसं)। जाट समाज चौरासी की आम सभा 3 जुलाई बुधवार को सुबह 11.00बजे जाट छात्रावास हिण्डौनसिटी में रखी गई है। जाट समाज चौरासी महामंत्री देवीसिंह सोलंकी ने बताया कि जाट समाज चौरासी की आम सभा की अध्यक्षता जाट समाज चौरासी अध्यक्ष गजानंद चौधरी करेंगे। आम सभा में 11 जून की आम सभा मे लिये गये समाज हित के बिन्दुओं की पालनार्थ पर चर्चा की जाएगी।

मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का शुभारम्भ

यूआईटी ऑडिटोरियम भरतपुर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भरतपुर, (निसं)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने राजस्थान के किसानों के लिये मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का शुभारम्भ रविवार को टोंक जिले के कृषि उपज मण्डी प्रांगण से राज्य स्तरीय समारोह के दौरान किया। इस दौरान प्रदेश के 65 लाख से अधिक किसानों को योजना के तहत प्रथम किश्त के रूप में 650 करोड रुपये से अधिक की राशि का हस्तान्तरण सीधा किसानों के बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को सशक्त, समृद्व एवं उन्नतशील बनाने के लिये प्रदेश सरकार सदैव समर्पित है। राज्य सरकार समृद्व किसान, खुशहाल राजस्थान की परिकल्पना को साकार करने के लिये प्रतिबद्व है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की मंशानुरुप प्रदेश का किसान अब सम्मान के साथ कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरी कर पायेगा। जिला प्रशासन एवं सहकारिता विभाग भरतपुर के द्वारा यूआईटी ऑडिटोरियम भरतपुर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान वैर विधायक बहादुर सिंह कोली एवं स्थानीय जनप्रतिनिधिगण व किसान उपस्थित रहे। जिला कलक्टर ने बताया कि मुख्यमंत्री ने प्रदेश की विषम भौगोलिक परिस्थितियों एवं किसानों की कृषि संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये किसानों को प्रतिवर्ष 2 हजार रुपये की अतिरिक्त राशि देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत जिले के 2 लाख 45 हजार से अधिक पात्र लाभार्थी किसानों को इसका फायदा मिलेगा। जिला कलक्टर ने बताया कि किसानों को प्रथम किश्त के रूप में एक हजार रूपये हस्तान्तरित किये गए तथा दूसरी व तीसरी किश्त के रूप में 500-500 रुपये उनके खातों में पीएम किसान सम्मान निधि योजना की किश्त के साथ हस्तान्तरित किये जायेंगे। जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने बताया कि मुख्यमंत्री पात्र किसानों से वर्चुअल माध्यम से जुडे साथ ही पात्र किसानों के खातों में एक हजार रूपए की पहली किस्त का डीबीटी के माध्यम से हस्तानांतरित की गई। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत प्रथम किश्त के रूप में भरतपुर जिले के 2 लाख 45 हजार 791 पात्र लाभार्थी किसानों के खातों में 24 करोड 57 लाख 91 हजार रूपये की राशि का हस्तांतरण डीबीटी के माध्यम से किया गया। मुख्यमंत्री शर्मा ने समारोह के दौरान भरतपुर जिले के ग्राम अटारी निवासी पात्र लाभार्थी किसान राकेश शर्मा से वर्चुअल संवाद किया। संवाद के दौरान राकेश शर्मा ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद ज्ञापित करते हुये बताया कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत प्रथम किश्त के रूप में एक हजार रूपये की राशि उन्हें प्राप्त हो चुकी है।

डायरिया की रोकथाम के लिए चलेगा अभियान

करौली, (निसं)। जिले में डायरिया की रोकथाम के लिए 1 जुलाई से 31 अगस्त तक अभियान चलाया जाएगा। इस संबंध में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की ओर से विस्तृत गाइड लाइन जारी कर दी गई है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश चंद मीणा ने बताया कि इस बार की थीम डायरिया की रोकथाम,सफाई और ओआरएस से रखें अपना ध्यान्य रखी गई है। उन्होंने बताया कि अभियान 8 सप्ताह के लिए चलाया जाएगा। इन आठ सप्ताह में आशाएं 5 साल तक के बच्चों का घर-घर जाकर सर्वे करेंगी और ओआरएस के पैकेट तथा जिंक टेबलेट्स का वितरण करेंगी।डिप्टी सीएमएचओ डॉ. सतीश चंद मीणा ने बताया कि सभी राजकीय चिकित्सालयों, आयुष्मान आरोग्य मंदिरों तथ आंगनबाडी केन्द्रों पर ओआरएस जिंक कार्नर स्थापित किए जाएंगे। इस दौरान उपचार के लिए आने वाले मरीजों और उनके परिजनों को डायरिया के लक्षण और बचाव के प्रति जागरूक भी किया जाएगा। इन कॉर्नर्स की मदद से ओआरएस तथा जिंक टेबलेट्स का निशुल्क वितरण भी आवश्यकतानुसार किया जाएगा। अभियान से पूर्व सभी राजकीय चिकित्सा संस्थानों पर डायरिया नियंत्रण अभियान को गति देने के लिए ओआरएस, आईवी फ्लूड और जिंक टेबलेट्स की आपूर्ति की जाएगी। उन्होंने बताया कि अभियान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, जलदाय विभाग, नगर निकाय का सहयोग भी लिया जाएगा।

डा. शर्मा बने जिलाध्यक्ष

गंगापुर सिटी, (निसं)। विप्र सेना ब्राह्मण समाज संगठन के संरक्षक रामचरण बोहरा, प्रदेश अध्यक्ष राजेश तिवारी व प्रदेश उपाध्यक्ष पवन शर्मा के प्रस्ताव अनुसार प्रदेश संगठन महामंत्री नवीन शर्मा द्वारा विप्र सेना जिला गंगापुर सिटी के जिला अध्यक्ष पद पर भगवती एजुकेशन के डायरेक्टर डॉ० अनुज कुमार शर्मा को नियुक्त किया। डॉ०अनुज कुमार शर्मा के जिला अध्यक्ष बनने पर पूर्व सभापति हरिप्रसाद बोहरा, श्यामसुंदर शर्मा, गिरधारी शर्मा, कमलेश जोशी, कृपा शंकर उपाध्याय, शिवराम शर्मा, राकेश उपाध्याय, अजय पाराशर, अमित महंत, हरिकिशन भारद्वाज, राम भरोसी शर्मा सहित अनेक ब्रह्म जनों ने उन्हें बधाई दी।

तिथि बढ़ाई

गंगापुर सिटी, (निसं)। सरकारी कॉलेजों में शैक्षणिक सत्र 2023-24 के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं न्याय अधिकारिता विभाग की स्कॉलरशिप के लिए ऑनलाइन पंजीकरण और आवेदन की अंतिम तिथि अब 31 जुलाई तक बढा दी गई है। राजकीय पीजी कॉलेज गंगापुर सिटी की प्रिंसिपल सुमित्रा मीणा और राजकीय गर्ल्स कॉलेज वजीरपुर के नोडल अधिकारी प्रोफेसर रमेश बैरवा ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2023-24 के विद्यार्थियों को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की स्कॉलरशिप के लिए ऑनलाइन पंजीकरण एवं आवेदन की अंतिम तिथि 1 जुलाई 2024 तक बढा दी गई है। उल्लेख है कि अतिरिक्त निदेशक स्कॉलरशिप सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग राजस्थान सरकार के 24 मार्च 2024 के आदेश अनुसार 2023-24 में राजस्थान के मूल निवासी विद्यार्थियों के लिए अनुसूचित जाति, जनजाति, मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाओं में ऑनलाइन पंजीकरण व आवेदन हेतु अंतिम तिथि 30 जून 2024 रखी गई थी।

गंगापुर सिटी में नन्हे बच्चों ने गटकी पोलियो की दवा

गंगापुर सिटी में पोलियो की दवा पिलाते टीम के सदस्य।

गंगापुर सिटी, (निसं)। चिकित्सा विभाग की ओर से सघन पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान रविवार को शुरू हुआ। अभियान की शुरुआत सीएमएचओ डॉ. बत्तीलाल मीणा ने रविवार सुबह अमरगढ चौकी की मालियों की ढाणी में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में नन्हे बच्चों को पोलियो की दवा पिलाकर की।

जिले में शून्य से पांच साल तक के 1 लाख 41 हजार 418 बच्चों को पोलियो खुराक पिलाने का लक्ष्य है। अभियान के तहत गंगापुर सिटी गवर्नमेंट अस्पताल, उदेई मोड अस्पताल सहित अलग-अलग जगहों पर बनाए गए पोलियो बूथ पर ० से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई गई। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में एएनएम, आंगनबाडी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी आदि टीम बूथ पर पोलियो की खुराक पिलाने के लिए लगी है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बत्तीलाल मीणा ने बताया कि रविवार को बूथों पर स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा बच्चों को पोलियोरोधी खुराक पिलाई जाएगी।

वहीं, आगामी दो दिन वंचित रहने वाले बच्चों को घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो वैक्सीन पिलाई जाएगी। उन्होंने बताया- अभियान के तहत जिले में शून्य से पांच साल तक के 1 लाख 41 हजार 418 बच्चों को पोलियो खुराक पिलाने का लक्ष्य है।

उन्होंने जिले के ऐसे सभी माता पिता, जिनके बच्चे ० से 5 साल के हैं, उनसे पोलियो बूथ पर जाकर अपने बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने की अपील की। उन्होंने बताया कि अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए कुल 951 बूथ बनाए गए हैं। वहीं घर-घर भ्रमण के लिए 1०92 टीमें बनाई गई हैं।

डीएम ने शहर का भ्रमण कर लिया सड़क व नालों का जायजा

डीग में झमाझम बारिश के बाद डीएम ने शहर का भ्रमण कर लिया सड़क नालों का जायजा लिया।

डीग, (निसं)। जिले में मॉनसून की शुरुआत अच्छी हुई है। लगातार हो रही बारिश से किसानों के चेहरों पर खुशी की लहर छा गई है। लंबे समय से गर्मी की मार से जूझ रहे आमजन को भी राहत मिली है। जिला कलेक्टर डीग श्रुति भारद्वाज ने रविवार को शहर में हुई बारिश के बाद डीग का भ्रमण किया एवं मौके पर जाकर साफ-सफाई और जलभराव का जायजा लिया।

जिला कलेक्टर भारद्वाज ने कामां बायपास, लाला भगवान दास, अऊ दरवाज़ा, वार्ड संख्या 5, मेला ग्राउंड एवं पाण्डेय मोहल्ला में पहुंचकर जलभराव की स्थिति को जाना। शहर में साफ-सफाई एवं जलभराव की स्थिति को पुख्ता करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे आवश्यक कार्रवाई कर व्यवस्थाओं को सुधारने का कार्य करे। उन्होंने किला सहित लाला वाला कुंडा की साफ सफाई कराने को भी कहा है।इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आगामी वर्षा को देखते हुए अधिकारी नाली व कुंडो की साफ-सफाई कराए ताकि सडकों पर जलभराव की स्थिति उत्पन्न ना हो। भराव वाले स्थलों से पानी की निकासी के लिए आवश्यक मोटर पंपों की व्यवस्था और आवश्यक दवाईयों की पूर्ति के इंतजाम सुनिश्चित करने को भी कहा गया है। जिला कलेक्टर ने शहर के भ्रमण करने के पश्चात नगर परिषद डीग का भी निरीक्षण किया। कार्यों में लापरवाही बरतने पर एवं अनियमितता पाए जाने पर उपखंड अधिकारी डीग रवि गोयल को निर्देशित कर नगर परिषद आयुक्त मनोज मीणा को चार्जशीट देने के जरूरी दिशा निर्देश दिए गए है।

नगर परिषद में कंट्रोल रूम असक्रिय मिलने पर डीएम ने नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने तत्काल कंट्रोल रूम को संचालित करने एवं वर्षाकाल में सूचना तंत्र को और अधिक सुदृढ मजबूत करने को कहा ताकि किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना न हो।

सार-समाचार

कारागार परिसर में किया वृक्षारोपण

करौली, (निसं)। परिषद् के जिला समन्वयक राजेन्द्र दीवान ने बताया कि भारत विकास परिषद् के संस्थापक डा सूरज प्रकाश की जयंती से परिषद् के स्थापना दिवस 10 जुलाई तक सेवा पर्यावरण पखवाडा मनाया जा रहा है जिसके अन्तर्गत विभिन्न सेवा कार्य तथा वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। पर्यावरण प्रकल्प प्रभारी दिनेश सेठी ने बताया कि कारागार अधीक्षक रामावतार शर्मा के नेतृत्व में जेल कर्मियों,परिषद के जिला समन्वयक राजेन्द्र दीवान,सचिव कमलाकांत,वित्त सचिव अरविन्द अग्रवाल,अभय शास्त्री व स्काउटर पार्थसार्थी शुक्ला ने अनेक फल,फूल,हैज व छायादार पौधे रोपित किए गए। जेल के मुख्य प्रहरी व कार्यवाहक जेलर जगदीश शर्मा,प्रहरी अनिल कुमार, जाप्ता प्रभारी कमलेश मीना व हैड कांस्टेबल वशीरखान ने रोपित पौधों के पालन पोषण व सुरक्षा की जिम्मेदारी ली।

भाजपाईयों ने सुनी मन की बात

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय सहित आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा पदाधिकारी कार्यकर्ताओ ने आयोजित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन कि बात कार्यक्रम मे उपस्थित रहे कर बात सुनी। रविवार को कुड़गांव के राम जी मंदिर परिसर में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात के 111 वें एपिसोड को भाजपा जिला अध्यक्ष बृजलाल डिकोलिया की अध्यक्षता एवं सपोटरा विधायक हंसराज मीणा के आथित्य में सैकड़ो आमजन एव भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा सुना गया। इस अवसर पर भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष लक्ष्मण चौधरी,भाजपा महिला मोर्चा जिला संयोजक विद्या वैष्णव,भाजपा किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष नेहरू सिंह गुर्जर,भाजपा के कुड़गांव मंडल अध्यक्ष रूपसिंह मीणा,महामंत्री शेरसिंह जाट,पंचायत समिति सदस्य कुड़गांव नीरज घनघोर,पंचायत समिति सदस्य विमलेश मीणा,कुड़गांव सरपंच प्रतिनिधि गिर्राज ठेकेदार,महमदपुर सरपंच प्रतिनिधि शिवजी वैष्णव,बृजलाल मीना ठेकेदार मंडावरा, नेहरू गुर्जर, लवकुश सैन, बनवारी सैनी, रामनिवास मीणा मंडावरा, मोनू प्रजापत, कैलाश पाराशर, अतर सिंह चौधरी, मोनू पांडे, रोहित गोयल,मदन मोहन शर्मा मकनपुर, महेश पुजारी, सत्येंद्र वैष्णव आदि मौजूद रहे।इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मन कि बात कार्यक्रम जिला मुख्यालय स्थित बुथ न,108 व 109 पर पुर्व जिला अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद दामोदर भारद्वाज के मकान पर सुनी जिसमें मुख्य रुप से मन की बात के संयोजक जिला उपाध्यक्ष सुरेश शुक्ला,वरिष्ठ कार्यकर्ता सुनील भारद्वाज, बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष मानप्रकाश शुक्ला, बूथ अध्यक्ष महेश सालौत्री, मनोज शर्मा, विजय पाराशर,टीकम शर्मा, कमलेश पाराशर,सोसल मीडिया जिला सहयोजक किसान मोर्चा,मुकेश सोनी आदि कार्य कर्ता मौजुद रहे। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का प्रसारण शहर मंडल की 6 शक्ति केदो पर देखा गया।

अखलेश व शर्मा अधीक्षक नियुक्त

करौली, (निसं)। निदेशालय चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाऐ राजस्थान जयपुर ने एक सूची जारी करते हुए करौली सामान्य चिकित्सालय के दो नर्सिंगकर्मी मोहन लाल शर्मा एवं अखलेश गुप्ता को नर्सिंग अधीक्षक पद पर पदोन्नती दी है। निदेषक अराजपत्रित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाए राजस्थान जयपुर राकेष कुमार शर्मा ने एक आदेष जारी करते हुए बताया कि विभागीय पदोन्नती समिति कि बैठक 21 फरवरी 2024 कि सिफारिस के आधार पर निदेशालय के आदेष के द्वारा कर्मचारियो का चयन सीनियर नर्सिंग ऑफीसर से नर्सिंग अधीक्षक के पद पर किया जाकर पदोन्नत किया गया है। जिस आदेष सूची मे करौली सामान्य चिकित्सालय के नर्सिंगकर्मी अखलेष गुप्ता,मोहन लाल शर्मा को पदोन्नत करते हुए नर्सिंग अधीक्षक के पद पर लगाया गया है। ज्ञात रहे कि करौली चिकित्सालय मे नर्सिंग अधीक्षक के 3 पद स्वीकृत है जिनमे से एक पद पर रमेष चंद गुप्ता पूर्व से ही पद स्थापित है। वही रिक्त चल रहे 2 पदो पर अखलेष गुप्ता और मोहन लाल शर्मा को पदोन्नती देते हुए नर्सिंग अधीक्षक के पद पर लगाया गया है।

निमंत्रण पत्र का किया विमोचन

भरतपुर, (निसं)। अग्रवाल भवन खिरनी घाट भरतपुर पर भगवान श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति की बैठक संरक्षक संजीव गुप्ता एवं अध्यक्ष मोहन मिततल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। महामंत्री महेषचंद सिंघल ने बताया कि 10 जुलाई को भरतपुर में निकलने वाली रथयात्रा को दिव्य, भव्य एवं भक्तिमय बनाने हेतु विस्तृत रूप से चर्चा की गई। इस्कॉन वृन्दावन से आने वाले विषिश्ट रथ को पुश्प पत्र हारों से विषेश रूप से सजाया जावेगा। भगवान जगन्नाथ जी, भाई बलराम जी एवं बहिन सुभद्रा जी का आकर्शक एवं मनमोहक वस्त्रों से श्रृंगार किया जावेगा। मलयागिरी चंदन अर्पित कर इत्र आदि सुगंधित द्रव्यों का छिडकाव किया जावेगा। इस झांकी के सुखद दर्षन द पार्क होटल में प्रातः 10 बजे होगा। वृन्दावन से 3 बसों द्वारा विदेषी भक्तों का आगमन होगा। जिनका भावपूर्ण हरिनाम संकीर्तन मनोहारी नृत्य भक्तिमय वातावरण से सराबोर करेगी। भगवान को 56 प्रकार के व्यंजनों के भोग झांकी सजीव झांकियां चार घोडों पर आरूण संतों को दर्षन विषेश आकर्शण होगा। भगवान जगन्नाथ का कृपा पूर्ण आर्षीवाद अधिक से अधिक भक्त प्राप्त कर सकें इसके लिए आमंत्रण पत्र भी छपवाया गया है जिसका विमोचन बैठक में उपस्थित पदाधिकारी एवं भक्तों के द्वारा किया गया एवं जन सम्पर्क कर अधिक से अधिक लोगों को जानकारी दी जावेगी। रथ यात्रा मध्यांह 12 बजे होटल द पार्क से प्रारम्भ होकर सारस चौराहा, बिजली घर, मथुरा गेट, गंगा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर कुम्हेर गेट, तोप सर्किल होती हुई जय षिव मैरिज होम में समाप्ति होगी।

कार्यालय प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, करौली (राज.)

Email ID pgcollegekarauli@gmail.com
Phone No. 07464250023

कमांक : प.1 ( ) स्था/रामक/2024/3120
दिनांकः- 28.06.2024

आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान के पत्र क्रमांक एफ 1 (02)विद्या सम्बल/आकाशि/गे.फै./दिशा निर्देश/21-00638/पार्ट-1/ राजकाज नम्बर 8029676 दिनांक 21 जून, 2024 एवं वित्त विभाग द्वारा क्रमांक पह (2) वित्त/सा.वि.ले.नि./2021 दिनांक 30.03.2021 एवं 07.08.2023 की अनुपालना में निम्नांकित राजसेस महाविद्यालयों की अध्ययन व्यवस्था हेतु बी.ए. पार्ट प्रथम (सेमेस्टर- प्रथम) एवं बी. ए. पार्ट द्वितीय (सेमेस्टर- तृतीय) व बी.ए. पार्ट तृतीय तथा स्नात्कोत्तर के अध्यापन कार्य के लिए राज्य सरकार द्वारा घोषित "विद्या संबल- योजना के अन्तर्गत 24 सप्ताह अथवा 28 फरवरी 2025 जो भी पहले हो हेतु (अधिकतम 14 साप्ताहिक घण्टे के अनुसार) गेस्ट फैकल्टी योजना के अन्तर्गत 800/- रूपये प्रति कालांश मानदेय के आधार पर गेस्ट फैकल्टी (पूर्णतया अस्थाई) के रूप में राजसेस के अधीन संचालित निम्न महाविद्यालयों के सम्मुख अंकित विषयों में अध्यापन कार्य कराने हेतु दिनांक 06 जुलाई, 2024 सायं 3.00 बजे तक ऑफलाईन माध्यम से नोडल, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, करौली मे आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं।

अध्यापन कार्य कोटा विश्वविद्यालय कोटा द्वारा निर्धारित प्रथम व तृतीय सेमेस्टर व बी.ए. पार्ट तृतीय एवं स्नात्कोत्तर के लिए किया जाना है।

विषय	राजकीय कन्या महाविद्यालय, करौली	राजकीय कन्या महाविद्यालय, कटकड	राजकीय महाविद्यालय, मासलपुर
	पद	पद	पद
इतिहास	1	1	–
भूगोल	1	1	1
गणित	1	–	–
भौतिकशास्त्र	1	–	–
अर्थशास्त्र	–	–	1
हिन्दी साहित्य	–	1	1
अंग्रेजी साहित्य	–	1	1
राजनीतिशास्त्र	1	1	–
लोक प्रशासन	–	1	–
गृह विज्ञान	–	1	–

शेखावाटी में मूसलाधार बारिश, सड़कें लबालब

चूरू में 51.4 एमएम बारिश होने से किसान खुश नजर आये

चूरू में बारिश के बाद निकासी के अभाव में पानी सड़कों पर ही एकत्रित हो गया।

चूरू, (कासं)। शेखावाटी में रविवार को मूसलाधार बारिश हुई जिससे किसानों के चेहरे चमकने लगे हैं। किसानों ने खेतों की बुवाई का काम शुरू कर रखा है। मौसम विभाग के अनुसार चूरू में 51.4 एमएम बारिश हुई है। आज अधिकतम तापमान 40.2 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 29.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ है। पिछले दिवस की तुलना में अधिकतम तापमान में 0.3 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। साथ ही न्यूनतम तापमान में भी 1.2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है।

जानकारी के अनुसार सवेरे से ही सूर्य देवता ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए थे। दिनभर उमस रही, शाम ढलने से पहले यहां मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। बारिश के बाद हमेशा की तरह चूरू शहर की मुख्य सड़कें पानी से लबालब हो गई। यहां आकाशवाणी रोड के पास सीएम बहड़ मार्ग पानी की निकासी के अभाव में तालाब बन गया। यहां सड़क पर पड़े गड्ढों में कई जने गिरकर घायल हो गए। प्रशासन का इस ओर बिलकुल भी ध्यान नहीं है।

सभापति, आयुक्त, विधायक एवं अन्य उच्च अधिकारियों को तो सिर्फ गाजसर गिनाणी ही दिखाई देती है। जो भी आता है, भागकर गाजसर गिनाणी का निरीक्षण करके फोटो खींचवाकर खुश हो जाता है। शहर की दयनीय स्थिति के बारे में कोई कुछ नहीं बोल रहा है। नगरपरिषद वाले पानी निकासी के नाम पर डीजल खुद ही पी जाते हैं। कोई कहने-सुनने वाला भी नहीं है। एकदम से मौज ही मौज है।

झमाझम बारिश से गंगापुर सिटी शहर तरबतर हुआ

मानसून की पहली बरसात में दुकानों व घरों में पानी भर गया

गंगापुर सिटी में बरसात होने से सडकों पर पानी भर गया।

गंगापुर सिटी, (निसं)। जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में मानसून की पूरी तरह से एंट्री हो चुकी है। रविवार दोपहर को एकाएक मौसम बदल गया और आधे घंटे जोरदार बारिश हुई। बारिश के बाद सड़कों पर पानी भर गया। नया बजार दरिया गया। वहीं बच्चो ने पानी में तैर कर स्वीनिंग पूल का आनन्द लिया। वहीं मानसून की पहली बरसात में दुकानों व घरों में पानी भर गया।

बारिश के बाद ठंडी हवाएं चलने से तापमान में गिरावट आने से लोगों को भीषण गर्मी और उमस से राहत मिली। बारिश से किसानों के चेहरे खिल उठे और किसान खरीफ फसलों की बुआई में जुट गए हैं। रविवार को आसमान में कई बार बादल छाए, लेकिन बारिश नहीं हुई। दोपहर करीब साढे तीन बजे मौसम बदल गया और आसमान में काली घटाएं छा गई। इसके बाद देखते ही देखते बारिश शुरू हो गई। पहले धीमी गति से बूंदाबांदी होती रही, लेकिन इसके बाद में तेज बारिश होनी शुरू हो गई। इसके बाद कभी धीमी, कभी तेज गति से बारिश का दौर रुक-रुक कर चलता रहा। बारिश के बाद सड़कों पर पानी बह निकला। बारिश के दौरान बिजलियां कड़कने लगी। साथ ही आसमान में बादल गरजने लगे। बारिश के बाद ठंडी हवाएं चलने लगी और इसके बाद तापमान में गिरावट आ गई, जिससे लोगों को दिनभर पड़ रही तेज गर्मी और उमस से काफी राहत मिली।

प्री-डीएलएड परीक्षा में डमी परीक्षार्थी को पकड़ा

डमी परीक्षार्थी का अंगुठा निशान व फोटो का मिलान नहीं होने से पुलिस को सूचना दी

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के उम्मेदाबाद ग्राम के राउमा विद्यालय में रविवार को प्री बीएसटीसी परीक्षा में एक डमी परीक्षार्थी को पकड़ा गया है।

जालोर जिले के प्री-बीएसटीसी परीक्षा-2024 में परीक्षा केंद्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उम्मेदाबाद में परीक्षार्थी रोल नंबर 16402916 भगवती पुत्री मोहनलाल बिश्नोई निवासी दांतीवास पुलिस थाना भीनमाल जिला जालोर के स्थान पर डमी परीक्षार्थी निरमा कुमारी पुत्री आसुराम विश्नोई निवासी भालनी पुलिस थाना बागोड़ा जिला सांचौर का बायोमेट्रिक पहचान के लिए परीक्षण किया गया तो डमी परीक्षार्थी का अंगुठा निशान व फोटो का मिलान नहीं होने से केंद्र अधीक्षक प्रभारी मंसाराम राणा केंद्र अधीक्षक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उम्मेदाबाद द्वारा पुलिस को सूचना दी गई।

केंद्र अधीक्षक की रिपोर्ट पर डमी परीक्षार्थी निरमा कुमारी द्वारा मूल परीक्षार्थी भगवती कुमारी के स्थान पर परीक्षा देने पर उक्त परीक्षार्थी निरमा कुमारी को गिरफ्तार कर उसके विरूद्ध राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम 1992) में मुकदमा दर्ज कर अग्रीम अनुसंधान जारी है।

जालोर शहर के निकट उम्मेदाबाद राउमा विद्यालय में पुलिस ने डमी महिला परीक्षार्थी को पकड़ा।

मंदिर के पास बोरे में नाबालिग का शव मिला

टी-20 वर्ल्ड कप में इंडिया की जीत का जश्न मनाने निकला था नाबालिग

जोधपुर, (कासं)। वर्ल्ड कप में इंडिया की जीत पर घर से पटाखे चलाने निकले नाबालिग का शव रविवार सुबह बोरे में मिला। हाईवे के किनारे झाड़ियों में मंदिर के पास ग्रामीणों ने लावारिस पड़े बोरे को खोलकर देखा तो अंदर शव था। परिजनों का दावा है कि नाबालिग की हत्या की गई है और शव पर करंट लगने के निशान भी हैं। ऐसे में ग्रामीणों और परिजनों ने दोपहर हाईवे जाम कर दिया गया और आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। मामला जोधपुर के राजीव गांधी नगर थाना इलाके के केरू गांव का है। ग्रामीणों के विरोध को देखते हुए मौके पर जोधपुर वेस्ट के एडीसीपी निशांत भारद्वाज और राजीव गांधी नगर थाना प्रभारी देवकीचंद ढाका मौके पर पहुंचे। यहां एफएसएल की टीम को बुलाया गया है। हत्या की आशंका जताते हुए ग्रामीणों ने हाईवे पर प्रदर्शन कर रास्ता रोक दिया।

- **परिजनों के अनुसार नाबालिग के शव पर करंट लगने के निशान हैं, ऐसे में उसकी हत्या की गई है**
- **परिजन और ग्रामीणों ने शव के साथ हाईवे किनारे बैठकर आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की**

थानाधिकारी देवकीचंद ढाका ने बताया कि रविवार सुबह ग्रामीणों को जोधपुर से जैसलमेर की ओर जा रहे हाईवे पर बाबा रामदेव मंदिर के पास झाड़ियों में संदिग्ध बोरा नजर आया। इसे खोलकर देखा तो अंदर शव था। इसकी पहचान केरू गांव निवासी चेतनपुरी पुत्र वीरमपुरी (15) के रूप में हुई है। पिता वीरमपुरी की रिपोर्ट के अनुसार, चेतन रात को भारत और साउथ अफ्रीका का मैच देख रहा था। इसके बाद भारत के मैच जीत जाने पर पूरा परिवार नीचे सोने चला गया। वह घर से भारत की जीत का जश्न मनाने की कहकर निकला था। उसने कहा था कि कुछ देर में दोस्तों के साथ पटाखे चला कर लौट आएगा। इसके बाद सुबह 10 बजे घर से 1 किमी दूर 12 मील के पास हाईवे पर मंदिर की झाड़ियों में शव मिला। परिजनों के अनुसार चेतन के शव पर करंट लगने के निशान हैं। ऐसे में उसकी हत्या की गई है। इसके बाद परिजन और ग्रामीण शव के साथ हाईवे किनारे बैठ गए और आरोपियों की मांग करने लगे। सुबह से ग्रामीण आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े हैं। पुलिस अधिकारी ग्रामीणों से बात कर मामला शांत कराने की कोशिश कर रहे हैं।

नाबालिग की मौत के बाद ग्रामीणों का आक्रोश देखते हुए चार थानों का पुलिस जाब्ता तैनात किया गया है। मौके पर करीब 100 पुलिसकर्मी तैनात हैं। साथ ही एसीपी अनिल कुमार, राजीव गांधी नगर थाना देवीचंद ढाका, देव नगर थाना सीआई भूटाराम, प्रताप नगर सदर थाना सीआई सतीश कुमार और सूरसागर थाना पुलिस का जाब्ता मौके पर मौजूद हैं।

करौली में हुई झमाझम बारिश से निचली बस्तियों में पानी भरा

करौली, (निसं)। करौली में रविवार दोपहर को हुई बारिश के बाद मौसम सुहावना हो गया। बारिश से लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली। प्रात:काल से पड़ रही गर्मी और उमस से परेशानी के बीच रविवार दोपहर अचानक मौसम का मिजाज बदल गया और आसमान में काले घने बादल छा गए, जिसके बाद करीब आधा घंटे तक झमाझम बारिश हुई जिससे सड़कों पर पानी बह निकला।

उमस व गर्मी से बचाव के लिए लोगों ने बारिश के पानी में नहाकर आनंद लिया। करीब आधे घंटे तक हुई बारिश से लोगों को गर्मी व उमस से राहत मिली। वहीं नदी, बांध, तलाबों में भी पानी की आवक हुई। झमाझम बारिश से क्षेत्र के किसानों के चेहरे खिल उठे। वहीं जिला मुख्यालय पर आपदा प्रबंधन की पोल खुलकर सामने आ गई। शहर के बीच से होकर गुजर रहे नेशनल हाईवे की सड़क पर जगह-जगह पानी भराव हो गया। वहीं मेग्जीन तिराहा स्थित सड़क पर पानी निकासी नहीं होने के कारण पानी भर गया जिसके चलते दोनों तरफ वाहनों की कतारें लग गई और जाम में फंसे लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा शहर की कई निचली बस्तियों में पानी भर गया। वहीं शहर की विवेक विहार कॉलोनी में बरसाती पानी की निकासी नहीं होने के कारण रविवार को तेज बारिश से करीब 60 से 70 मकानों के रास्ते पानी से लबालब होने से लोगों का आवागमन कठिनाई भरा हो गया। वहीं सायनाथ खिडकिया बाहर नाला अवरूद्ध होने से पानी निकासी नहीं हो पाई और सड़कों व घरों की चौखटों तक पानी भर गया जिसके चलते लोग पूर्व में हुई बाढ़ जैसी घटना को याद कर भयभीत से नजर आये।

करौली में बारिश से हाईवे सड़क पर भरे पानी में वाहनों के फंसने से जाम लग गया।

मकराना में मूसलाधार बारिश हुई

मकराना, (निसं)। शहर में रात्रि को मूसलाधार बारिश हुई, जिससे शहर के सड़कें पानी से तरबतर हो गई। मानसून की पहली अच्छी बारिश के बाद यहां सभी सड़कों पर जैसे नदियां बह निकली।

शहर के हॉस्पिटल, नगर परिषद, सरकारी स्कूल,पंचायत समिति और न्यायालय के सामने कि सड़कों सहित गुलजारपुरा, इकबालपुरा, भाकरों की ढाणी, नदी मौहल्ला, अली चेंबर, कन्या पाठशाला गली की तरफ सड़क से दो फीट ऊपर तक पानी बह रहा था जबकि अस्पताल रोड पर तीन फीट ऊपर तक पानी भरा हुआ था। अस्पताल रोड पर कुछ घरों और दुकानों में पानी चला गया। बारिश के बाद ठंडी हवाएं चलने लगी और इसके बाद तापमान में गिरावट आ गई, जिससे लोगों को दिनभर पड़ रही तेज गर्मी और उमस से काफी राहत मिली।

बजरी खनन को लेकर दो गुट आपस में भिड़े

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर जिले में बजरी माफिया इन दिनों पुलिस को खुली चुनौती दे रहे हैं। ताजा मामला बिलाड़ा थाना क्षेत्र के भावी गांव की सरहद का है, जहां बजरी खनन को लेकर आपसी रंजिश के तहत दो गुट आपस में भिड़ गए। इस दौरान कई वाहनों में तोड़फोड़ की गई। वहीं एक युवक चोटिल हो गया जिसे इलाज के लिए जोधपुर रेफर किया गया।

सूचना मिलने के बाद बिलाड़ा थाना पुलिस और बिलाड़ा डीवाईएसपी गोमाराम जाट मौके पर पहुंचे और मामले को लेकर जानकारी ली। फिलहाल अभी तक किसी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। डीवाईएसपी गोमाराम जाट ने बताया कि आज सुबह सात बजे के करीब अवैध बजरी खनन को लेकर रंजिश के तहत दो गुट आपस में भिड़ गए। इस दौरान बोलेरो कैंपर को टक्कर मार कर क्षतिग्रस्त कर दिया गया। हादसे में एक युवक घायल हो गया जिसे इलाज के लिए जोधपुर रेफर किया गया। वहीं मामले में आरोपियों की धरपकड़ के लिए टीम भेजी गई है।

जानकारी के अनुसार बिलाड़ा सहित आसपास के क्षेत्रों में अवैध बजरी खनन को लेकर कई बार ग्रामीणों की शिकायत भी सामने आ चुकी है, लेकिन प्रभावी कार्रवाई नहीं होने की वजह से अवैध तरीके से बजरी खनन कर परिवहन करने वाले माफिया हावी हो चुके हैं। इसी के चलते कई गुट भी बन चुके हैं। इन्हीं गुटबाजी के चलते आज सड़क पर दहशत देखने को मिली। इधर घटनाक्रम को लेकर ग्रामीण दहशत में हैं।

सड़क दुर्घटना में डिस्कॉम एईएन व पत्नी की मौत

बीकानेर, (निसं)। नागौर के बाराणी गांव के पास हुए सड़क हादसे में घायल जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के सहायक अभियंता अशोक शर्मा और उनकी पत्नी की इलाज के दौरान बीकानेर में मौत हो गई। दोनों का शव जोधपुर पहुंचाया जा रहा है। शर्मा की बेटियों का इलाज भी बीकानेर में ही चल रहा है।

नागौर से अपने परिवार के साथ शर्मा शनिवार को बीकानेर आ रहे थे। बाराणी गांव के पास सामने से आ रही कार से टक्कर हो गई, जिसमें चार जने घायल हो गए। सहायक अभियंता अशोक और उनकी पत्नी सुमन आगे बैठे थे। उन्हें गंभीर चोट आने पर बीकानेर के पीबीएम अस्पताल रैफर कर दिया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। बाद में नागौर में भर्ती बेटी मिनल (23) और मानसी (18) को भी बाद में बीकानेर रैफर कर दिया गया। बेटियों का इलाज अभी भी बीकानेर में चल रहा है, जबकि पति-पत्नी की इलाज के दौरान मौत हो गई। अशोक की पुत्री मीनल (23) व मानसी (18) घायल है और इलाज चल रहा है। उधर, जांगलू गांव निवासी सामने वाली कार चालक मनोहरसिंह भी हादसे में गंभीर घायल हो गया। उसका भी इलाज चल रहा है। वह रिश्तेदार की शादी के कार्ड बांटने जा रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि गाड़ियां भिड़ने से धमाका हुआ तो दुर्घटना के दौरान आसपास मौजूद लोगों ने घायलों को गाड़ियों से बाहर निकाला। इसके बाद राहगीरों की मदद से लोगों ने एंबुलेंस से घायलों को नागौर के जवाहरलाल नेहरू राजकीय चिकित्सालय पहुंचाया।

नेत्रहीन दिव्यांग अध्यापक को मिला शिक्षा मंत्री का साथ

जालोर, (कासं)। जालोर निवासी मंसाराम देवासी के लिए शिक्षा मंत्री मदन दिलावर का जालोर दौरा वरदान साबित हुआ। मंत्री दिलावर ने दिव्यांग अध्यापक की मांग पर उसे तत्काल मनचाही जगह लगाने के आदेश जारी कर दिए।

जानकारी के अनुसार शिक्षा मंत्री दिलावर एक दिवसीय दौरे पर रविवार को जालोर पहुंचे थे। यहां सर्किट हाउस में लोगों की समस्या सुनने के दौरान मंसाराम देवासी पुत्र बेसराराम देवासी, निवासी सेवडी, तहसील बागोड़ा, जिला सांचौर, जो वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय शरणार्थियों की डांडी, धनसा, पंचायत समिति, भीनमाल में तृतीय श्रेणी के अध्यापक पद पर कार्यरत है, जो कि मंत्री से मिला। मंसारम जो कि आंखों से 100 प्रतिशत नेत्रहीन दिव्यांग है। इनका विद्यालय इनके गांव से 60 किलोमीटर दूर है, जिससे वहां आने जाने में इन्हें परेशानी होती है। इस पर मंत्री मदन दिलावर ने तत्काल मौके पर ही अध्यापक मंसाराम का स्थानांतरण तुरंत इच्छित ग्राम सेवडी के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मामानाडी सेवडी पंचायत समिति में करने के आदेश निदेशक प्राथमिक शिक्षा सीताराम जाट को दिए। मंत्री ने मजाक में इतिहास के अध्यापक मंसाराम से अकबर के नाना का नाम पूछा। इसके बाद आदेश की प्रति उन्हें सौंपी। आदेश पाकर नेत्रहीन दिव्यांग खुश नजर आया।

जालोर में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने नेत्रहीन दिव्यांग मंसाराम को इच्छित जगह पर स्थानांतरण आदेश प्रदान किया।

- **मंत्री दिलावर ने दिव्यांग अध्यापक की मांग पर मनचाही जगह लगाने के आदेश जारी किये**

बाल नशा मुक्ति की रोकथाम के लिए झुंझुनूं जिले को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला

नशीली दवाओं के सेवन को रोकने के लिए जिला कलेक्टर ने प्रभावी कदम उठाए और उसका परिणाम रहा कि झुंझुनूं जिला पूरे देश में अव्वल रहा

झुंझुनूं, (निसं)। जिले को बाल नशा मुक्ति की प्रभावी रोकथाम के लिए राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रविवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल की ओर से मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंबालाल मीणा एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक डॉ. पवन पूनियां ने यह सम्मान प्राप्त किया।

- **बाल अधिकार संरक्षण आयोग देश में ''एक युद्ध नशे के विरुद्ध'' अभियान चलाकर नाबालिग बच्चों को नशीली दवाओं के सेवन से बचा रहा है**

उल्लेखनीय है कि बाल अधिकार संरक्षण आयोग देश में "एक युद्ध नशे के विरुद्ध" अभियान चलाकर नाबालिग बच्चों को नशीली दवाओं के सेवन से बचा रहा है। नशीली दवाओं के सेवन को रोकने के लिए जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल ने प्रभावी कदम उठाए और उसका परिणाम रहा कि नशीली दवाओं की रोकथाम और जागरूकता के मामले में जिला पूरे देश में अव्वल रहा।

डॉ. पूनियां ने बताया कि जॉइंट एक्शन प्लान ऑन प्रीवेंशन ऑफ़ ड्रग्स एंड सब्सटेंस एब्यूज एंड इलिसिट ट्रैफकिंग के क्षेत्र में जिले द्वारा ज्वाइंट एक्शन प्लान तैयार करने, कलेक्टर द्वारा ज्वाइंट एक्शन प्लान की नियमित मॉनिटरिंग, सभी विभागों का लक्ष्य निर्धारित करना तथा उनकी अनुपालना करवाने, कोटपा एक्ट और जेजे एक्ट की अनुपालना, शैक्षिणक संस्थाओं में नशा मुक्ति के लिए जन जागरूकता पैदा करने, शेड्यूल एच और एक्स की दवाओं का विक्रय करने वाली दुकानों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाने, शैक्षिणक संस्थाओं में चाइल्ड राइट क्लब एवं प्रहरी क्लब का गठन करवाने, जिले की सभी संस्थाओं से 9 इंडिकेटर की पालन करवाने तथा बच्चों में नशे की प्रवृत्ति को रोकने के लिए समय-समय पर जन जागरूकता अभियान संचालित करने में झुंझुनूं ने बेहतरीन काम किया।

tional Commission for
tection of Child Rights
cotics Control Bureau
RESERVED

नई दिल्ली में गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंबालाल मीणा एवं सामाजिक न्याय एवं अधि. विभाग के उप निदेशक डॉ. पवन पूनियां को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

सेहत का रिकॉर्ड ऑनलाइन उपलब्ध होने से मिलेगी बेहतर चिकित्सा सुविधा : भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर चिकित्सा विभाग के तीन अभियानों का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर भी मौजूद थे।

- **'प्रदेशवासियों के सेहतमंद होने से ही साकार होगा स्वस्थ राजस्थान का संकल्प'**

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेशवासियों को उच्च गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाना राज्य सरकार की प्रतिबद्धता है। इसके लिए आवश्यक है कि राज्य का प्रत्येक नागरिक सेहतमंद हो, तभी 'स्वस्थ राजस्थान' का संकल्प साकार होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेशवासियों की सेहत का रिकॉर्ड ऑनलाइन उपलब्ध होने से उन्हें त्वरित और बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध होंगी और अनावश्यक स्वास्थ्य जांचों एवं दवाओं पर होने वाले खर्च से भी बचा जा सकेगा। शर्मा ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर चिकित्सा विभाग के तीन अभियानों का शुभारम्भ किया। उन्होंने पोलियो दिवस के अवसर पर 5 वर्ष तक के बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक पिलाकर प्रदेश में 'राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान' की शुरूआत की। उन्होंने 'स्टॉप डायरिया अभियान-2024' एवं आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत 'आभा आईडी बनाओ' अभियान का भी शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शर्मा तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने तीनों अभियानों के पोस्टर्स का विमोचन कर लाभार्थियों को आभा आईडी कार्ड प्रदान किए तथा बच्चों को ओआरएस के पैकेट एवं जिंक की गोलियां बांटी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रदेश के 50 जिलों में राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान के तहत 5 वर्ष तक की आयु के लगभग 1.07 करोड़ बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य है। इसके लिए 61 हजार 500 से अधिक बूथ बनाए गए हैं, जिन पर 77 हजार 500 से अधिक टीमें पल्स पोलियो की खुराक पिलाएंगी। अभियान के दौरान रविवार के अलावा अगले 2 दिन घर-घर जाकर भी दवा पिलाई जाएगी।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश में निचले स्तर तक ऐसा सिस्टम विकसित किया जाए, जिससे हर बच्चे के जन्म के साथ ही उसका एक यूनिक हैल्थ आईडी नम्बर जनरेट हो जाए और भविष्य में उसके स्वास्थ्य से संबंधित हर जानकारी उस आईडी के तहत दर्ज की जाए। शर्मा ने कहा कि मरीज के स्वास्थ्य का पुराना रिकॉर्ड उपलब्ध होने से चिकित्सकों को उनका इलाज करने में बहुत सहूलियत होगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने बताया कि राज्य में दस्त संबंधी बीमारियों की प्रभावी रोकथाम के लिए 1 जुलाई से 31 अगस्त तक स्टॉप डायरिया अभियान चलाया जाएगा। अभियान के तहत आशा कार्यकर्ता घर-घर जाकर 5 साल तक की आयु के बच्चों को दस्त से बचाव हेतु ओआरएस पैकेट एवं जिंक की गोलियां उपलब्ध करवाएंगी। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त समस्त चिकित्सा संस्थानों और आंगनबाड़ी केन्द्रों पर ओआरएस जिंक कॉर्नर संचालित किए जाएंगे जहां आमजन को दस्त से बचाव और उपचार की जानकारी दी जाएगी। साथ ही, स्वच्छता संबंधी गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

भारत सरकार द्वारा आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत हैल्थ अकाउंट यानी आभा आईडी बनाई जा रही है। इस 14 अंकों की आईडी की सहायता से आमजन स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं से अपने पुराने स्वास्थ्य रिकॉर्ड साझा कर सकेंगे। इससे उनके बेहतर उपचार में मदद मिलेगी। चिकित्सा विभाग की ओर से यह अभियान 2 माह तक चलाया जाएगा।

कार्यक्रम में एनएचएम के मिशन निदेशक डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी, अतिरिक्त मिशन निदेशक अरूण गर्ग, निदेशक जन स्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश माथुर, सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी, अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी एवं निदेशक आरसीएच सुनीत सिंह राणावत सहित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

सांगानेर में उजाड़े परिवारों के पुनर्वास की व्यवस्था करे सरकार : खाचरियावास

जयपुर। पूर्व मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि सांगानेर में 800 से ज्यादा परिवारों को उजाड़ने का काम राज्य की भाजपा सरकार ने किया है। जबकि राज्य में पहले से ही कांग्रेस सरकार के समय से ही पुनर्वास पॉलिसी लागू की गई है। किसी भी व्यक्ति को उजाड़ने से पहले उसका पुनर्वास किया जाता है। कांग्रेस सरकार के दो कार्यकाल में मेट्रो योजना को लेकर सैकड़ों लोगों के घर और दुकान मेट्रो प्रोजेक्ट के बीच में आ रही थी इन सब लोगों को इनकी कीमत से ज्यादा करोड़ों रुपए का पुनर्वास मुआवजा देकर इन्हें विश्वास में लेकर उनके खुद के द्वारा कब्जे हटाए गए। जयपुर में सांगानेर में इतनी बड़ी तोड़फोड़ की कार्रवाई हुई किसी भी व्यक्ति का पुनर्वास मुआवजा नहीं दिया गया।

कांग्रेस की जनकल्याणकारी योजनाएं आज भी प्रासंगिक : जूली

जयपुर। विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने मुख्यमंत्री द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन में की जाने वाली वृद्धि की घोषणा को जनता के साथ छलावा बताया है।

जूली ने कहा कि यह प्रावधान तो पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा पूर्व में ही किया जा चुका है। कांग्रेस हमेशा से गरीब, पिछड़े और जरूरतमंद के हक-हकूक की रक्षा और उनके सम्मान के लिए संवेदनशील रही है। उन्होंने कहा की पूर्व में सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत दी जा रही 500 रूपये की सामाजिक सुरक्षा पेंशन की सहूलियतों को कांग्रेस सरकार ने ही बढ़ाया है, ताकि अधिक से अधिक जरूरतमंदों को इसका लाभ मिल सके।

जूली ने कहा कि हमारी संवेदनशील सरकार ने ही वर्ष 2019 में 6 वर्षों के बाद पेंशन राशि में वृद्धि की थी।

उन्होंने कहा कि लंबे समय तक पेंशन राशि नहीं बढ़ने के कारण पेंशनर्स को होने वाली समस्या के निराकरण की दृष्टि से पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा पेंशन राशि में हर वर्ष 15 फीसदी वृद्धि किए जाने का प्रावधान किया गया, जिसका श्रेय मुख्यमंत्री जी झुंझुनूं में ले रहे है।

जूली ने कहा कि हम कर्म में विश्वास करते हैं झूठा भाषण या छलावा नहीं करते।

जूली ने मुख्यमंत्री को इंगित करते हुए कहा कि जिन योजनाओ का श्रेय आप और आपकी पार्टी लेने का प्रयास कर रहे हैं, वो सब तो राजस्थान की पूर्ववर्ती गहलोत सरकार की देन है। आपने इसमें नया क्या किया है?

धर्म राजनीति को चलाएं तो देश आगे बढ़ेगा : स्वामी निश्चलानंद

जयपुर । जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती ने कहा कि सभी के पूर्वज सनातनी वैदिक आर्य हिंदू थे। ईसा मसीह मोहम्मद साहब के पूर्वज हिंदू थे। हमारे वेद शास्त्र पुराण ज्ञान विज्ञान का विश्व में कहीं खंडन नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि भारत हिंदू राष्ट्र घोषित हो। पक्षपात विहीन शोषण विहीन मुक्त धर्म नियंत्रित शासन तंत्र की स्थापना हो।

शंकराचार्य ने कहा कि ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से देश और विदेश में ऐसे लोगों का जन्म हो चुका है। जो स्वस्थ क्रांति को घोषित करेंगे और हिंदू राष्ट्र बनेगा मुझे ऐसा बिल्कुल भी संदेह नहीं क्योंकि मेरे जीवन में असफलता का संदेश नहीं है। भगवान सूर्य का आशीर्वाद है आजकल भारत देश में क्या हो रहा है कि आतंकवादी को नकली शंकराचार्य बनाकर घुमाया जा रहा है। इसका उत्कर्ष कैसे हो सकता है जिसमें हुर्रियत के नेता के एजेंट को नकली शंकराचार्य बनकर घुमाया जा रहा है उसे थाईलैंड के कार्यालय पर शरण दी जा रही है। पुरी शंकराचार्य ने बताया कि क्या भारत के शासन तंत्र में वह क्षमता है जो मेरे ज्ञान विज्ञान का उपयोग कर सके जबकि दक्षिण कोरिया के विद्वान गणित के विषय में मेरा परामर्श लेकर कठिन बुद्धि को सुलझाया। विश्व बैंक के अर्थशास्त्र की समस्या का हल किया। लेकिन भारत के शासन तंत्र में क्षमता ही नहीं कि मेरे ज्ञान विज्ञान का उपयोग कर सके। शंकराचार्य ने कहा कि सभी के पूर्वक सनातनी वैदिक आर्य हिंदू थे। ईसा मसीह मोहम्मद साहब के पूर्वज हिंदू थे एवं मक्का में मक्केश्वर महादेव बताया हमारे शास्त्र पुराण ज्ञान विज्ञान विश्व में कहीं खंडन नहीं हो सकता इसलिए भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने से कोई रोक नहीं सकता। शंकराचार्य ने कहा कि धर्म राजनीति को चलाएं राजनीति को चलाएं तो देश को आगे बढ़ाया जा सकता है। जिस देश को और शक्तिशाली बनाया जा सके विश्व गुरु बनाया जा सके। इस अवसर पर कृषि मंत्री डॉ किरोड़ी लाल मीना ने भी पूज्य शंकराचार्य का आशीर्वाद लिया।

सुरीले गीत गूंजे

जयपुर। शास्त्रीनगर स्थित संगीत आश्रम संस्थान की ओर से 30 जून, रविवार को संस्थान परिसर में बॉलीवुड के लीजेंडरी म्यूजिक डायरेक्टर मदन मोहन की याद में वो भूली दास्तां शीर्षक से सांस्कृतिक संध्या संजोई गई।

लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ ने जयपुर की कमान छोड़ी

जयपुर, (का.सं.)। लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ 30 जून को जयपुर स्थित सप्त शक्ति कमांड की कमान का कार्यकाल पूरा करने के बाद पुणे स्थित दक्षिणी कमान का कार्यभार संभालेंगे। इस अवसर पर जनरल ऑफिसर ने जयपुर मिलिट्री स्टेशन के प्रेरणा स्थल पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ ने 1 नवंबर 2023 को सप्त शक्ति कमांड की बागडोर संभाली थी। उनके कार्यकाल के दौरान, सप्त शक्ति कमांड ने नवीनतम प्रौद्योगिकियों को अपनाया, ऑपरेशनल तैयारी को बढ़ाने के लिए नवीन तकनीक तथा उच्च स्तर का सामंजस्य हासिल किया, रणनीति और नवीन प्रक्रियाओं को विकसित किया और एक आधुनिक, घातक और मिशन के लिए तैयार सैन्य बल विकसित किया।

कमान का कार्यकाल समाप्त होने पर, लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ ने सप्त शक्ति कमांड के सभी रैंकों, वीर नारी, वेटेरन्स, डिफेन्स सिविलियन और उनके परिवारों को अपना आभार और हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सभी रैंकों से सप्त शक्ति कमांड के मोटो सर्वदा विजयी को जीने और समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आव्हान किया।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने "मन की बात" कार्यक्रम को सुना

जयपुर । भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने आज प्रदेश कार्यालय में भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के "मन की बात" कार्यक्रम का 111वां संस्करण सुना।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का "मन की बात कार्यक्रम" जन-जन के मन की बात है। इसके माध्यम से प्रधानमंत्री सभी के मन की बात करते है। इसमें हमारे देश की संस्कृति और संस्कृत भाषा की भी चर्चा की गई। बताया गया कि संस्कृत भाषा जो देश में ही नहीं दुनिया के अन्य देशों में बोली जाती है।

भाजपा ने उपचुनाव वाली सीटों की बारीकी से ली जानकारी

- **भाजपा हर चुनाव को मानती है महत्वपूर्ण, उपचुनावों की रणनीति पर हुई चर्चा, सभी सीटों पर खिलेगा कमल का फूल : सीपी जोशी**

जयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी की अध्यक्षता एवं प्रदेश सह प्रभारी विजया राहटकर की उपस्थिति में आज भाजपा प्रदेश कार्यालय में राजस्थान के 5 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव की आगामी रणनीति को लेकर बैठक आयोजित हुई। बैठक में खींवसर, दौसा, देवली उनियारा, झुंझुनूं और चौरासी विधानसभा के प्रभारी, पूर्व प्रत्याशी, जिले के मंत्री, विधायक और पार्टी के जिला पदाधिकारी उपस्थित रहें।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि भाजपा हर चुनाव को महत्वपूर्ण मानती है फिर चाहे वो लोकसभा हो, विधानसभा हो या फिर उपचुनाव हो। प्रदेश की पांचों विधानसभाओं पर उप चुनाव में भाजपा जीत दर्ज करवाएगी और कमल का फूल खिलेगा। ऐसे में पांचों सीटों पर चुनावी रणनीति के तहत दिनभर अलग अलग विधानसभा सीटों पर चर्चा की गई। प्रत्येक विधानसभा के प्रभारी पदाधिकारियों के साथ जीत के लिए रणनीति बनाई गई है। भाजपा की प्रदेश सह प्रभारी विजया राहटकर ने कहा कि भाजपा प्रदेश के उपचुनावों की तैयारी में जुट गई है और पार्टी की ओर से बहुत ही बारीकी से इसके लिए काम किया है। ऐसे में मुझे पूर्ण विश्वास है कि भाजपा उपचुनावों में सभी सीटों पर जीत दर्ज करेगी। देश के लोगों का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अटूट विश्वास है। भाजपा की डबल इंजन सरकार ने प्रदेश में 7 माह के अल्पकार्य में जनहित के कई ऐतिहासिक कार्य किए है।

कार की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत

जयपुर। बजाज नगर इलाके में शनिवार देर रात को तेज रफ्तार कार की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार हादसा शनिवार-रविवार क मध्यरात्रि दो बजे थाना इलाके में स्थित महावीर रबड़ी स्थित पेट्रोल पंप के पास का हुआ है। पुलिस ने रविवार को शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों के हवाले कर दिया गया। वहीं इस संबंध में मृतक के भाई ने कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। मामले की जांच पडताल दुर्घटना थाना पूर्व कर रहा है। पुलिस ने बताया कि हादसे में प्यारेलाल नेहरा (58) की मौत हो गई है।

फिरौती वसूलने के लिए दोस्त ने ही युवक के अपहरण की साजिश रची

पीड़ित युवक गौरव टावर घूमने गया था, जहां 4-5 बदमाश मारपीट कर उसे कार में डाल ले गए

- **पुलिस ने बदमाशों को पीछा कर दौसा-लालसोट हाईवे पर युवक को मुक्त कराया**
- **पुलिस ने एक बदमाश को गिरफ्तार कर लिया, जबकि बाकी तीन फरार होने में कामयाब हो गए।**

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजधानी के जवाहर सर्किल इलाके में गौरव टावर घूमने आए युवक का अपहरण करने के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया। युवक का उसके ही दोस्त ने 4 अन्य युवकों के साथ मिलकर अपहरण किया और 7 लाख रुपए की फिरौती वसूलने का प्लान बनाया था। आरोपी जानता था कि युवक क्रिप्टो करेंसी का काम करता है। ऐसे में अगर उसे धमकाया तो वह रुपयों का बंदोबस्त कर देगा।

पीड़ित युवक की मोबाइल लोकेशन के आधार पर पुलिस आरोपियों तक पहुंच गई। आरोपियों ने पुलिस को आते देखा तो कार के बाहर खड़े अपने ही साथी को टक्कर मारकर भाग निकले। पुलिस ने बदमाशों का पीछा कर किडनैप हुए युवक को छुड़वा लिया। हालांकि आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकले। पुलिस ने कार की टक्कर से घायल हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और उसका इलाज करवाया। फिलहाल पुलिस उससे पूछताछ में जुटी है। एसीपी मालवीय नगर आदित्य पूनिया ने बताया कि राम विहार सांगानेर निवासी नवराज जैन ने 29 जून को भाई के अपहरण का मामला दर्ज करवाया था। नवराज ने बताया कि 28 जून की शाम उसका भाई मनु जैन (26) मालवीय नगर स्थित गौरव टावर घूमने गया था। इस दौरान कार सवार 4-5 बदमाशों ने उसको रोका और मारपीट कर कार में डालकर ले गए।

जवाहर सर्किल थानाधिकारी विनोद सांखला ने बताया कि बदमाशों ने चलती कार में मनु जैन से मारपीट की और डरा-धमका कर रुपयों की डिमांड की। इसके बाद उसके मोबाइल से परिचित को कॉल करवाया। मनु ने कॉल कर कहा कि मुझे कुछ लड़कों ने उठा लिया है। अगर तुमने 7 लाख रुपए नहीं दिए तो ये मुझको नहीं छोड़ेंगे। भैया इनको पैसे देकर मुझे छुड़ा लो। मनु का फोन कटने पर परिचित ने नवराज जैन को फोन किया और मनु के अपहरण की जानकारी दी।

डीसीपी ईस्ट कावेंद्र सागर ने बताया कि किडनैपिंग की घटना के बाद पुलिस की टीम मनु जैन की लोकेशन ट्रेस कर रही थी। 29 जून की देर रात मनु जैन की मोबाइल लोकेशन के आधार पर किडनैपर्स का पीछा करते हुए दौसा-लालसोट हाईवे पर पहुंची। यहां फिरौती की रकम लेने के लिए किडनैपर्स की कार हाईवे किनारे खड़ी मिली।

बदमाशों ने पुलिस को देखा तो अपनी कार दौड़ा दी। इस दौरान बदमाशों का एक साथी गाड़ी के बाहर खड़ा था। कार चलाने वाले बदमाश ने बाहर खड़े अपने साथी को ही टक्कर मार दी और कार लेकर फरार हो गए। पुलिस ने आरोपियों के घायल साथी को पकड़ लिया। इसके बाद बाकी बदमाशों का पीछा किया।

पुलिस टीम को अपने पीछे देखकर तीनों बदमाश कार में मनु जैन को छोड़ा और अंधेरे का फायदा उठाकर पैदल ही भाग निकले। पुलिस ने घायल बदमाश पीयूष मेहर (21) निवासी कुम्हेर भरतपुर हाल जैन कॉलोनी रामनगरिया जयपुर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने किडनैप युवक को सुरक्षित छुड़वा लिया और वारदात में इस्तेमाल कार को जब्त कर लिया।

आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि अपहरण की साजिश मनु के खास दोस्त ने ही रची थी। आरोपी को उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। पुलिस गिरफ्तार आरोपी से यह जानने की कोशिश कर रही है कि अन्य फरार तीन आरोपी कौन थे और इनका पीड़ित से क्या संबंध था। पुलिस फरार बदमाशों की तलाश कर रही है।

ऑटो में बैठकर लूट करने वाली गुजराती गैंग पकड़ी

- **पुलिस ने गैंग के तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है**
- **आरोपी कम रुपयों में सवारी लेकर सुनसान जगह ले जाते, लूटकर फरार हो जाते**

जयपुर । आदर्श नगर थाना पुलिस ने गुजराती गैंग के तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। यह गैंग सवारी का इंतजार करते हुए अकेले लोगों को अपना निशाना बनाते थे। पुलिस ने इन बदमाशों के पास से वारदात में प्रयोग लेने वाला एक ऑटो भी बरामद किया है। प्रारम्भिक पूछताछ में बदमाशों ने शहर में एक दर्जन से अधिक लूट की वारदात करना कबूला है।

डीसीपी ईस्ट कावेन्द्र सागर ने बताया कि ईस्ट इलाके में हो रही लूट की वारदात को देखते हुए डीएसटी और थानों की टीम को विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिये हुए थे। जिस पर पुलिस टीमों ने वारदात करने वाले इन बदमाशों को डिटेन कर पूछताछ की। जिस पर बदमाशों ने अपराध करना कबूल लिया। ये सभी बदमाश मूल रूप से गुजरात के रहने वाले हैं और जयपुर में वारदात करने के लिए कुछ समय के लिए आते हैं।

पुलिस के अनुसार, आरोपी आटो रिक्शा लेकर मुख्य मार्गों पर निकल कर सड़क पर सवारी का इंतजार करते अकेली महिला-पुरुष को कम किराया देने की कहकर अपने साथ ऑटो रिक्शा में बैठा कर रवाना होते। पीछे बैठने वाले आरोपी सवारी का धक्का देकर और बातों में लगाकर ध्यान बंटा कर जेब में रखे रुपए-पहने हुए गहने निकाल लेते। बाद में सवारी को थोड़ा आगे ले जाकर उतार देते। वहीं कई बार इन बदमाशों ने सवारी को सुनसान जगह पर ले जाकर लूटपाट करना भी कबूल किया है।

करीब 10-15 दिन पहले पुरानी चूंगी आगरा रोड से एक व्यक्ति को ऑटो में बिठाकर करीब 13 हजार रुपए निकाले, करीब 15-20 दिन पहले झोटवाड़ा पुलिया के पास एक व्यक्ति को बैठा कर उसकी जेब से 6700 रुपए निकाले। 7-8 दिन पहले पोलोविक्ट्री के पास एक व्यक्ति को ऑटो में बैठा कर सिन्धी कैंप के पास व्यक्ति की जेब से 7000 रुपए निकाले।, 5-7 दिन पहले एक व्यक्ति को छोटी चौपड़ से बैठा कर जेब से 2500 रुपए निकाले थे।, 3-4 दिन पहले एक व्यक्ति को सांगोनेरी गेट से ऑटो में बैठा कर 3000 रुपए निकाले थे।

पुलिस ने विजय सोलंकी (37) निवासी खाडी कच्ची बस्ती, कमला बाग, जिला पोरबन्दर, गुजरात हाल सुन्दर नगर, कच्ची बस्ती, विद्याधर नगर जयपुर, नवीन कुमार सोलंकी (30) निवासी पालीटाना, भावनगर, गुजरात हाल किरायेदार बापू कच्ची बस्ती, आरपीए, दूसरा चौराहा, विद्याधर नगर, जयपुर और पंकज सोलंकी उर्फ बाटली (32) निवासी पुराना बस स्टैंड के पीछे, कच्ची बस्ती, आन्नद, अहमदाबाद गुजरात, हाल किरायेदार सुन्दर नगर कच्ची बस्ती, विद्याधर नगर, जयपुर को गिरफ्तार किया है।

सिंगल यूज प्लास्टिक के साथ-साथ प्लास्टिक के गेहूं व चावल भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक : मंजू शर्मा

डॉ. हेमन्त सेठिया द्वारा लिखित पुस्तक 'एक्जिमा का इलेक्ट्रोपैथी उपचार' का विमोचन

जयपुर । सिंगल यूज प्लास्टिक के खतरे और हमारा कर्तव्य विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए जयपुर की सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक के खतरे आज की इस संगोष्ठी में विद्वानों ने बताए हैं, लेकिन इसके साथ-साथ हमें प्लास्टिक के बने धान जैसे गेहूं और चावल को भी प्रोत्साहन देने से रोकना चाहिए। क्योंकि यह भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

उन्होंने कहा कि गाय के दूध में आ रहे माइक्रो प्लास्टिक पर प्रोफेसर संजीता शर्मा द्वारा की गई रिसर्च का वर्णन करते हुए पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के पूर्व वाइस चांसलर डॉक्टर विष्णु शर्मा ने पीपीटी के द्वारा माइक्रो प्लास्टिक का गाय सहित सभी पशुओं पर पड़ रहा दुष्प्रभाव एवं उनके दूध में आ रहे हैं, माइक्रो प्लास्टिक के कारण मनुष्य को हो रहे नुकसान पर प्रकाश डाला।पंडित दीनदयाल समारोह समिति के सचिव प्रताप भानु सिंह शेखावत ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक केवल धरती, जल और पशु पक्षियों के लिए ही खतरा नहीं है बल्कि मनुष्य के लिए भी भारी संकट के रूप में सामने आ रहा है। हमें इसे अपने नित्य जीवन एवं शादी- समारोह तथा उत्सवों में बिल्कुल प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूर्व सांसद रामचरण बोहरा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करेंगे और न करने देंगे। गौ माता को बचाना है। प्लास्टिक हटाना है और सरकार के साथ हमे अपना कर्तव्य भी निभाना है। जन प्रतिनिधियों ने राज्य और केंद्र सरकार द्वारा सहयोग का आश्वासन भी दिया।इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सक हेमंत सेठिया द्वारा लिखित पुस्तक "एक्जिमा-इलेक्ट्रोपैथी उपचार" का अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के स्वतंत्र डायरेक्टर धर्मेंद्र सिंह शेखावत ने आए हुए सभी अतिथियों एवं गोष्ठी में सहभागी सभी सदस्यों को स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा जारी जूट के थेले का वितरण करते हुए प्लास्टिक का बहिष्कार करने का आव्हान किया।

बेटी से दुष्कर्म करने वाला गिरफ्तार

जयपुर । दौलतपुरा इलाके में नाबालिग बेटी के साथ दुष्कर्म करने के मामले में रविवार को आरोपी पिता को गिरफ्तार किया हैं। आरोपित पिता पिछले दो साल से बेटी के साथ दुष्कर्म कर रहा था। पीड़िता ने कई बार अपनी मां को भी इस बारे में बताया, लेकिन हमेशा बच्ची की मां उसे तेरे पिता ऐसा कुछ नहीं कर सकते कह कर चुप करा दिया करती थी। जिस पर बच्ची ने हिम्मत दिखाई और पिता की इस गंदी हरकत का वीडियो बनाया और अपनी मां को दिखाया। जिस पर पीड़ित बच्ची की मां थाने पहुंची और पिता के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। जिस पर पुलिस ने आरोपी पिता को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि 29 जून को एक महिला अपनी नाबालिग बेटी के साथ थाने पहुंची। महिला ने अपनी बेटी के साथ हुई घटना की जानकारी थाने में दी। इस मामले की गम्भीरता को देखते हुए पुलिस ने महिला और उसकी नाबालिग लड़की को अपने ऑब्जरवेशन में रख कर बच्ची से महिला कांस्टेबल और उसकी मां की मौजूदगी में जानकारी ली।

'5 हजार नर्सिंग व पैरामेडिकल कर्मियों का सेवाकाल नहीं बढ़ा'

- **राजस्थान यूटीबी कार्मिक एसोसिएशन अध्यक्ष गिरीश शर्मा ने सेवाकाल नहीं बढ़ाने पर आंदोलन की चेतावनी दी**

जयपुर । प्रदेश में ग्रामीण और मेडिकल कॉलेज स्तर पर काम कर रहे करीब पांच हजार से अधिक नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टॉफ की 30जून को सेवा समाप्त हो गई। ऐसे में सरकार की ओर से इनकी सेवा विस्तार का अभी तक कोई आदेश नहीं निकाले जाने से इन कार्मिकों में रोष व्याप्त है। माना जा रहा है कि सरकार ने इन्हें काम से निकालने की तैयारी कर ली है।

राजस्थान यूटीबी कार्मिक एसोसिएशन के अध्यक्ष गिरीश शर्मा ने बताया कि ग्रामीण और मेडिकल कॉलेज स्तर पर 5000 से भी अधिक नर्सिंग और पैरामेडिकल कर्मचारी, डॉक्टर, नर्सिंग ऑफिसर, एएनएम, लैब टेक्नीशियन, फार्मासिस्ट, लैब सहायक और रेडियोग्राफर विभिन्न पदों पर कार्य कर रहे हैं। इनकी सेवा 30 जून को समाप्त हो गई। यह कर्मचारी ग्रामीण स्तर तक कोरोना वैश्विक महामारी से अपनी सेवाएं दे रहे हैं, जिनकी समय-समय पर सेवा अवधि बढ़ाई जाती है। एक ओर जहां प्रदेश में हजारों की संख्या में पद रिक्त हैं और पल्स पोलियो कार्यक्रम प्रदेश स्तर पर चलाए जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ कर्मचारियों को बाहर निकलने से प्रदेश स्तर पर कार्यक्रम असफल होने की संभावना हैं।

अभी तक सरकार का आदेश नहीं आया है जिसकी वजह से पल्स पोलियो कार्यक्रम भी असफल होता हुआ नजर आ रहा है। एसोसिएशन के अध्यक्ष गिरीश शर्मा ने सरकार से अपील किया कि कार्मिकों का एक्सटेंशन बड़ा कर सेवा विस्तार किया जाए। अन्यथा मजबूर होकर संपूर्ण राजस्थान में आंदोलन किया जाएगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी सरकार और प्रशासन की होगी।

शिखा गुप्ता को डॉक्टरेट अवार्ड

जयपुर । भूगोल विषय की प्रख्यात शिक्षिका शिखा गुप्ता को राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

रिलायंस निप्पॉन ने की 346 करोड़ रु. बोनस की घोषणा

जयपुर । रिलायंस निप्पॉन लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2024 में अपने भागीदार पॉलिसीधारकों के लिए 346 करोड़ रुपए के बोनस की घोषणा की है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024 में शानदार वित्तीय प्रदर्शन करते हुए शानदार उपलब्धियाँ हासिल की हैं। नई पॉलिसी की बिक्री में 22 फीसदी की वृद्धि, इंडीविजुअल न्यू बिजनेस प्रीमियम में 10 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

रिलायंस निप्पॉन लाइफ इंश्योरेंस के ईडी और सीईओ आशीष वोहरा ने कहा कि कंपनी ने इस अवधि के लिए 198 करोड़ रुपए के कर-पूर्व लाभ की घोषणा है, जो वित्त वर्ष 2023 की तुलना में 84 फीसदी ज्यादा है। इस घोषणा के मुताबिक, 31 मार्च, 2024 तक सभी पात्र प्रतिभागी पॉलिसीज़ इस बोनस घोषणा से लाभान्वित हुई हैं। कंपनी पिछले 23 वर्षों से लगातार बोनस की घोषणा कर रही है जो ग्राहकों को नियमित रूप से अपने प्रीमियम का भुगतान करने और पॉलिसी अवधि के दौरान निवेश में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। कंपनी के प्रमुख यूलिप इक्विटी फंड 3 ने भी मजबूत प्रदर्शन किया है।

अजमेर में सम्राट पृथ्वीराज चौहान खेल महाकुंभ-2024 का विधिवत आग़ाज़

विधानसभा अध्यक्ष देवनानी व स्वायत्त शासन मंत्री जाबर सिंह खर्रा ने शुभारंभ किया

अजमेर, (कासं)। नगर निगम अजमेर व क्रीडा भारती अजयमेरू द्वारा आयोजित होने वाले सम्राट पृथ्वीराज चौहान खेल महाकुंभ-2024 का विधिवत शुभारम्भ ध्वजारोहण व मशाल जला कर आगाज किया गया।

मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी व स्वायत्त शासन मंत्री जाबर सिंह खर्रा द्वारा किया गया। इस खेल महाकुम्भ में 4000 से अधिक प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम से पूर्व वृक्षारोपण किया और कहा कि प्रधानमंत्री जी ने को एक पेड़ मां के नाम अभियान का आगाज किया है इसमें हम सभी को सहभागी बनना चाहिए और वृक्ष का पालन इस प्रकार जिस प्रकार हमारी मां हमारा लालन पालन करती है। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि जो कोई भी खेल गतिविधियों में रुचि रखता है, वह जीवन के किसी भी खेल से कभी हार नहीं मानता या हार नहीं मानता। खेल और खेलों में भाग लेना उन्हें एक टीम खिलाड़ी बनना सिखाता है, जिसका रवैया हमेशा ध्यान का केंद्र बनने का होता है। खेल और खेल आत्मविश्वास बढ़ाने वाली गतिविधियां हैं और बच्चों को बहुत मज़ा भी देते हैं, खेलकूद को अतिरिक्त या मनोरंजक गतिविधियों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, क्योंकि ये उससे कहीं अधिक हैं, कम उम्र के बच्चों को किसी भी प्रकार के खेलों में जाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें केवल एक खेल में ही नहीं बल्कि उससे अधिक खेलो को खेलने का मौका दिया जाना चाहिए। स्वायत्त शासन मंत्री जाबर सिंह खर्रा ने कहा कि खेलने के लिए प्रत्येक दिन कुछ समय निकालना चाहिए। खेल आपको स्वस्थ शरीर और दिमाग के साथ बेहतर ध्यान लगाकर पढ़ाई करने में भी मदद करेगा, परन्तु खेलकूद को आज के समय में माध्यमिक माना जाता है क्योंकि हर कोई उच्चतम अंक स्कोर करने और प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने में लगा हुआ है। उन्हें ये समझ में नहीं आता कि अध्ययन खेल से बाधा नहीं बनता बल्कि ये उन्हें आशावादी बने रहने और प्रतिस्पर्धी भावना को सकारात्मक बनाए रखने में मदद करता हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में धरोहर एव प्रद्धोनिति के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने कहा कि आज हमारे लिए हर्ष की बात है निगम द्वारा शहर के लिए शहर की आन बान शान सम्राट पृथ्वीराज चौहान के नाम से प्रतियोगिता आयोजित करवा रहा है,आज निगम सामाजिक सरोकार के जो कार्य कर रहा है वो साधुवाद के पात्र है। खेलकूद एक व्यक्ति के दिमाग को स्वस्थ और सक्रिय रखने में मदद करता हैं। जिसके कारण उनकी नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है और सभी जगहों पर सकारात्मक ऊर्जा फैल जाती है। यह लोगों को मजबूत, आत्मविश्वासी और कुशल बनाता हैं तथा उसके मानसिक एवं शारीरिक विकास और चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। कार्यक्रम संयोजक व उपमहापौर नीरज जैन ने बताया कि आज योगा पटेल स्टेडियम में, वॉलीबाल पटेल स्टेडियम में , फुटबॉल पटेल स्टेडियम में, शूटिंग करणी शूटिंग लोहगाल, बैडमिंटन इंडोर में शुभारभ हुआ। एक जुलाई को दूसरे दिन शतरंज का शुभारंभ और आज हुई प्रतियोगिताओं का सेकेंड राऊंड होगा।

भारत के टी-20 वर्ल्ड कप जीतने पर पुष्कर सरोवर की पूजा की

पुष्कर सरोवर की तीर्थ पुरोहितों ने पूजा-अर्चना की।

पुष्कर, (निसं.)। भारत के टी-20 वर्ल्ड कप जीतने की खुशी में तीर्थ पुरोहितों ने पवित्र सरोवर का दुग्ध अभिषेक किया। भारत की वर्ल्ड कप जीतने की खुशी को लेकर पुरोहितों ने पवित्र सरोवर में पूजा-अर्चना का दुग्ध अभिषेक किया।

शनिवार की रात्रि में टी-20 वर्ल्ड कप में भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेले गए कांटे के फाइनल मैच में भारत ने अफ्रीका को 7 रनों से हराते ही पुष्कर में खुशी की लहर दौड़ गई और क्रिकेट प्रेमियों ने जमकर आतिशबाजी कर देर रात्रि में दीपावली मनाई तो वहीं पवित्र सरोवर पर तीर्थ पुरोहितों ने ब्रह्म घाट पर दुग्ध अभिषेक किया।

शनिवार को कौशल मुखिया और कौशल मिश्र के नेतृत्व में पूजा-अर्चना करके पुष्कर गुरु से मनोकामना कर टी 20 वर्ल्ड कप जीतने की मन्नत मांगी थी। मनोकामना पूरी होने पर वर्ल्ड कप जीतने पर रविवार को फिर पुष्कर सरोवर की पूजा अर्चना की और बीसीसीआई को क्रिकेट टीम को पुष्कर पूजा करने के लिए पुष्कर आने का न्योता दिया है। इस अवसर पर अजय पाराशर, रेशू पाराशर, विकास बाबू, कौशल मुखिया, अनिल मिश्र, विशाल पाराशर, राजेश पाराशर, कमल पाराशर, कौशल मिश्र, मनीष पाराशर, आचार्य पवन पाराशर सहित काफी संख्या में तीर्थ पुरोहित और क्रिकेटप्रेमी मौजूद थे।

मकराना में पांच खानों का हिस्सा गिरा

मकराना, (निसं)। मकराना मार्बल खनन क्षेत्र के रेवत डूंगरी रेंज की मार्बल खदानों का हिस्सा रविवार सुबह करीब पांच बजे अचानक भरभरा कर ढह गया। पहले पांच खानों का हिस्सा सड़क की तरफ का गिरा, जिसमें कुछ की क्रेन और उन पर लगी मशीनरी भी खानों में गिर गई। शनिवार को मकराना में भारी बारिश हुई, जिससे खानों की अगवाड़ें लूज हो गई। खानों में रात काम बंद ही था वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

बारिश से खानों के सड़क की तरफ खान का हिस्सा काफी लूज हो गया। इनमें रेवत डूंगरी रेंज की खान संख्या 21, 22, 23, 24, 25 की अगवाड साइड में काफी समय से दरारें भी आ चुकी थी। इनमें से कुछ खदानों के हिस्से को लेकर खान ठेकेदार पहले से ही उनके ढहने का अंदेशा जता रहे थे। इस हादसे से खान मालिकों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है।

खनिज विभाग ने बारिश शुरू होने से पहले ही जिन खदानों के ढहने का अंदेशा बना हुआ है, उनको बंद रखने के आदेश दे रखे थे। इसकी वजह से किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। खदानों के अंदर खनन कार्य जारी रहता तो बड़ा हादसा भी हो सकता था। खान ढहने से मकराना से जाखली की तरफ जाने वाले मार्ग का कुछ हिस्सा खानों के अंदर गिर गया, इससे लोगों को आवागमन के समय सावधानी बरतने को कहा गया है।

मकराना मार्बल खनन क्षेत्र के रेवत डूंगरी रेंज की मार्बल खदानों का हिस्सा गिर गया।

सड़क हादसे मे युवक की मौत

करौली (निसं)। ट्रैक्टर की चपेट में आने से मोटरसाइकिल सवार युवक की मौत हो गई। करौली अस्पताल की मोर्चरी में पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। सदर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। हादसा जिला मुख्यालय के पांचना बांध के पास सैंगरपुरा रोड पर हुआ।

सदर थानाधिकारी योगेंद्र शर्मा ने बताया कि पांचना बांध के पास सेंगरपुरा रोड पर एक ट्रैक्टर ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार राहुल पुत्र मुखराज गुर्जर निवासी पीपलपुरा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को उपचार के लिए करौली अस्पताल लाया गया। जहां डॉ. ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक का शव अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया। जहां शनिवार को पोस्टमॉर्टम की कार्यवाही के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। मृतक का शुक्रवार को ही जन्मदिन था। वह जन्मदिन मनाने के बाद दोस्तों को गुडला बस स्टैंड छोड़ कर गांव जा रहा था। इस दौरान हादसा हो गया। राहुल कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा की तैयारी कर रहा था।

रंजिश के चलते दो पक्षों में पथराव, 11 जने गिरफ्तार

पुलिस ने 20 से अधिक आरोपियों को चिन्हित किया, मोहल्ले में आर.ए.सी. जवानों को किया तैनात

सादुलपुर, (निसं)। मोहल्ला नरडियांन में आपसी रंजिश के चलते दो पक्षों में जमकर पथराव हुआ, जिसके कारण मोहल्ले में भय का वातावरण बन गया। गत दो-तीन दिन पहले मारपीट के परस्पर मामले दर्ज होने के बाद दोनों पक्षों में शनिवार रात्रि को जमकर पथराव हुआ तथा पुलिस को सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची तो आरोपी नदारद हो गए।

रविवार सुबह दोनों पक्षों में फिर जमकर पथराव हुआ तथा जनहित में लगी टेबलों को भी तोड़फोड़ दिया। थाना अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह झाझड़िया ने बताया कि रात्रि को सूचना मिलने पर पुलिस ने घटना का मौका निरीक्षण कर सभी को पाबंद करने की कार्रवाई की, लेकिन सुबह फिर दोनों पक्षों में पथराव हो गया। जिसके कारण अशांति का वातावरण बन गया और पुलिस ने दलबल के साथ मौके पर पहुंचकर पथराव करने के आरोप में दोनों पक्षों के एक दर्जन से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है तथा लगभग 20 से अधिक आरोपियों को चिन्हित करने का काम किया है जिनको पुलिस शीघ्र ही गिरफ्तार करेगी।

उन्होंने बताया कि शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस दिन भर गश्त करती रही तथा मोहल्ले में आर ए सी जवानों को भी तैनात किया है। उन्होंने बताया कि सभी आरोपियों के खिलाफ पुलिस कड़ी कानूनी कार्रवाई कर रही है।

चार घंटे में केबल चोर गैंग को पकड़ा, तीन गिरफ्तार

तीनों आरोपी चोरी करने से पहले इलाके में कचरा बीनने के बहाने से ट्यूबवेलों की रैकी करते थे

पाटन, (निसं)। डाबला पुलिस ने रविवार को केबल चोर गैंग के खिलाफ कार्रवाई करते हुए महज चार घंटे में तीन केबल चोरों को गिरफ्तार किया है।

डाबला थानाधिकारी महेंद्र कुमार मीणा ने बताया कि झाबरमल गुर्जर पुत्र भगवाना राम गुर्जर निवासी पोसवालों की ढाणी ने रिपोर्ट दर्ज करवाई थी कि शनिवार को तीन व्यक्ति हमारे खेत की ट्यूबवेल से करीब 300 फीट केबल चोरी कर ले गए। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए रिपोर्ट दर्ज करने के मात्र 4 घंटे के अंदर ही केबल चोर गैंग के तीन आरोपी प्रकाश (45) पुत्र रामजीलाल गुजराती माली निवासी सातपड़ा थाना गाड़ियाधाल जिला भावनगर गुजरात, रणजीत (28) पुत्र मंगतराम निवासी सीहोर थाना वीरमगांव गुजरात, रमेश (40) पुत्र किशन निवासी सनिया थाना देतरोज जिला गुजरात को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के कब्जे से चोरी की गई केबल भी बरामद की गई है। तीनों आरोपी चोरी करने से पहले इलाके में कचरा बीनने के बहाने से ट्यूबवेलों की रैकी करते थे। उसके बाद चोरी की वारदात को अंजाम देते थे। आरोपियों ने पूछताछ में डाबला इलाके में और भी ट्यूबवेलों से केबल चोरी करना कबूल किया है। आरोपियों से गहनता से पूछताछ जारी है।

- आरोपियों ने पूछताछ में डाबला इलाके में और भी ट्यूबवेलों से केबल चोरी करना कबूल किया

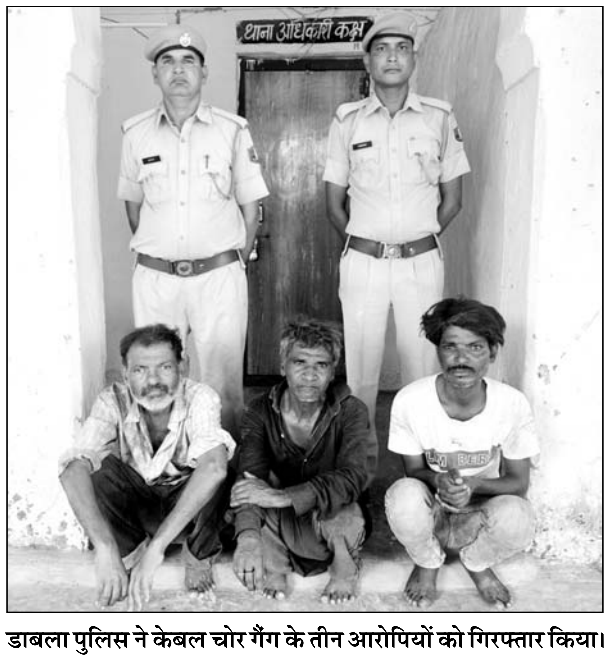

डाबला पुलिस ने केबल चोर गैंग के तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया।

अजमेर एसीबी टीम भीलवाड़ा यूआईटी पहुंची

भीलवाड़ा, (निसं)। नगर विकास न्यास में फर्जी पट्टे और मुआवजे के नाम पर करोड़ों रुपए के घोटाले के मामले में अजमेर की एसीबी टीम जांच के लिए भीलवाड़ा पहुंची है। एसीबी डीजी रवि महेरड़ा के निर्देश पर अजमेर एसीबी टीम भीलवाड़ा यूआईटी पहुंची और दस्तावेजों की जांच शुरू की। एसीबी टीम के आने से भू माफिया में खलबली है वहीं न्यास कर्मचारियों में भी हड़कंप मचा है।

- नगर विकास न्यास में फर्जी पट्टे और मुआवजे के नाम पर करोड़ों रुपए के घोटाले के मामले में जांच शुरू की

जानकारी के अनुसार नगर विकास न्यास में पिछले कुछ सालों में फर्जी पट्टे बनाने और जमीनों के मुआवजा फर्जी तौर पर देने का खेल चल रहा है इसे लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अजमेर से एक टीम भीलवाड़ा पहुंची है यह टीम अजमेर एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचंद मीणा के नेतृत्व में यहां आई है। साथ ही भीलवाड़ा एसीबी टीम भी नगर विकास न्यास पहुंची ओर युआईटी सचिव ललित गोयल से जानकारी जुटाई गई। जांच कार्यवाही शुरू होने से न्यास के कर्मचारियों और बाबुओं को बुलाया गया है इससे न्यास कर्मचारी और भू माफियाओं में खलबली मची हुई है।

युवक का शव खेजड़ी के पेड़ पर फंदे से झूलता मिला

मकराना, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के भरनाई ग्राम के एक खेत में शनिवार रात को एक युवक का शव खेजड़ी के पेड़ पर फंदे से झूलता मिला। मकराना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को नीचे उतारा और उसे मकराना के सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। रविवार को मृतक का पोस्टमार्टम करवा करवा शव परिजनों के सुपूर्द कर दिया है। मकराना थाने के हेड कांस्टेबल सुरेश मीणा ने बताया कि मृतक मनना राम (26) पुत्र रामेश्वर लाल मेघवाल निवासी खेरपुरा 28 जून को सुबह 8 बजे अपने घर से कुचामन के लिए दवाई लाने के लिए निकला था, जो घर नहीं पहुंचा। एक दिन पूरा बीत जाने के बाद भी 29 जून की शाम तक उसके घर नहीं पहुंचने पर परिजनों ने अपने क्षेत्र के मौलासर पुलिस थाने में मृतक की गुमशुदगी दर्ज करवाई।

इस बीच शनिवार देर रात्रि को पुलिस को सूचना मिली कि भरनाई गांव के एक खेत में युवक खेजड़ी के पेड़ से लटका हुआ है, जिस पर मकराना पुलिस मौके पर पहुंची, साथ ही मौलासर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।घटना स्थल मृतक मनना राम के घर से मात्र एक किमी की दूरी पर है, जहां मृतक के गांव खेरपुरा का थाना मौलासर और घटनास्थल का थाना मकराना लगता है। ऐसे में दोनों थानों की पुलिस ने मौका देखा, जहां सिर्फ एक व्यक्ति के ही पेड़ तक जाने के फुटमार्क थे। इससे पहली नजर में आत्महत्या का मामला माना गया। परिजनों की तस्दीक के बाद पुलिस ने शव को खेजड़ी से उतरवा कर मकराना के सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में रात्रि लगभग 10 बजे रखवाया। रविवार को सुबह पुलिस ने पंचनामा की कार्रवाई करते हुए शव का पोस्टमार्टम करवाया और शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

परीक्षा सम्पन्न

अजमेर, (कासं)। आरपीएससी की भूजल विभाग में सहायक अभियंता यांत्रिकी प्रतियोगी परीक्षा 2023 रविवार को जिला मुख्यालय पर शांतिपूर्ण संपन्न हुई। परीक्षा में महज 12.99 प्रतिशत परीक्षार्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई। जिला मुख्यालय पर आयोजित परीक्षा में 11 हजार 780 परीक्षार्थी पंजीकृत किए गए, जिनमें से 1 हजार 530 परीक्षार्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई जबकि 10 हजार 250 अनुपस्थित रहे। यह परीक्षा प्रथम पारी सुबह दस से दोपहर डेढ़ बजे तक आयोजित की गई।

आकाशीय बिजली गिरने से टीनशेड और दीवार क्षतिग्रस्त

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ उपखंड क्षेत्र के गांव भोजण में आकाशीय बिजली गिरने से पशुओं के लिए बना टीनशैड का छप्पर टूटकर गिर गया। हालांकि मौके पर कोई जनहानि नहीं हुई। वहीं घटना के बाद मौके पर हड़कंप मच गया। इस दौरान मौके पर श्री करणी सेना राजगढ़ तहसील अध्यक्ष नवीन सिंह राठौड़ सहित ग्रामीण सजंय शर्मा, सुनील शर्मा, महावीर मेघवाल व नरेश शर्मा सहित लोगों की भीड़ जमा हो गई। गांव के नवीन सिंह राठौड़ ने बताया कि क्षेत्र में बारिश के दौरान गांव के विद्याधर शर्मा के घर पर बने पशुओं के छप्पर पर तेज धमाके के साथ आकाशीय बिजली गिर गई। घटना से मौके पर हड़कंप मच गया। आकाशीय बिजली गिरने से छप्पर पर लगी सीमेंट की टीन और दीवार क्षतिग्रस्त होकर गिर गई। गनीमत यह रही कि हादसे के समय छप्पर में अंदर को पशु नहीं बंधा था।

नकली नोट जमा कराने का मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। सूरजपोल थाना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ नकली नोट जमा करवाने का प्रकरण दर्ज किया। मैनेजर एसबीआई बैक शाखा राजसंघ प्रतापनगर ने आरोपी हेमन्त सियाराम गुर्जर के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीड़ित ने बताया कि आरोपी ने एसबीआई बैंक शाखा प्रतापनगर में स्थित केश डिपोजिट मशीन में 500 रूपये के 20 नकली नोट जमा करवाए।

मोबाइल चोर पुलिस के हत्थे चढ़ा

अजमेर, (कासं)। राजकीय रेलवे पुलिस ने मोबाइल चोरी के मामले में एक चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस उसके कब्जे से चुराया गया मोबाइल भी बरामद कर लिया है। आरोपी गुजरात का रहने वाला है। पुलिस आरोपी से पूछताछ में जुटी है। जीआरपी थाना प्रभारी अनिल देव ने बताया कि 25 मई को योगेश शर्मा की ओर से मोबाइल चोरी की शिकायत दर्ज कराई गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच हैड कॉन्स्टेबल फिरोज खान को सौंपी गई। हैड कानि. खान ने जांच के दौरान मोबाइल ट्रेसिंग कर आरोपी जाकिर पठान पुत्र अल्ताफ पठान निवासी सलाबतपुरा सूरत (गुजरात) को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी के पास से चुराया गया मोबाइल भी बरामद कर लिया है। पुलिस टीम में फिरोज खान, सुरेश यादव, खितेन्द्र कैन, अशोक कुमार शामिल थे।

मादक पदार्थ जब्त, दो युवती सहित तीन गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। शहर के सुखेर थाना पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान दो युवती सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से अवैध एमडीएम जब्त कर प्रकरण दर्ज किया।

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक कैलाशचंद्र खटीक के सुपरविजन में सुखेर थानाधिकारी हिमांशुसिंह राजावत, स्पेशटल टीम प्रभारी देवेन्द्र देवल, एसआई रेणु खोईवाल के नेतृत्व में हेड कांस्टेबल सुनील विश्नोई, खुमाणसिंह मय टीम ने मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर भैरवगढ़ जाने वाली सड़क पर पहुंचे, जहां पुलिस को देख वहां खड़ा एक युवक व दो युवतियां भागने लगे। जिनका पीछा कर पुलिस ने दबोच लिया।

- पूछताछ में कोई संतोषप्रद जवाब नहीं देने पर पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर मादक पदार्थ जब्त कर प्रकरण दर्ज किया

पूछताछ करने पर युवती ने अपना नाम अनीता टांक उर्फ एंजल पुत्री नारायणलाल टांक पत्नी सुरेन्द्र चौधरी अम्बामाता स्कीम अम्बामाता हॉल केशव नगर सुखेर, हिमांशी उर्फ नन्नू पुत्री भैरूलाल सोनी निवासी अहिंसा सर्कल भीमगंज भीलवाड़ा तथा सद्दाम हुसैन उर्फ कांकरोली पुत्र छोटू खां निवासी आनंद टॉकीज के पास नाथद्वारा राजसमन्द हाल फारूख आजम कॉलोनी मल्लातलाई अम्बामाता को गिरफ्तार किया। तलाशी लेने पर सद्दाम के कब्जे से 25 ग्राम एवं अनीता व हिमांशी के कब्जे से 15-15 ग्राम मादक पदार्थ एमडी पाई गई। पूछताछ में कोई संतोषप्रद जवाब नहीं देने पर पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर मादक पदार्थ जब्त कर प्रकरण दर्ज किया। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

खेत पर गए युवक का शव कुएं में तैरता मिला

मसूदा, (निसं)। कस्बे में घर से खेत पर गए युवक का शव रविवार को कुएं में तैरता मिला। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मसूदा कस्बे के इन्द्रा कॉलोनी निवासी जितेन्द्र कुमार पुत्र मोहन लाल जीनगर (30) शनिवार शाम को खेत पर जाने के लिए घर से गया था। इस दौरान कुएं के पास पैर फिसलने से वह कुएं में गिर गया। कुएं में पानी होने से वह डूब गया।

रविवार प्रातः तक उसके घर नहीं लौटने पर परिजनों ने तलाश करने पर युवक का शव कुएं में तैरता नजर आने से परिजनों के होश उड़ गए। जानकारी मिलने पर मौके पर आस पास के ग्रामीण भी पहुंच गए। सूचना मिलने पर मसूदा पुलिस थानाधिकारी सुरेन्द्र सिंह मय जाब्ते के मौके पर पहुंचे एवं क्रेन की मदद से युवक का शव कुएं से बाहर निकाला गया एवं मसूदा चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस ने मृतक के भाई गोविंद की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया। स्थानीय इन्द्रा कॉलोनी निवासी युवक के शव को कुएं से निकालने के लिए क्रेन पर एक ट्रॉली लगाकर कुछ युवक हिम्मत कर उसमें बैठक कुएं में उतरे एवं शव को कुएं से बाहर निकालकर लाए।

शव को कुएं से निकालने के लिए क्रेन पर एक ट्रॉली लगाकर कुछ युवक कुएं में उतरे।

सूर्यकुमार ने मैच को रूख बदलने वाला कैच लपकने के दौरान जागरूकता दिखाते हुए सही फैसला किया। कैच लेते समय यह जानने का आत्मविश्वास होना कि वह गेंद फेंककर वापस आकर कैच लपक सकता है।

- टी. दिलीप

भारतीय फील्डिंग कोच, सूर्यकुमार द्वारा लिए गये कैच पर कहा।

आज का खिलाड़ी

सुनीता मीणा

उज्बेकिस्तान में एक से पांच जुलाई तक आयोजित होने वाली ओलम्पिक खेल लैक्रोज़ की एशियाई सीनियर महिला प्रतियोगिता में भाग लेने वाली भारतीय टीम की राजस्थान के उदयपुर जिले की सुनीता मीणा को कप्तान तथा जुला गुर्जर उप कप्तान घोषित की गई हैं। प्रशिक्षक नीरज बत्रा के अनुसार राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर की छात्रा सुनीता मीणा के भारतीय लैक्रोज़ टीम की ऐतिहासिक प्रथम कप्तान एवं जुला के उपकप्तान बनने पर राजस्थान के खेल प्रेमियों में उत्साह का माहौल है।

क्या आप जानते हैं ?... भारत के बीएस चन्द्रशेखर विश्व के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी है जिन्होंने अपने टेस्ट कैरियर में बनाए गए रनों से अधिक विकेट प्राप्त किये। उन्होंने टेस्ट मैचों में 166 रन बनाए और 242 विकेट लिये।

स्पष्ट और शांतचित रहने से मिली सफलता : बुमराह

ब्रिजटाउन, 30 जून। टी20 विश्व कप में शानदार प्रदर्शन के लिये भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को प्लेयर आफ द टूर्नामेंट चुना गया। बुमराह ने आठ मैचों में 15 विकेट लिये लेकिन उनका योगदान इन आंकड़ों से कहीं अधिक था जिसकी बदौलत भारत ने 17 साल बाद टी20 विश्व कप जीता। बुमराह ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में रीजा हेंडरिक्स और मार्का जेनसन के विकेट लिये। उन्होंने पुरस्कार वितरण समारोह में कहा ,'' मैने शांतचित्त होकर खेलने की कोशिश की। हम इसी के लिये खेलते हैं और मैं सातवें आसमान पर हूं। मेरा बेटा यहां है, परिवार यहां है। हमने जीत के लिये बहूत मेहनत की है। इससे बढकर कुछ नहीं। हम इस स्तर पर खेलने के लिये ही खेलते हैं।' उन्होंने कहा,'' बड़े मैच में आप और बेहतर करते हैं। मैं पूरे टूर्नामेंट में काफी स्पष्ट और शांतचित्त रहा। अब जीत के बाद जज्बात हावी हो सकते हैं।'' उन्होंने कहा ,'' मैं आम तौर पर जज्बात जाहिर नहीं करता लेकिन अब काम पूरा हो गया है। आज मेरे पास शब्द नहीं है। मैं मैच के बाद रोता नहीं लेकिन आज भावनायें हावी हो रही है।

5.3 करोड़ दर्शकों ने भारत-दक्षिण अफ्रीका टी-20 विश्व कप फाइनल मैच देखा

नयी दिल्ली, 30 जून। टी20 विश्व कप फाइनल मैच को ओटीटी स्ट्रीमिंग मंच पर 5.3 करोड़ लोगों ने देखा। हालांकि यह आंकड़ा पिछले साल नवंबर में हुए एकदिवसीय विश्वकप फाइनल मैच के रिकॉर्ड दर्शकों से कम रहा। शनिवार रात हुए टी–20 विश्वकप फाइनल मैच को जीतकर भारत ने आईसीसी ट्रॉफी उठाने के 13 साल के इंतजार को समाप्त किया। भारत–दक्षिण अफ्रीका आईसीसी पुरुष टी–20 क्रिकेट विश्व कप फाइनल मैच को शनिवार को डिज्नी हॉटस्टार ओटीटी मंच पर लगभग 5.3 करोड़ दर्शकों ने देखा। पिछले साल 20 नवंबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 50 ओवरों के प्रारूप के फाइनल मैच को देखने वालों की अधिकतम संख्या 5.9 करोड़ थी। हालांकि मेजबान देश भारत हार गया था। उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार, यह 5.9 करोड़ अभी भी किसी भी क्रिकेट मैच की लाइव स्ट्रीमिंग के लिए सर्वोच्च दर्शक संख्या का रिकॉर्ड है। टी–20 क्रिकेट विश्व कप में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 24 जून को खेले गए नॉकआउट मैच में अधिकतम दर्शक संख्या 3.9 करोड़ रही थी। डिज़्नी स्टार के पास 'लीनियर' और डिजिटल दोनों प्लेटफार्मों के लिए विशेष प्रसारण और मीडिया अधिकार हैं। शनिवार के फाइनल मैच का सीधा प्रसारण डिज्नी स्टार द्वारा स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर भी किया गया, लेकिन दर्शकों की संख्या टेलीविजन दर्शक मापन निकाय ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल द्वारा एक सप्ताह बाद ही जारी की जाएगी।

हमने इस आईसीसी ट्रॉफी के लिये तीन चार साल कड़ी मेहनत की है : रोहित शर्मा

ब्रिजटाउन, 30 जून। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टी20 विश्व कप जीतने के बाद भावुक होते हुए कहा कि उनकी टीम ने सिर्फ फाइनल में ही अच्छा प्रदर्शन नहीं किया बल्कि इसके लिये पिछले तीन साल से कड़ी मेहनत कर रही थी। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को रोमांचक फाइनल में सात रन से हराकर 11 साल बाद आईसीसी खिताब जीता। कपिल देव और महेंद्र सिंह धोनी के बाद विश्व कप जीतने वाले रोहित तीसरे भारतीय कप्तान बन गए। उन्होंने कहा ,'' मैं बता नहीं सकता कि इस समय कैसा महसूस कर रहा हूं। शब्दों में नहीं बता सकता। पिछली रात मैं सो नहीं सका। मैं हर हालत में जीतना चाहता था।'' उन्होंने कहा ,'' यह बताना मुश्किल है कि पिछले तीन चार साल में हमने कितनी मेहनत की है। सिर्फ आज की बात नहीं है , इसके पीछे तीन चार साल की मेहनत है।'' पिछले साल वनडे विश्व कप फाइनल में मिली हार को वह भूले नहीं है। उन्होंने कहा ,'' कई दबाव भरे मुकाबलों में हम जीत नहीं सके। खिलाड़ियों को पता है कि दबाव में क्या करना है और आज उसका परफेक्ट उदाहरण था। हम एक साथ डटे रहे।'' पिछले 15 साल से अधिक समय से विराट कोहली के साथ खेल रहे रोहित ने कहा कि कोहली के फॉर्म को लेकर किसी को संदेह नहीं था।

मोदी ने विश्वकप जीतने पर भारतीय टीम को दी बधाई

नई दिल्ली, 30 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्यों से फोन पर बात की और उन्हें टी20 विश्वकप जीतने पर बधाई दी। अधिकारियों ने बताया कि मोदी ने भारतीय क्रिकेटर रोहित शर्मा को उनकी शानदार कप्तानी के लिए बधाई दी और उनके टी20 करियर की सराहना की। प्रधानमंत्री ने फाइनल मुकाबले में विराट कोहली की पारी के लिए उनकी भी प्रशंसा की और साथ ही भारतीय क्रिकेट में उनके योगदान की सराहना की। शर्मा और कोहली, दोनों ने टी20 विश्वकप जीतने के बाद क्रिकेट के इस प्रारूप के अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों से संन्यास लेने की घोषणा की है। अधिकारियों ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने फाइनल मुकाबले के अंतिम ओवर के लिए हार्दिक पांड्या तथा बाउंड्री पर डेविड मिलर का कैच पकड़ने के लिए सूर्यकुमार यादव की तारीफ की। उन्होंने जसप्रीत बुमराह के योगदान की भी सराहना की। प्रधानमंत्री ने कोच राहुल द्रविड़ का भारतीय क्रिकेट में योगदान के लिए आभार जताया।

रोहित-कोहली रिटायरमेंट : टी-20 से खत्म हुआ रोहित-कोहली युग, खिताब के साथ मिला यादगार फेयरवेल

रोहित-विराट सबसे ज्यादा आईसीसी फाइनल खेलने वाले खिलाड़ी रहे, दोनों ने 8-8 फाइनल खेले

ब्रिजटाउन, 30 जून। विराट कोहली और रोहित शर्मा ने टी20 विश्व कप 2024 का खिताब जीतने के बाद इस फॉर्मेट से संन्यास का ऐलान कर दिया। कोहली और रोहित का टीम इंडिया के शानदार प्रदर्शन रहा है। रोहित बतौर कप्तान सफल रहे हैं। उन्हें कोहली के बाद यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जिसमें वे सफल रहे। रोहित और कोहली के संन्यास के साथ एक युग का अंत हुआ। कोहली ने टी20 इंटरनेशनल कई रिकॉर्ड बनाए हैं, जिन्हें तोड़ना किसी भी खिलाड़ी के लिए आसान नहीं होगा। हालांकि अब दोनों को यादगार फेयरवेल मिल गया है।

टीम इंडिया ने 17 साल बाद टी20 विश्व कप का खिताब जीता है। भारत ने पहली बार महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में 2007 में यह खिताब जीता था। लेकिन अब रोहित शर्मा ने एक बार फिर से फैंस के सपने को साकार कर दिया है। रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम वनडे विश्व कप 2023 के फाइनल तक भी पहुंची थी। लेकिन यहां उसे हार का सामना करना पड़ा था। हालांकि इस बार रोहित ने फैंस को निराशा नहीं किया और टीम को चैंपियन बनाया।

दमदार रहा विराट का टी20 इंटरनेशनल करियर : विराट दुनिया के उन चुनिंदा खिलाड़ियों में से हैं, जिन्होंने अपने दम पर करियर को आसमान तक पहुंचाया. इसके साथ–साथ टीम का भी परचम बुलंद रहा। कोहली टी20 इंटरनेशनल करियर पर नजर डालें तो वह शानदार रहा है। उन्होंने 125 मैचों में 4188 रन बनाए हैं। उन्होंने इस दौरान 1 शतक और 38 अर्धशतक लगाए हैं। कोहली का सर्वश्रेष्ठ स्कोर नाबाद 122 रन रहा है। कोहली टीम इंडिया के लिए एक भरोसे की तरह रहे हैं। हालांकि उनके लिए यह टी20 विश्व कप अच्छा नहीं रहा। लेकिन उन्होंने फाइनल में 76 रनों की पारी खेलकर भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई।

रोहित ने टी20 इंटरनेशनल में लगाए हैं 5 शतक : रोहित की बात करें तो वे भी दमदार प्लेयर के रूप में उबरे और इसके बाद सफल कप्तान भी साबित हुए। रोहित ताबड़तोड़ बैटिंग के लिए मशहूर रहे हैं। वे स्थिति को देखकर खेलते हैं. लेकिन अधिकतर समय अटैकिंग अप्रोच के साथ नजर आए। रोहित ने भारत के लिए 159 टी20 मैच खेले. इस दौरान 4231 रन बनाए. उन्होंने इस फॉर्मेट में 5 शतक और 32 अर्धशतक लगाए। रोहित का सर्वश्रेष्ठ स्कोर नाबाद 121 रन रहा। उन्होंने कई यादगार पारियां खेली हैं। अहम बात यह है कि उनकी बैटिंग भारत को मुश्किल परिस्थिति में जीत दिलाने में कामयाब भी रही है।

रविन्द्र जडेजा ने टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों को कहा अलविदा

ब्रिजटाउन, 30 जून। विराट कोहली और रोहित शर्मा के बाद अब रविंद्र जडेजा ने भी टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों को अलविदा कह दिया है। जडेजा ने रविवार को टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। क्रिकेटर ने टी20 विश्व कप 2024 की ट्रॉफी के साथ अपनी एक मुस्कुराती हुई तस्वीर साझा की, जिसके साथ उन्होंने एक भावुक नोट लिखकर अपने संन्यास लेने का ऐलान किया। विराट, रोहित और अब जडेजा के संन्यास की खबर ने क्रिकेट के चाहनेवालों के दिल तोड़ दिए हैं। टी20 विश्व कप की ट्रॉफी जीतने की खुशी के बीच भारतीय क्रिकेट के नामी खिलाड़ियों को संन्यास लेता देख लोग भावुक हो गए हैं।

जडेजा ने रविवार को अपने सोशल मीडिया हैंडल पर टी20 विश्व कप 2024 की ट्रॉफी थामे अपनी एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, मैं दिल से कृतज्ञता के साथ टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों को अलविदा कहता हूं। गर्व से सरपट दौड़ने वाले एक दृढ़ घोड़े की तरह, मैंने हमेशा अपने देश के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है और अन्य प्रारूपों में भी ऐसा करना जारी रखूंगा। जडेजा ने आगे लिखा कि टी20 विश्व कप जीतना एक सपना सच होने जैसा था, मेरे टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर का शिखर। यादों, उत्साह और अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद। जय हिंद।

कोपा अमेरिका : अर्जेंटीना ने मेसी के बिना दर्ज की जीत

पेरु को 2-0 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई

नई दिल्ली, 30 जून। अर्जेंटीना ने कोपा अमेरिका फुटबॉल टूर्नामेंट में पेरू को हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। मियामी के हार्ड रॉक स्टेडियम में खेल गए मुकाबले में अर्जेंटीना के खिलाड़ियों को लियोनेल मेसी की कमी नहीं खली। इस जीत के साथ ही अर्जेंटीना ग्रुप–ए की प्वाइंट्स टेबल में टॉप पर पहुंच गया है। अर्जेंटीना ने पेरू को 2–0 से हराया।

लियोनेल मेसी को हैमस्ट्रिंग में दर्द की शिकायत के बाद टीम से बाहर होना पड़ा। वहीं, कोच लियोनेल स्कोलोनी के एक मैच के निलंबन के कारण अर्जेंटीना ने अपने शुरुआती प्लेइंग 11 में नौ बदलाव किए। हालांकि, मैच के दौरान इन दोनों की कमी टीम को नहीं खली और खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन करते हुए पेरू पर शानदार जीत दर्ज की। इस जीत के चलते अर्जेंटीना ने क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है।

बात करें मैच कि तो अर्जेंटीना के लिए पहला गोल मार्टिनेज ने किया। मार्टिनेज ने हाफ टाइम के ठीक बाद आया यह गोल। 47वें मिनट में एंजेल डि मारिया की शानदार थ्रू बॉल को मार्टिनेज लेकर आगे बढ़े और पेरू के गोलकीपर पेड्रो गैलेसे को छकाते हुए गोल कर दिया। 72वें मिनट में अर्जेंटीना को अपनी बढ़त दोगुनी करने का मौका मिला। हालांकि, वह गंवा दिया। मैच के 86वें मिनट में मार्टिनेज ने टीम के लिए दूसरा गोल दागा। ई फर्नांडीज के शानदार पर पास पर गेंद लेकर आगे बढ़कर गोल दागा। रिप्ले से पता चला कि मार्टिनेज ने डिफेंडर एल्डो कोरजो को धक्का दिया था, लेकिन रेफरी सीजर रामोस ने पेरू के विरोध को नजरअंदाज कर दिया और गोल बरकरार रहा। इस तरह अर्जेंटीना ने 2–0 से मैच अपने नाम किया।

इस टीम ने आलोचकों को चुप किया : जय शाह

नयी दिल्ली, 30 जून। भारतीय क्रिकेट बोर्ड सचिव जय शाह ने शनिवार को टी20 विश्व कप में भारत की ऐतिहासिक खिताबी जीत की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने असाधारण प्रदर्शन से अपने आलोचकों को चुप करा दिया। भारत ने बारबाडोस के ब्रिजटाउन में फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रन से हराकर अपना दूसरा टी20 विश्व खिताब जीता। शाह ने एक बयान में कहा, ''रोहित शर्मा के असाधारण नेतृत्व में इस टीम ने शानदार दृढ़ संकल्प और लचीलापन दिखाया है जो आईसीसी टी20 विश्व कप के इतिहास में एक भी मैच गंवाये बिना टूर्नामेंट को जीतने वाली पहली टीम बन गई है।'' शाह ने भारत के खिताबी अभियान को प्रेरणादायक करार देते हुए कहा, ''खिलाड़ियों ने आलोचकों का सामना किया और बार बार शानदार प्रदर्शन से उन्हें चुप कराया। खिलाड़ियों का सफर प्रेरणादायक रहा है साथ ही उन्होंने टीम की कड़ी मेहनत की भी प्रशंसा की और कहा, ''इस टीम ने अपने समर्पण, कड़ी मेहनत और अदम्य जज्बे से सभी को गौरवान्वित किया है।

रोहित ने खिताब जीत के बाद केनिंग्सटन ओवल की पिच का स्वाद चखा

ब्रिजटाउन, 30 जून। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टी20 विश्व की खिताबी जीत के बाद यहां केंसिंग्टन ओवल मैदान की पिच का स्वाद उसी तरह से चखा, जैसा की नोवाक जोकोविच विंबलडन जीतने के बाद करते हैं। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम को 11 वर्षों में पहली वैश्विक ट्रॉफी दिलाने के बाद रोहित मैदान पर जश्न बनाने के बाद चुपचाप उस पिच की ओर बढ़े जिस पर यह मुकाबला खेला गया था। उन्होंने थोड़ी सी मिट्टी उठा कर उसे अपनी जीभ पर रखा।

महान टेनिस खिलाड़ी जोकोविच के प्रशंसकों के लिए यह दृश्य कोई नया नहीं था। सर्बिया का यह खिलाड़ी विंबलडन खिताब जीतने के बाद आम तौर पर सेंटर कोर्ट से एक चुटकी घास को उखाड़ कर उसे चबाना पसंद करता है। यह ऐसा पल होता है जिसे फोटग्राााफर और वीडियाग्राफर कैमरे में कैद करना चाहते हैं। रोहित के पिच की मिट्टी चखने के वीडियो को प्रसारकों ने अपने इंस्टाग्राम पेज पर साझा किया। इस मामले में विंबलडन का आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल भी पीछे नहीं रहा। विंबलडन के आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज पर जोकोविच और रोहित की तस्वीरों को एक लगाकर पोस्ट किया गया।

यह दिल को झकझोरने वाली हार है : एडेन मारक्रम

ब्रिजटाउन, 30 जून। टी20 विश्व कप के फाइनल में भारत के खिलाफ निराशाजनक हार को दक्षिण अफ्रीका के कप्तान एडेन मारक्रम ने चुभने वाला करार देते हुए उम्मीद जतायी कि यह प्रदर्शन अगली बार टीम को बेहतर करने के लिए प्रेरित करेगा। जीत के लिए 176 रन का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की टीम हेनरिच क्लासेन की 27 गेंद में 52 रन की पारी के दम पर 15वें ओवर के बाद बेहद मजबूत स्थिति में थी। टीम को आखिरी 30 गेंद में 30 रन की जरूरत थी लेकिन भारत ने शानदार वापसी करते हुए सात रन की रोमांचक जीत दर्ज की।

आखिरी ओवरों में जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पंड्या ने कमाल की गेंदबाजी की जबकि सूर्यकुमार यादव ने दबाव की परिस्थिति में कमाल का कैच लपका। इससे पहले विराट कोहली ने 76 रन की पारी खेल भारत को प्रतिस्पर्धी स्कोर तक पहुंचाया। मारक्रम ने मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा, '' यह क्रिकेट का पहला मैच नहीं है जिसमें 30 गेंदों में से 30 की जरूरत वाली टीम को हार का सामना करना पड़ा है। भारत ने अच्छी गेंदबाजी और कमाल के क्षेत्ररक्षण से शानदार वापसी की।'' इस 29 साल के खिलाड़ी ने कहा, ''अभी किसी एक चीज को हार का कारण बताना मुश्किल है। हम अगले कुछ दिनों में, अगले कुछ हफ्तों में इस बारे में विचार करेंगे, उन क्षेत्रों को ढूंढने का प्रयास करेंगे जिसमें हम आज के मैच के दौरान सुधार कर सकते थे। हम इसके साथ ही उन चीजों के बारे में भी सोचेंगे जो हमारे लिए वास्तव में अच्छा रहा है।'' हार के गम के बावजूद मारक्रम को विश्व कप फाइनल में पहुंचने पर टीम के साथी खिलाड़ियों पर गर्व है।

उन्होंने कहा, '' मैं यह बात कहना चाहूंगा कि मुझे अपनी टीम के खिलाड़ियों पर काफी गर्व है। हम सिर्फ आज के प्रदर्शन से नहीं बल्कि टीम ने इस पूरे टूर्नामेंट और उससे पहले तैयारियों के दौरान शानदार प्रदर्शन किया है। '' मारक्रम ने कहा, ''यह हार चुभने वाली है लेकिन इससे आने वाले टूर्नामेंटों में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए टीम की भूख बढ़ेगी।''

मैं यहां भार मुक्ति के लिए नहीं आया था, मेरे लिये जिन्दगी भर की यादें है : द्रविड़

ब्रिजटाउन, 30 जून। आम तौर पर शांतचित्त रहने वाले राहुल द्रविड़ टी20 विश्व कप जीतने के बाद बच्चों की तरह उछलते नजर आये और बतौर खिलाड़ी जो ट्रॉफी नहीं जीत सके, उसे कोच के तौर पर दिलाने के लिये उन्होंने अपनी टीम को धन्यवाद दिया। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारत ने रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रन से हराकर आईसीसी खिताब के लिये 11 साल का इंतजार खत्म किया। द्रविड़ ने जीत के बाद कहा ,'' पिछले कुछ घंटों में मेरे पास शब्द नहीं है। मुझे इस टीम पर गर्व है , जिस तरह से कठिन परिस्थितियों में टीम ने संघर्ष किया।'' उन्होंने कहा ,'' पहले छह ओवर में तीन विकेट गंवाने के बाद इस तरह की जीत दर्ज करना बताता है कि यह टीम जुझारूपन छोड़ने वाली नहीं है।

एक खिलाड़ी के तौर पर मैं इतना खुशकिस्मत नहीं रहा कि विश्व कप जीत सकूं। मैने खेलने के दिनों में अपनी ओर से पूरी कोशिश की लेकिन खेल में यह सब होता है।'' द्रविड़ के लिये यह जीत एक तरह से भार मुक्ति की तरह भी रही जिनकी कप्तानी में 2007 वनडे विश्व कप में टीम पहले दौर में बाहर हो गई थी। द्रविड़ ने हालांकि कहा कि वह इस तरह के शब्दों में विश्वास नहीं करते। द्रविड़ का भारत के कोच के रूप में कार्यकाल भी खत्म हो गया। उन्होंने कहा ,'' इस तरह के ड्रेसिंग रूम का हिस्सा रहना अद्भुत था। यह जिंदगी भर ही यादें हैं।मैं टीम और सहयोगी स्टाफ को इसके लिये धन्यवाद देता हूं।''

भविष्य में प्रदेश के खेल चढ़ेंगे परवान : विश्नोई

खेलों इंडिया यूथ गेम्स की तर्ज पर खेलों राजस्थान यूथ गेम्स करेंगे आयोजित

जयपुर, 30 जून।वाले समय में राजस्थान के खेलो की दशा और दिशा में बदलाव देखने को मिलेगा। इस तरह का बदलाव आगामी बजट में किया जायेगा कि उसमें रूढिवादिता के परे नये नवाचार दिखाई देंगें, जिससे भविष्य में खेलो के विकास को गति मिलेगी, यह बात खेल राज्य मंत्री केके विश्नोई ने रविवार को सवाई मानसिंह इण्डोर स्टेडियम में 64वां केन्द्रीय आवासीय खेलकूद प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर कही। खेल राज्य मंत्री ने कहा कि 10 करोड की लागत से जयपुर में सेन्टर ऑफ ऐक्सीलेन्स फोर स्पोर्ट्स भी स्थापित किया जायेगा। साथ ही जयपुर, भरतपुर एवं उदयपुर में बालिकाओं के लिए रेजीडेन्शियल गर्ल्स स्पोर्ट्स इंस्टीट्यूट प्रत्येक के लिये 25 करोड़ की राशि से स्थापित किया जायेगा।

उन्होने कहा कि प्रति वर्ष ''खेलों इंडिया यूथ गेम्स'' की तर्ज पर ''खेलों राजस्थान यूथ गेम्स'' का आयोजन करेंगे। पिछले दस सालो में देश ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीते है। अब प्रदेश की नई खेल नीति से खिलाडियों को अधिक सुविधाऐ देने का प्रयास करेंगें। 20 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए विश्नोई ने शिविर में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि जब आप यहा से अपने–अपने घरो को जाये तो अपने अनुभव दोस्तो व साथियों के साथ शेयर करेगें तो उन्हे भी प्रेरणा मिलेगी और भविष्य में वे भी इस प्रतिष्ठित कैम्प का हिस्सा बनने का प्रयास करेगें जिससे खेलो को प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रो में गति मिलेगी।

इससे पूर्व खेल परिषद के वित्तीय सलाहकार महावीर प्रसाद मीणा ने कहा कि खेलो में काफी स्कोप है। पहले क्रिकेट ही खेलो की धुरी थी लेकिन अब अन्य खेलो में भी स्कोप है। जबकी मुख्य खेल अधिकारी वीरेन्द्र पूनिया ने खेल राज्यमंत्री से परिषद में खेल प्रशिक्षकों की भर्ती करने का आग्रह किया। इस अवसर पर शिविर निदेशक सबल प्रताप सिंह ने प्रतियोगिता का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इससे पूर्व जनसम्पर्क अधिकारी तेजराज सिंह, सहायक शिविर निदेशक मीना शर्मा व अतुल शर्मा सहित परिषद के प्रशिक्षकों ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस मौके पर खेल राज्य मंत्री ने शिविर में शामिल सभी 15 खेलो के सर्वश्रेष्ठ बालक/बालिकाओं को सम्मानित किया।

टीम इंडिया पर हुई पैसों की बारिश

टीम इंडिया को 125 करोड़ रुपये देगा बीसीसीआई

चैम्पियन बनने पर मिले 20.36 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, 30 जून। टी–20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम को 125 करोड़ रुपए कैश प्राइज देगा। बोर्ड के सचिव जय शाह ने रविवार को खुद इसका ऐलान किया। शाह ने पर लिखा– मुझे यह ऐलान करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि टी–20 वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम इंडिया को 125 करोड़ रुपए की इनामी राशि दी जाएगी। टीम ने पूरे टूर्नामेंट में जबर्दस्त टैलेंट, समर्पण और खेल भावना का प्रदर्शन किया। मैं इस असाधारण उपलब्धि के लिए सभी खिलाड़ियों, कोच और सपोर्ट स्टाफ को बधाई देता हूं। भारतीय टीम को एक दिन पहले वर्ल्ड चैंपियन बनने पर 20.36 करोड़ रुपए की इनामी राशि मिली है। ने इस टूर्नामेंट से पहले इनामी राशि बढ़ने का ऐलान किया था।

फॉलोआन खेल रही द. अफ्रीका ने दूसरी पारी में अपनी पकड़ मजबूत की

सुने लुस ने शतक तथा कप्तान लॉरा वुलफार्ट ने नाबाद 93 रन बनाए

चेन्नई, 29 जून। सुने लुस (109) की शतकीय और कप्तान लॉरा वुलफार्ट नाबाद (93) रनों की पारियों के दम पर दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 337 रनों से पिछड़ने के बाद आज दिन का खेल समाप्त होने तक दो विकेट पर 232 रन कर मुकाबले पर अपनी पकड़ बना ली हैं।

फॉलोऑन खेल रही दक्षिण अफ्रीका की दूसरी पारी की शुरुआत भी अच्छी नहीं रही अन्नेका बोश (9) का विकेट गवां कर संकट में फंस गयी थी। ऐसे समय में सुने लुस और कप्तान लॉरा वुलफार्ट ने पारी को संभाला। दूसरे विकेट के रूप में सुने लुस 109 रन बनाकर आउट हुईं। दिन का खेल समाप्त होने तक दखिण अफ्रीका ने दो विकेट पर 232 रन बना लिये है हालंकि वह अभी 105 रन पीछे है। कप्तान लॉरा वुलफार्ट नाबाद (93) और मैरिजान कप्प (15) रन बनाकर क्रीज पर है। भारत की ओर से दूसरी पारी में दीप्त शर्मा और हरमीत कौर ने एक–एक विकेट लिये। इससे पहले स्नेह राणा (आठ विकेट) के शानदार स्पैल की बदौलत भारतीय महिला टीम ने बल्लेबाजी के लिये मुफीद चेपॉक की सपाट पिच मेहमान दक्षिण अफ्रीका रविवार को पहली पारी में 266 रन पर ढ़ेर कर 337 रनों की बढ़त बना ली है।

आज सुबह दक्षिण अफ्रीका ने चार विकेट पर 236 रनों के कल के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। कल दिन खेल समाप्त होने के समय मैरिजान कप्प (69) और नडीन डी क्लर्क ने (27) ने पारी को आगे बढ़ाया। स्नेहा राणा ने शुरुआत स्पैल में मैरिजान कप्प (74) को बोल्ड कर दक्षिण अफ्रीका को पहला झटका दिया। इसके बाद तो दक्षिण अफ्रीका की टीम मात्र 30 रन जोड़कर ताश के पत्तों की तरह ढ़ह गई।

नडीन डी क्लर्क (39),सिनालो जाफ्टा (शून्य), अनरी डर्कसन (5), मासाबाटा क्लास (1) और नोनकुलुलेको म्लाबा (2) रन बनाकर आउट हुई। दक्षिण अफ्रीका की पूरी टीम 266 रनों पर सिमट गई। भारत को पहली पारी में बनाये गये (छह विकेट पर 603 पारी घोषित) के स्कोर के आधार पर 337 रनों की बढ़त मिली है। भारत की ओर से स्नेह राणा ने 25.3 में 77 रन पर आठ विकेट लिये। दीप्ति शर्मा को 21 ओवर में 47 रन देकर दो विकेट मिले।

तीसरी बार लोकसभा सांसद चुने जाने और फिर से मोदी सरकार में केन्द्रीय मंत्री बनाये जाने के बाद रविवार को पहली बार जोधपुर आगमन पर गजेन्द्र सिंह शेखावत का कार्यकर्ताओं एवं लोगों ने जोरदार स्वागत किया। उनके स्वागत में जोधपुर के मुख्य बाजारों एवं सड़कों पर जगह-जगह स्वागत कार्यक्रम आयोजित किये। शेखावत सुबह नौ बजे ही ट्रेन से जोधपर रेलवे स्टेशन पहँच गये थे, लेकिन उनके स्वागत कार्यक्रमों का सिलसिला इतना लम्बा चला कि, उन्हें घर पहुँचने में तीन बज गये। शेखावत का अभिनदंन करने आये कार्यकर्ताओं में भारी जोश और उत्साह दिखाई दिया तथा पूरे जोधपुर में उनके स्वागत में लोगों का भी भारी हुजूम उमड़ पड़ा।

जोधपुर पहुंचे शेखावत का बहुत जोरशोर से अभूतपूर्व स्वागत हुआ

पूरे रास्ते भर स्वागत हुआ, कार्यकर्ताओं एवं लोगों का जबरदस्त हुजूम उमड़ पड़ा इस कारण रेलवे स्टेशन से निवास स्थान तक पहुंचने में शेखावत को 6 घंटे लगे

- **पुरी तिराहा, सोजती गेट नई सड़क चौराहा सहित कई स्थानों पर तोरण द्वार सजाए गए।**
- **जोधपुर के बाल निकेतन स्कूल परिसर में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत के स्वागत एवं अभिनदंन के लिए बड़े मंच पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।**

जोधपुर, 30 जून (कासं)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नवगठित कैबिनेट में शामिल होने के बाद जोधपुर के नव निर्वाचित सांसद केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत रविवार सुबह दिल्ली से रेलमार्ग से जोधपुर आगमन पर कार्यकर्ताओं ने बेहद उत्साह के साथ जोरदार स्वागत किया।

जोधपुर लोकसभा सीट से जीत की हैट्रिक के बाद प्रथम बार जोधपुर आगमन पर ऑगजेंद्र सिंह शेखावत के स्वागत अभिनंदन में लोगों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। रेलवे स्टेशन से स्टेशन रोड, पुरी तिराहा, सोजती गेट, नई सड़क चौराहा, मोहनपुरा पुलिया, रातानाडा ओल्ड कैम्पस रोड, पुलिस लाइन मार्ग और निवास स्थान अजीत कॉलोनी तक पूरे मार्ग में शेखावत के स्वागत में लोगों, भाजपा कार्यकर्ताओं और आमजन का हुजूम उमड़ा। जोधपुर शहर, जोधपुर ग्रामीण क्षेत्र लूणी, पोकरण, जैसलमेर, शेरगढ़, लोहावट, फलोदी, पाली, जयपुर सहित राजस्थान के अनेक जिलों से लोग केन्द्रीय मंत्री का स्वागत सत्कार करने जोधपुर पहुंचे।

निवास के समीप विशाल डॉम में हुई अभिनंदन सभा में भी शेखावत का जोरदार स्वागत किया गया। सुबह 9 बजे से आरंभ हुआ स्वागत का क्रम दोपहर तीन बजे बाद तक चलता रहा। जोधपुर संभाग के विधायक, राजस्थान सरकार के मंत्री, पार्षद और जनप्रतिनिधि शेखावत को बधाई देने पहुंचे। शेखावत के निवास पर उत्सव का माहौल रहा।

उनके स्वागत को लेकर कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह नजर आया और सुबह आठ बजे से ही लोगों का रेलवे स्टेशन पहुंचने का क्रम आरंभ हो गया। ट्रेन से बाहर आते ही गज्जू बन्ना जिंदाबाद, भाजपा जिंदाबाद के नारे लगने लगे। समर्थकों ने उनको कंधों पर उठा लिया। स्टेशन पर स्वागत में ऐसा हुजूम उमड़ा की उनको रेलवे स्टेशन से बाहर आने में ही एक घंटे से अधिक समय लग गया।

शेखावत की आगवानी भाजपा के शहर जिला अध्यक्ष देवेन्द्र सालेचा, देहात उत्तर के अध्यक्ष मनोहर पालीवाल, देहात दक्षिण के अध्यक्ष जगराम विश्नोई, महापौर वनिता सेठ, राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत, सूरसागर विधायक देवेन्द्र जोशी, जोधपुर शहर विधायक अतुल भंसाली, शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह राठौड़, पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी सहित कईविधायकों एवं राजनेताओं ने की।

रेलवे स्टेशन से बाहर आने के बाद शेखावत खुले वाहन में सवार हुए। स्टेशन से लेकर पूरे मार्ग में और निवास स्थान तक स्वागत में तोरण द्वार और चौराहे सजाए गए। पोस्टर बैनर भाजपा के झंडों से पूरे मार्ग को पाट दिया गया। उनका पग-पग पर भव्य स्वागत सत्कार किया गया। मिठाई खिलाकर बधाई दी गई। खुले वाहन में सवार शेखावत का मार्ग में दुकानदारों व्यापारियों और गणमान्य लोगों ने फूल मालाएं पहनाकर स्वागत कर बधाई दी।

केन्द्रीय मंत्री का काफिला जोधपुर रेलवे स्टेशन, मुख्य डाकघर, पुरी तिराहा, सोजतीगेट, नई सड़क चौराहा, मोहनपुरा पुलिया, पुराना परिसर से पुलिस लाइन रोड होते हुए बाल निकेतन स्कूल परिसर में बनाए गए विशाल डॉम में आयोजित स्वगत सभा में पहुंचा।

सामाजिक-व्यापारिक संगठनों ने किया स्वागत

लघु उद्योग भारती, जोधपुर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, जोधपुर स्टेनलैस स्टील एसोसिएशन, जोधपुर हैण्डीक्राफ्ट एसोसिएशन, जोधपुर हैण्डीक्राफट फैडरेशन, ग्वारगम एसोसिएशन, होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट एसोसिएशन, राजस्थान एडवोकेट एसोसिएशन, मारवाड़ राजपूत सभा, टूरिस्ट गाईड एसोसिएशन, टूर्स एण्ड ट्रेवल्स एसोसिएशन, कपड़ा व्यापार संघ, सब्जी मण्डी व्यापार संघ, जीरा मण्डी व्यापार संघ, मण्डोर मण्डी व्यापार संघ सहित अनेक सामाजिक एवं व्यापारिक संगठनों ने केन्द्रीय मंत्री का स्वागत किया।

राजपूत समाज के सभी संगठन आए स्वागत करने

मारवाड़ राजपूत सभा, बीजेएस एज्यूकेशनल सोसायटी, चौपासनी शिक्षा समिति, श्री हनवंत एज्यूकेशनल सोसायटी श्री हनवंत राजपूत हॉस्टल सहित राजपूत समाज के अनेक संगठनों की ओर से केन्द्रीय मंत्री का भव्य स्वागत किया गया।

मंच पर स्वागत, सत्कार और अभिनंदन

बाल निकेतन स्कूल परिसर में शेखावत का स्वागत एवं अभिनदंन कार्यक्रम बड़े मंच पर आयोजित किया गया। भव्य पण्डाल में सभी ने विशाल एईडी स्क्रीन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी का मन की बात कार्यक्रम सामूहिक रूप से सुना। मोदीजी के मार्गदर्शन और पाथेय के बाद स्वागत कार्यक्रम आरंभ हुआ। जिलाध्यक्ष देवेन्द्र सालेचा ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना शुरु हुई

योजना की पहली किस्त के तौर पर 65 लाख से अधिक किसानों के खातों में 653 करोड़ रुपये ट्रांसफर किये गये

- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की तर्ज पर राजस्थान के किसानों के लिए प्रदेश सरकार ने शुरु की नई पहल।**
- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोंक कृषि उपज मंडी में आयोजित कार्यक्रम में योजना शुरु करने की घोषणा की।**
- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि, प्रधानमंत्री ने दिया देश के किसानों को सम्मान एवं संबल प्रदेश के अन्नदाता को बनाएंगे समृद्ध**
- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि, 20 हजार किसानों को फार्म पौंड की सौगात दी गई है तथा करीब 80 हजार किसानों को 350 करोड़ रुपये का अल्पकालीन फसली ऋण बांटे गये हैं।**

टोंक/जयपुर, 30 जून। प्रदेश के किसानों के लिए रविवार को मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की शुरुआत हुई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को किसान सम्मान निधि योजना के शुभारंभ के अवसर पर करीब 65 लाख किसानों के बैंक खातों में डायरैक्ट बैनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से एक क्लिक से 650 करोड़ रुपये की राशि किसानों के खातों में ट्रांसफर की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोंक कृषि उपज मंडी में आयोजित एक कार्यक्रम में खुद इस योजना की शुरुआत की। इस मौके पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि, देश के लिए अन्न उपजाने वाले किसानो को सशक्त बनाना हमारी डबल इंजन सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि, इस योजना के तहत प्रदेश के किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 6 हजार रुपये की राशि के साथ ही, 2 हजार रुपये अतिरिक्त दिए जाएंगे। इसी क्रम में आज राज्य सरकार की ओर से एक हजार रुपये की पहली किस्त के तौर पर 65 लाख से अधिक किसानों के खातों में 653 करोड़ रुपये सीधे जमा किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि, मैं भी किसान का बेटा हूं। उनकी परेशानियों से मैं भली-भांति अवगत हूं। इसलिए हमारी सरकार किसान हितों की रक्षा में सदैव तत्पर रहती है। उन्होंने कहा कि राज्य में गेहूं के 2275 रुपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के ऊपर 125 रुपये का बोनस प्रदान कर 2400 रुपये प्रति क्विंटल पर गेहूं खरीद की गई है। प्रदेश में 10 हजार सौर ऊर्जा संयंत्रों, 41 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल में ड्रिप और मिनी स्प्रिंकलर तथा 44 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल में स्प्रिंकलर संयंत्रों की स्थापना की गई है। श्री शर्मा ने कहा कि राज्य के 47 हजार किसानों को कृषि कनेक्शन जारी किए गए हैं। किसानों को बिजली के बिलों में 8 हजार करोड़ रुपये से अधिक का अनुदान दिया गया है। किसानों को पर्याप्त बिजली उपलब्ध कराने तथा प्रदेश को बिजली सरप्लस राज्य बनाने के लिए 2.24 लाख करोड़ के एमओयू किए गए हैं। प्रदेश के 80 हजार से अधिक किसानों को 350 करोड़ रूपये का अल्पकालीन फसली ऋण मिला है तथा 21 कस्टम हायरिंग केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।

शर्मा ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसान कल्याण के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं, जिनका लाभ प्रदेश के किसानों को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत लगभग 1 हजार 400 करोड़ रुपये के बीमा क्लेम का वितरण किया गया तथा 9 हजार पीएम किसान समृद्धि केंद्र स्थापित किए गए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि, प्रदेश के 21 जिलों में पानी की समस्या दूर करने के लिए ईआरसीपी को संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना में शामिल कर भारत सरकार एवं मध्य प्रदेश के साथ एमओयू हुआ है। मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान-2.0 के तहत आगामी 4 वर्षों में 5 लाख जल संग्रहण ढ ांचे बनाए जाएंगे तथा 20 हजार फार्म पौण्ड स्थापित कर वर्षा का जल संग्र0हित किया जाएगा।

शर्मा ने कहा कि चीनी और गुड़ पर मंडी शुल्क को समाप्त कर दिया गया है। केंद्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से किसानों को 10 हजार करोड़ रुपये से अधिक का ब्याजमुक्त फसली ऋण उपलब्ध करवाया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य में 100 नई पैक्स का गठन किया गया है। पशुपालकों के लिए त्वरित पशु चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु मोबाइल वेटेनरी सेवा प्रारंभ की गई है।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने राज सहकार व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के तहत पात्र महिलाओं को 10-10 लाख रुपये की सहायता राशि के चैक सौंपे। इस दौरान उन्होंने कृषि उपज मंडी प्रांगण में पीपल लगाकर वृक्षारोपण किया।

इस अवसर पर कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैया लाल चौधरी, सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर, किसान आयोग के अध्यक्ष सी.आर.चौधरी, पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया, प्रमुख शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी वैभव गालरिया, वरिष्ठ अधिकारी एवं बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

शर्मा ने कहा कि किसान भाइयों को सम्मान और संबल देने की प्रेरणा हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिली है। उन्होंने प्रधानमंत्री पद की तीसरी बार शपथ लेते ही प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी की। इस योजना के माध्यम से हर वर्ष किसानों के खातों में 6 हजार रुपये जमा करवाए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने समारोह में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभिन्न जिलों के लाभार्थी किसानों से संवाद किया। डूंगरपुर के किसान शंकर लाल ने कहा कि पहले पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 6 हजार रुपये मिलते थे। अब मुख्यमंत्री किसान सम्मन निधि के रूप में 8 हजार रुपये मिलेंगे।

बारां निवासी किसान नन्द लाल ने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की किस्त मिलने से उन्हें आर्थिक मदद मिली है। भरतपुर के किसान राकेश शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि में बढोतरी से उन्हें बहुत खुशी हो रही है।

नीट यू.जी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परीक्षा को रिशेड्यूल करने की तैयारी में है। इसे लेकर नई तारीखों की घोषणा सोमवार या मंगलवार को हो सकती है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि एन.बी.ई. अगले दो दिन के भीतर नीट-पी.जी. के लिए नई तारीख का ऐलान करेगा। दरअसल, प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर विवाद काफी बढ़ा हुआ है। एहतियाती कदम उठाते हुए पिछले सप्ताह रद्द की गई परीक्षाओं में नीट-पी.जी. की परीक्षा भी शामिल है।

इस बीच, नैशनल टेस्टिंग एजेंसी ने नीट यू.जी. पेपर लीक विवाद के चलते स्थगित परीक्षाओं की नई तारीखें जारी कर दी हैं। ज्वॉइंट सी.एस.आई.आर. नेट की परीक्षा अब 25 से 27 जुलाई तक आयोजित की जाएगी।

यू.जी.सी. नेट की परीक्षा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोजित की जाएगी। एनटीए अब तक सीबीटी मोड में असिस्टेंट प्रोफेसरशिप, जूनियर रिसर्च फेलोशिप और पीएचडी प्रवेश के लिए यूजीसी नेट आयोजित कर रहा था।

अब राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने यूजीसी नेट को पूर्व की भांति ऑनलाइन कराने का निर्णय लिया है। परीक्षा तिथि घोषित होने और परीक्षा ऑनलाइन कराए जाने की घोषणा का अभ्यर्थियों ने स्वागत किया है। यूजीसी नेट की तैयारी करने और 18 जून को परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों को परीक्षा रद्द होने का बड़ा झटका लगा था। एक तो परीक्षा केन्द्र काफी दूर तक बना दिए गए थे और परीक्षा केन्द्रों पर अभ्यर्थियों को अव्यवस्थाएं भी देखने को मिली थीं। कई अभ्यर्थियों की परीक्षा छूट गई थी। अभ्यर्थियों ने परीक्षा केन्द्र पर हंगामा भी किया था। एनटीए ने शुक्रवार देर रात परीक्षा की तिथियां घोषित कीं। यूजीसी नेट की परीक्षा 21 अगस्त से चार सितम्बर के मध्य करायी जाएंगी।

वहीं सी.एस.आई.आर. नेट की परीक्षा 25 जुलाई से 27 जुलाई तक, एन.सी.ई.टी. 2024 परीक्षा 10 जुलाई को ऑनलाइन माध्यम से कराने की घोषणा की गई है। यूजीसी नेट की 18 जून को परीक्षा 83 विषयों में हुई थी। दो पाली में देश के 317 शहरों में हुई परीक्षा हुई थी। जिसमें 11.21 लाख से ज्यादा अभ्यर्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था और 81 फीसदी अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी थी। गौरतलब है कि, सी.एस.आई.आर. नेट की परीक्षा 25 से 27 जून तक होनी थी। जो कि 21 जून को स्थगित कर दी गई थी।

‘हमे 100 में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जिक्र नहीं किया। हालांकि, ऐसी जानकारी है कि शाह ने बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा और राज्य के पार्टी नेताओं के साथ बैठक में कहा कि पार्टी तीन लोकसभा सीटों- अंबाला, सोनीपत और हिसार में बेहतर प्रदर्शन कर सकती थी, जहां पार्टी कांग्रेस से हार गई। जैसा कि विदित है कि, बीते दस सालों में पहली बार एन.डी.ए. नीत भाजपा सरकार के खिलाफ इतना मजबूत नज़र आ रहा है। इस बार संसद में बड़ी संख्या में अपनी मौजूदगी का एहसास कराने के लिए विपक्ष केन्द्र सरकार पर लगातार तीखे हमले कर रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कई मौकों पर यह दावा कर चुके हैं कि, लोकसभा चुनाव परिणामों ने यह दर्शा दिया है कि, प्रधानमंत्री मोदी में देश की जनता का विश्वास बहुत ही कम हो गया है।

विपक्ष ने संसद से कोविड प्रोटोकॉल हटाने की मांग की

- **कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखे पत्र में कहा है कि, कोविड प्रोटोकॉल की वजह से प्रतिष्ठित पत्रकारों को संसद की पहुँच से दूर कर दिया गया है।**
- **कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने पोस्ट में कहा, “संसद की कार्यवाही की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों पर कोविड पाबंदियां हटाने के लिए माननीय लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा है।**

नई दिल्ली, 30 जून। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने रविवार को कहा कि उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला को पत्र लिखकर उनसे संसद की कार्यवाही की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों पर कोविड पाबंदियां हटाने का अनुरोध किया। उन्होंने ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में बिड़ला को 27 जून को लिखे अपने पत्र की एक प्रति साझा की।

टैगोर ने पोस्ट में कहा, “संसद की कार्यवाही की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों पर कोविड पाबंदियां हटाने के लिए माननीय लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखा। प्रतिष्ठित पत्रकारों को पाबंदियों के नाम पर रोका जा रहा है। मीडिया की पहुंच बहाल करने और उन्हें उनका उचित स्थान देने का वक्त आ गया है।” बिरला को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा कि एक दशक से अधिक समय से संसद की कार्यवाही की रिपोर्टिंग कर रहे कई पत्रकार कोविड-19 संबंधी प्रोटोकॉल के नाम पर पाबंदियों का सामना कर रहे हैं। कांग्रेस सांसद ने पत्र में कहा, “उन्हें संसद तक पहुंचने से रोकने से न केवल उनके पेशेवर कर्तव्यों में बाधा आती है, बल्कि जनता तक सटीक जानकारी पहुंचाने में भी समस्या होती है। हमारे देश के लोकतांत्रिक लोकाचार को संरक्षित करने के लिए यह जरूरी है कि सभी मान्यता प्राप्त पत्रकारों को बिना किसी बाधा के कार्यवाही को कवर करने की अनुमति दी जाये।” टैगोर ने कहा, “मैं आपसे मौजूदा पाबंदियों पर पुनर्विचार करने और सभी मान्यता प्राप्त पत्रकारों को संसद की कार्यवाही कवर करने देने का अनुरोध करता हूं।

आम चुनाव से पहले विभिन्न मंदिरों में पूजा-पाठ में जुटे प्र.मंत्री ऋषि सुनक

लंदन, 30 जून। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक और उनकी पत्नी अक्षता मूर्ति ने देश में 4 जुलाई को होने वाले चुनाव से 4 दिन पहले लंदन के नेसदेन मंदिर पहुंचकर पूजा की। शनिवार को जैसे ही सुनक का काफिला मंदिर परिसर में पहुंचा, भीड़ ने उनका जोरदार स्वागत किया। उन्होंने मंदिर का दौरा किया और वहां मौजूद लोगों से बातचीत भी की। सुनक ने नेसदेन मंदिर में लोगों को संबोधित भी किया। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय टीम की जीत के साथ की। सुनक ने कहा कि, आज आप क्रिकेट मैच के नतीजों से तो खुश होंगे। इस पर भीड़ ने तालियां बजाईं।

सुनक ने कहा, “मैं भी आपकी तरह एक हिंदू हूं। अपने विश्वास और आस्था से ही मुझे ताकत मिलती है।

चीन-पाकिस्तान बॉर्डर पर 15 हजार कि.मी. का रोड नैटवर्क तैयार करेगी केन्द्र सरकार

- **रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण इस नैटवर्क में सरकार 3600 किमी सड़क का निर्माण करा चुकी है, जबकि 6700 किमी सड़क निर्माणाधीन है।**

नई दिल्ली, 30 जून। केंद्र की मोदी सरकार देश की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए 15,520 किलोमीटर बॉर्डर रोड नेटवर्क खड़ा कर रही है। रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण इस नैटवर्क में सरकार 3600 किमी सड़क का निर्माण करा चुकी है, जबकि 6700 किमी सड़क निर्माणाधीन है।

मोदी सरकार-3.0 के विजन-2047 के मास्टर प्लान फेज-1 व फेज-2 में 5220 किमी बॉर्डर रोड नेटवर्क (रणनीतिक व अंतरराष्ट्रीय) खड़ा करने का लक्ष्य रखा गया है। मास्टर प्लान के दस्तावेज के अनुसार फेज-1 में कुल 2379 किमी के दो लेन राष्ट्रीय राजमार्ग सिर्फ अरुणाचल प्रदेश में बनेंगे। जम्मू-कश्मीर में 166 किमी राजमार्ग का निर्माण होगा। वहीं, फेज-2 में सिक्किम (21 किमी), पश्चिम बंगाल (75 किमी), असम (144 किमी), बिहार (48 किमी), झारखंड (141 किमी) के साथ गुजरात, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश में राजमार्ग निर्माण किए जाएंगे। फेज-एक व दो को 2047 से पहले समाप्त किया जाएगा।

बॉर्डर रोड नेटवर्क खड़ा करने पर सरकार 75,000 से एक लाख करोड़ रुपये तक का निवेश करेगी। इसकी असल लागत डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार होने के पश्चात भी सामने आएगी।

चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश सहित अन्य देशों के साथ भारत 15,106 किमी की अंतराष्ट्रीय भूमि सीमा साझा करता है।

सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि भारत की सीमा के आसपास 18000 किमी लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है। इसमें से 13,300 किमी राजमार्ग समानांतर हैं, जबकि 4700 किमी लंबवत। मास्टर प्लान में सीमा के लिए नए दो लेन राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने के लिए इन मार्गों का चौड़ीकरण किया जाएगा। इसके अलावा सीमा के आसपास के मौजूदा राजमार्गों को जोड़ने वाले संपर्क राजमार्ग भी बनेंगे।

जनरल उपेन्द्र ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सेवा विस्तार दिया गया था।

चालीस वर्षो से सेना में कार्यरत जनरल द्विवेदी एक कुशल सैन्य नेता हैं। वह सैनिक स्कूल, रीवा (मध्य प्रदेश) के पूर्व छात्र रहे हैं और उन्हें 1984 में जम्मू-कश्मीर राइफल्स रेजिमेंट में कमीशन दिया गया था। उन्हें उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी थिएटर कमानों में कार्य करने का अनूठा गौरव प्राप्त है।

जनरल द्विवेदी ने ऐसे समय में सेना की कमानी संभाली है जब वैश्विक भू-रणनीतिक माहौल निरंतर बदल रहा है, तकनीकी प्रगति और आधुनिक युद्ध के लगातार बदलते चरित्र के कारण सुरक्षा क्षेत्र में चुनौतियां अधिक स्पष्ट हो रही हैं। जनरल द्विवेदी को प्रभावी ढंग से योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने का भरपूर अनुभव है।

नये सेना प्रमुख को सुरक्षा क्षेत्र में आधुनिक और उभरती प्रौद्योगिकियों की गहरी समझ है, और संचालन प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को सैन्य प्रणालियों में उपयोग करने और एकीकृत करने का उनका विचारशील दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण आत्मनिर्भरता के माध्यम से आधुनिकीकरण और क्षमता विकास की जरूरतों को पूरा करने की दिशा में बढ़ रही भारतीय सेना के अनुरूप है।

भारतीय सेना के चेटवुड आदर्श वाक्य में दृढ़ विश्वास रखने वाले जनरल द्विवेदी विश्वास की संस्कृति को बढ़ावा देने, जूनियर अधिकारियों के सशक्तीकरण, सैनिकों की भलाई और वीर नारियों के कल्याण पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे।

इससे पहले जनरल पांडे ने सेवा निवृत होने से पहले राष्ट्रीय युद्ध स्मारक जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। सेवा निवृत होने से पहले उन्हें सेना की टुकडी की ओर से सलामी गारद पेश की गयी।

मेघालय: दूषित...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिविल अस्पताल की चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी पिंसुक मारबानियांग ने बताया कि नामडोंग गांव में एक अंतिम संस्कार समारोह में भोजन के बाद 28 जून की शाम से मरीजों का अस्पताल में आना शुरू हो गया था। उन्होंने कहा कि शुरू में 10 लोग दस्त और उल्टी की शिकायत लेकर अस्पताल आए थे।

उन्हें तुरंत चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। सुश्री मारबानियांग ने कहा कि अगली सुबह लोगों की संख्या में वृद्धि हुई और 40 या उससे अधिक मरीज अस्पताल में भर्ती हुए जिनमें कई महिलाएं और बच्चे शामिल थे जिनमें दस्त और उल्टी के समान लक्षण थे।

बंगाल में महिला को तालिबानी सजा, सरेआम लाठियों से पीटा

इस घटना का वीडियो वायरल हुआ, मारपीट करने वाला शख्स तृणमूल कांग्रेस नेता का करीबी बताया जा रहा है

- **विपक्षी दलों सीपीएम और बीजेपी की ओर से बताया गया कि यह वीडियो बंगाल के उत्तर दिनाजपुर जिले का है।**
- **विपक्षी नेताओं के मुताबिक, हमलावर स्थानीय निवासी है जिसका नाम तजम्मुल है और उसके तृणमूल कांग्रेस से संबंध हैं। वह लोकल मसलों पर त्वरित न्याय के लिए जाना जाता है।**

कोलकाता, 30 जून। पश्चिम बंगाल में सड़क पर एक व्यक्ति की ओर से महिला सहित 2 लोगों की पिटाई का मामला सामने आया है। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

विपक्ष ने इसे लेकर ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी सरकार पर तीखा हमला बोला है। विपक्षी दलों सीपीएम और बीजेपी की ओर से बताया गया कि यह वीडियो बंगाल के उत्तर दिनाजपुर जिले का है। यह घटना पिछले हफ्ते की बताई जा रही है। विपक्षी नेताओं के मुताबिक, हमलावर स्थानीय निवासी है जिसका नाम तजम्मुल है और उसके तृणमूल कांग्रेस से संबंध हैं। वह लोकल मसलों पर त्वरित न्याय के लिए जाना जाता है।

वीडियो में महिला को एक आदमी बार-बार लाठियों से मारता दिख रहा है। वह दर्द से कराह रही है। मौके पर कुछ और लोग मौजूद हैं जो चुपचाप खड़े होकर तमाशा देख रहे हैं। वायरल वीडियो में हमलावर व्यक्ति एक पुरुष को भी लाठियों से पीटता नजर आता है। इस दौरान एक अन्य महिला उसे रोकने की कोशिश करती नजर आती है। हालांकि, वह हमले जारी रखता है। भीड़ के अधिकांश सदस्य उसे रोकने का प्रयास नहीं करते, बल्कि उसकी मदद करते नजर आते हैं। इस बीच, वह महिला के बाल पकड़ता है और उसे लात मारने लगता है। घटना को लेकर पुलिस का कहना है कि उसने पिटाई करने वाले व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज किया है और उसकी तलाश जारी है।

बीजेपी आईटी सेल के प्रमुख और बंगाल के लिए पार्टी के सह-प्रभारी अमित मालवीय ने एक्स पर यह वीडियो पोस्ट किया है। इसके साथ उन्होंने लिखा, वीडियो में महिला को जो आदमी बेरहमी से पीट रहा है, उसका नाम तजम्मुल है। वह अपनी इंसाफ सभा के जरिए त्वरित न्याय के लिए फेमस है। वह स्थानीय विधायक हमीदुर रहमान का करीबी सहयोगी है। उन्होंने कहा कि देश को टीएमसी की ओर से संचालित पश्चिम बंगाल में शरिया अदालतों के बारे में जानना चाहिए। हर गांव में एक संदेशखाली है और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी महिलाओं के लिए अभिशाप बन गई हैं। बंगाल में कानून-व्यवस्था का कोई नामोनिशान नहीं बचा है। क्या ममता बनर्जी इस राक्षस के खिलाफ कार्रवाई करेंगी या उसका बचाव करेंगी? जैसा कि वह संदेशखाली मामले में शेख शाहजहां के लिए खड़ी हुई थीं।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033, **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908